Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

९६२

ओ३म

जन ज्ञान

मासिक

आर्य जनता का प्रतिनिधि प्रकाशन

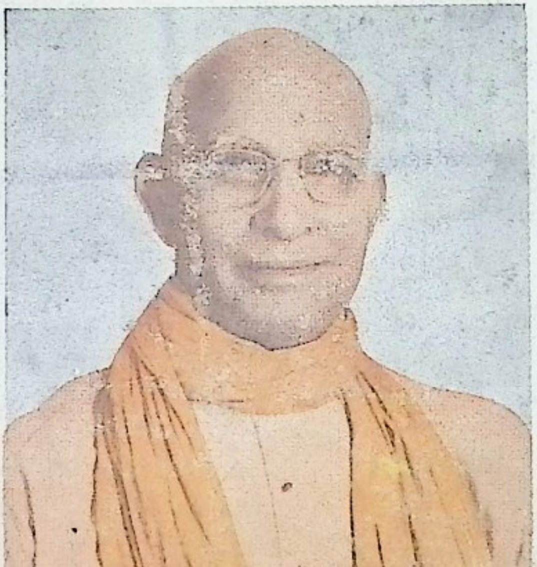

जून १९७०

सम्पादक "राकेश रानी"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहस्रधारा देहरादून की गुफा में झरते झरने के नीचे
गूंजता "ऋचा" का संगीत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—संरक्षक—

चौ० प्रतापसिंह करनाल

—संचालक—

भारतेन्द्रनाथ साहित्यालंकार

सम्पादक

—राकेश रानी—

धरती के प्रत्येक मानव के हृदय मन्दिर पर "वेद-ज्ञान" की पावन पताका फहराने के लिए कृत संकल्प

आर्य जनता का

अपना

प्रतिनिधि प्रकाशन

"जन-ज्ञान"

(मासिक)

१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग करोलबाग नई दिल्ली-५

फोन : ५६६६३९

वार्षिक मूल्य	१०)
एक प्रति	८० पैसे
विदेश में	एक पौण्ड
वर्ष ३	अंक २

ओ मेरे प्रभु !

मेरे अंतर में,
नव जीवनज्योति जगाओ,
ओ मेरे प्रभु !

प्यासा हूँ मैं 'प्राण' तुम्हारा
ढूंढ रहा हूँ, नित्य सहारा
डगमग डगमग होता हूँ जब,
गाता हूं प्रभु गान तुम्हारा
मेर मन के अन्धकार में,
जीवन जल धारा बरसाओ !
ओ मेरे प्रभु !!

प्राण तुम्हीं हो, गान तुम्हीं हो,
युग-युग के वरदान तुम्हीं हो
तुम हो वीणा के मधु सरगम,
झंकृति की झंकार तुम्हीं हो,
दूर न जाओ, पास रहो नित,
हाथ पकड़ जय राह बताओ !
ओ मेरे प्रभु !!

प्यार करूँगा मैं तो तुम से,
चाह करूँगा केवल तुम से,
तुम से मिलकर सब कुछ पाकर,
पा लूँगा मैं तो सब तुम से।
तुम सब जानत अन्तर्यामी
आओ, आकर गीत गुँजाओ !
ओ, मेरे प्रभु !!

—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रद्धेय श्री स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती !

पूज्य स्वामी ध्रुवानन्द जी महाराज आर्यसमाज के ऐसे नेता और तपस्वी संन्यासी थे जिनको २४ घण्टे आर्य समाज के ही कार्य की पड़ी रहती थी। उनका सारा जीवन आर्य समाज में था और सदा उसी की उन्नति चिन्ता में वे संलग्न रहते थे। ऐसा उदाहरण उनके जीवन में नहीं मिलेगा कि उन्होंने आर्य समाज के अतिरिक्त किसी और संस्था से अपना घनिष्ठ सम्बन्ध रखा हो। आर्यसमाज और उसकी संस्थाओं के संघटन तथा वेदप्रचार कार्य में ही वे व्यस्त रहते थे।

उनका एक यह भी महान् गुण था कि वे आर्यों से पूर्ण संपर्क बना रखते थे और सभी के कार्य कलापों का लेखा जोखा उनके मस्तिष्क और फाइल में रहता था। अपने रुपये पैसे के लेखे जोखे में वे कोई रुचि नहीं रखते थे परन्तु सभाओं और समाज के अर्थ पर पूरा ध्यान रखते थे। संस्थावों का कभी भी कोई पैसा अपने ऊपर नहीं लगाते थे और न व्यर्थ में व्यय होने देते थे।

उन्होंने एक अपने एक लोभ का कभी संवरण नहीं किया। वह था कि किसी सुन्दर शरीर वाले व्यक्ति किसी बड़े आदमी राजा आदि और किसी बड़े विद्वान् को देखकर यह चाहते थे कि वह आर्यसमाज में आ जावे।

उन्होंने अपने मन मस्तिष्क शरीर के कण कण को आर्य समाज और वैदिक धर्म की सेवा में लगा दिया। महर्षि दयानन्द के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी। वे यह नहीं सहन कर सकते थे कि कोई महर्षि शब्द बिना लगाये 'दयानन्द' सरस्वती शब्द का प्रयोग कर सके।

ऋषिभक्त विद्वानों के प्रति उनकी बड़ी आस्था थी। सदा वे ऐसे विद्वानों से अपना स्नेहमय संपर्क बनाये रखते थे।

वे कहा करते थे कि मैंने अपने भाई आदि के सम्बन्धों को छोड़ दिया परन्तु इस बात को गौरव की समझता हूँ कि कुछ योग्यतम विद्वानों से मैं अपना भाई का नाता रखता हूँ।

वे थे चरित्र के धनी, तपस्वी, मनस्वी, यशस्वी और ओजस्वी। कभी भी अन्याय और असत्य से कोई भी समझौता करने के लिए वे तैयार नहीं थे। वैदिक धर्म, दयानन्द और आर्य समाज के लिए ही वे पैदा हुये जीवित रहे और उसी के लिए वे दिवंगत हुए। अपने समय में उनसे प्रभावशाली कोई नहीं था। आज ऐसे आर्य संन्यासी की आवश्यकता आर्य समाज अनुभव कर रहा है।

—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्पादकीय

अपने को देखो

हमारे राष्ट्रीय चरित्र का सबसे बड़ा दोष "पर-दोष-निरीक्षण" हो गया है। हमें अपनी आँखों का शहतीर तो दिखायी नहीं पड़ता, दूसरे आँख का तिनका हमें खटकता है। इस मनोवृत्ति के कारण संघर्ष और द्वेष का वातावरण तनाव पूर्ण होता जा रहा है।

वस्तुत: जीवन की सफलता का मार्ग आत्म निरीक्षण के प्रथम चरण से ही आरम्भ होता है। हम अपने को देखें, टटोलें, विचारें कि हम में तो कहीं कोई कमी नहीं। अपनी कमियाँ जानकर हम उन्हें दूर करें तो स्वस्थ परिवार समाज और राष्ट्र स्वत: बन जाएंगे।

हमारी सम्मति में आज की समस्त उलझनों को सुलझाने का एक मात्र उपाय यह "प्रवृत्ति-परिवर्तन" ही है। व्यक्ति राष्ट्र की सबसे छोटी इकाई है! व्यक्ति से ही राष्ट्र बनता है। अत: व्यक्ति यदि स्वस्थ भाव से अपनी बुराइयाँ समाप्त करने की दिशा में सोचे तो फिर भटकन समाप्त हो राजमार्ग स्पष्ट दृष्टि गोचर होने लगेगा।

राजमहल हो या झोंपड़ी, धर्म हो या राज नीति, शिक्षा संस्थाएँ हों या व्यापारिक संस्थान सर्वत्र सफलता के लिए ईमानदार व्यक्ति चाहिएं। ईमानदारी ऊपर से थोपी नहीं जा सकती वह तो भीतर की उपज है। संस्कार और विचारों के द्वारा हृदय जब स्वच्छ और मस्तिष्क पवित्र होगा तो बेईमानी कहीं ठहर न सकेगी। इसलिए समस्त ज्वलन्त समस्याओं पर चिन्तन से पहले ठहरिए और देखिए कि आप स्वयं क्या कर रहे हैं? जो कुछ आप दूसरों में चाहते हैं) क्या वह आप के पास है? यदि हाँ, तो ठीक अन्यथा यत्न कीजिए कि आप अपने में परिवर्तन करें।

"क्रान्ति" तब तक व्यर्थ है जब जब तक उसका आरम्भ अपने से नहीं होता। 'धर्म' तभी तक धर्म है जब तक व्यक्ति स्वत: उसे अपनाता है। राष्ट्रीय संकट की वर्तमान घड़ी में सबसे अधिक प्रभाव शाली मन्त्र है 'आत्म चिन्तन।

अपने को देखो, अपना सुधार करो, अपने में कुछ ऐसा मत रहने दो जो तुम्हारी दृष्टि में औरों में नहीं रहना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उलझन किस विधि सुलझाऊँ ?

'धर्म' का अस्तित्व, शान्ति की सुरक्षा और स्वराज्य के प्राण पर जब संकट हो तब घर में बैठ कर शहनाई कोई देश भक्त नहीं बजा सकता पर देख रही हूँ कि मेरे भारत के लोग ज्वालाओं के बीच भी निश्चित भाव से बैठे हैं। यह लक्षण मृत्यु का नहीं तो और किसका है ?

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण मध्य और ऊपर सर्वत्र विनाशकारी तत्वों का विषधर फुंकार रहा है। देश-द्रोह का बीभत्स प्रदर्शन भी हमारे रक्त में उबाल नहीं ला पा रहा इस पार या उस पार जहाँ जाना है हमदे ? भारत रहेगा या समाप्त हो जाएगा ? यह दो टूक निर्णय अब होकर रहेगा। ईसाई-कम्यूनिष्ट सांप्रदायिक तत्वों और ढोंगी धर्म धुरीण मिलकर इस देश का गौरव अस्तित्व मिटाने पर लगे हैं और आर्य पुत्रों ने चूड़ियों पहनली हैं। ऋषि दयानन्द के अनुयायी बहक कर बह गए हैं। स्वार्थ सब पर हावी है, वे कुर्सी के मोह में लड़ना ही जीवन का लक्ष्य बना चुके हैं।

मन और मस्तिष्क में भारी उलझन है कि देश की वीरता को, शौर्य और गौरव को कौन बचाएगा ? सोचती हूँ कि मैं कहूँ भी किसे, क्योंकि इस देश में आज बहन की प्रार्थना पर सिर देने वाले व्यक्ति समाप्त प्रायः हो रहे हैं।

हर घर के बाहर और भीतर युद्ध छैड़ गया है। हम भीरू बन भाग रहे हैं। इच्छा होती है कि मैं कहूँ आर्य रक्त से, कि वीरो भागो मत, संघर्ष करो, मरो या विजय वरो, पर सुनने वाले कहाँ से खोजूं ?

हमारे गुरु दयानन्द की पाखण्ड-खण्डिनी पताका को सँभालने वाले हाथ काँप रहे हैं। पाखण्डों को मिटाने की भावना नष्ट हो गयी है। कायर निस्तेज स्वार्थी व्यक्ति नेतृत्व संभाल हमें रसातल में ले जा रहे हैं ?

वेद प्रचार-धर्म की रक्षा, व त्याग का मार्ग हम ही छोड़ चुके तो फिर कौन चलेगा इस राह पर···

मेरी उलझन यह है कि दयानन्द के आनुयायियों का कैसे जगाया जाए ? कैसे वेदों का डंका आलम में बजाने वालों को अपने घर और आस-पास वेद प्रकाश फैलाने के लिए तैयार किया जाए ?

कोई आर्य कहीं हो तो सुने ! अब शहनाइयाँ नहीं रणभेरी सुनो ! पांखडों को मिटाने के लिए युद्ध के नगाड़े जोरों से बजाओ। आर्य समाज मन्दिरों में अधर्म के विरुद्ध धर्म की सेना सजाओ ! 'ओ३म्' पताका उटाओ और आगे बढ़ो। नींद छोड़ो, आलस्य स्वार्थ जलाओ। दयानन्द के काम को पूरा करने के लिए रुको नहीं, झुको नहीं, ठहरो नहीं, बढ़े चलो, और और प्रत्येक मूल्य पर विजय प्राप्त करो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप नहीं चाहते—कि आप का अर्थात् आर्य समाज का भी एक ऐसा पत्र हो जिस पर प्रत्येक आर्य गौरव कर सके। जो कल्याण आदि की भाँति लाखों छपे और हर घर की प्रेरणा का कारण हो ?

आप चाहें या न चाहें पर हमारी ऐसी इच्छा है, लक्ष्य है कि १९७५ आर्य समाज शताब्दी तक जनज्ञान का प्रकाशन कम से कम १ लाख तक पहुँच सके। किन्तु यह चाह तब तक पूरी न हो सकेगी जब तक आप सबकी भी यही चाह न हो जाए। 'जनज्ञान' के सदस्यों पर यह दायित्व है कि वे इस सफलता के लिए यत्न करें। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि हम अच्छी से अच्छी सामग्री भेंट करें। साधनों के अभाव में हम जो कुछ कर सकते थे कर रहे हैं। जुलायी और अगस्त दोनों मास के अंक अद्भुत होंगे। इस अंक में भी नीति दोहावली पुस्तक हम भेंट कर रहे हैं। जो अत्यन्त उपयोगी है।

झूठे विज्ञापन, सरकारी विज्ञापन हम छाप नहीं सकते, इसलिए बिना ऐसे विज्ञापनों के ऋषि भक्तों के बल पर ही आगे बढ़ना हमारी समस्या का हल करेगा। तिल तिल कर जलते हुए, समस्याओं से जूझते हुए विपरीत अंवड़ में भी अडिग तूफानों को मोड़ देने का हमारा प्रयास है।

आप की शक्ति से ही हमें विजय मिलेगी। आप स्वयं सोचिए कि आप महर्षि के महान् लक्ष्य की पूर्ति के लिए क्या कुछ कर सकते हैं ? हमें क्या सहयोग दे सकते हैं। जो भी हो, लक्ष्य तक तो पहुँचना ही है।

—राकेशरानी

छप गयी है............

लाल — आंधी

जो सब कुछ उड़ाती आ रही है उसे जानने और
रोकने के लिए भारी सँख्या में
बांटिए—

मूल्य ६० पैसे : ४०) सैकड़ा

व्यवस्थापक—जन-ज्ञान-प्रकाशन
१५९७ हरध्यानसिंह रोड नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रावणी : वेद प्रचार सप्ताह पर

स्वर्गीय स्वामी सत्यानन्द जी द्वारा प्रस्तुत २५ आवश्यक
विषयों पर २४२ वेद मंत्रों की सरस व्याख्या
१०१ गायत्री मंत्रों की विस्तृत व्याख्या "मां-गायत्री"
पं० शिवदयालु जी द्वारा लिखित
और
चुनी हुयी वैदिक सूक्तियों का संग्रह

"ज्ञान-ज्योति"

आपने वेद-ज्योति, अध्यात्म-ज्योति पढीं
अब पढ़िए यह "ज्ञान-ज्योति"।

मूल्य ३) । २०) की १०) । ३८) की २५ । ७०) की ५० और १०५) की १०० प्रतियाँ।

आज और अभी अपना आदेश भेजिए अन्यथा ३० जून के बाद यह रियायती मूल्य पर न दी जाएँगी।

कृपया धन पूरा अगाऊ भेजें

यदि आपको पुस्तकें पसन्द न आएँ या आप की बच रहें
तो २ मास के बाद वापिस भी कर सकते हैं।

वेद प्रचार इष्ट है तो उत्साह पूर्वक भारी संख्या में मंगाइए

व्यवस्थापक
जन-ज्ञान-प्रकाशन
१५९७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

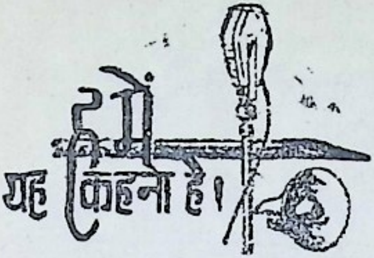

रोग का इलाज

देश में जो विघटन भाव उत्पन्न हुए हैं उनका एकमात्र उपाय है कि—

१—प्रदेशों की सीमाएँ, प्रांतीय विधान सभाएँ विधान परिषदें, समाप्त कर दी जाएँ।

२—भारत की संसद् ही एकमात्र विधायिका सर्वोच्च शक्ति के रूप में कार्य करे।

३—देश को ५ भागों, (रेलवे की भाँति) में बाँट दिया जाए।

४—सारे देश की शासन व्यवस्था का संचालन केन्द्र करे।

५—सांप्रदायिक-देश द्रोही तत्वों को मजबूती से समाप्त किया जाए।

६—यह पाँच पग उठाने से देश में जहाँ एकता की भावना उत्पन्न होगी वहाँ इन लम्बे-चौड़े दर्जनों मंत्रिमंडलों (जो सफेद हाथी बने हैं) के समाप्त होने से आर्थिक व्यवस्था पर गम्भीर प्रभाव पड़ेगा। प्रांतीयता का जहर समूल नष्ट होगा और सर्वत्र भाई चारे की भावना उभरेगी।

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता देश को संगठित और सबल बनाने की है।

निराशा और अराष्ट्रीयता से लड़ने के लिए आवश्यक है कि हम जन मानस को स्वस्थ वातावरण दें। राजनीति का उद्देश्य जब राज्य संभालना ही रह जाता है तब सर्वनाश कोई रोक नहीं सकता। वास्तव में तो राजनीति का लक्ष्य है जन-कल्याण। जन-जन को सुखी बनाने की भावना जब तक राजनीतिज्ञों में नहीं आती तब तक विनाश प्रवाह कोई नहीं रोक सकता। विचारपूर्वक देखा जाए तो हमारे सारे रोगों का कारण यह राजनीतिज्ञ ही तो हैं जो जन हित के नारे लगाकर स्वार्थ पूर्ति करते हैं। कल तक जो ६०) के उपदेशक थे वे आज राजनीति में जाकर लाखों के स्वामी हैं और जिन्होंने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उठाया उनसे आज बात करना भी वे पसन्द नहीं करते ? इसे यदि आप देश द्रोह नहीं कहेंगे तो क्या देश भक्ति कहेंगे ?

राजनीति में प्रवेश के इच्छुक व्यक्ति अपने को मिटाकर देश को उठाने का संकल्प लेकर जब कार्य करेंगे तो फिर समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाएंगी। प्रभु कृपा करें कि हमारे कर्णधारों को सुबुद्धि प्राप्त हो और वे देश भक्ति के अर्थ हृदयंगम कर स्वतन्त्रता की रक्षा और राष्ट्र की सबलता के लिए कुछ कर सकें।

गालियों का धर्म

पौराणिकों का पागलपन फिर जागा है। धर्म के इन ठेकेदारों ने वेदशास्त्रों का जो अपमान विधर्मियों द्वारा कराया वह किसी से भी छिपा हुआ नहीं है। और यह भी निर्णीत तथ्य है कि यदि महर्षि दयानन्द ने अपनी महान् शक्ति और अपूर्व पांडित्य से यवन ईसाइयों को न रोका होता तो आज देश में राम-कृष्ण, वेद-शास्त्र का नामो निशान भी न होता।

किन्तु यह ऐसे कृतघ्नी निकले हैं कि रक्षक को भी गालियाँ देने में संकोच नहीं कर रहे। अभी हाल ही में इन्हीं पौराणिकों ने 'नहले पर दहला' शीर्षक से प्रकाशित की है। हम इस पुस्तक को पागल का प्रलाप भी समझ टाल जाते किन्तु इसे श्री निरंजनदेव 'तीर्थ' जो अपने शंकराचार्य भी कहते हैं उनका आशीर्वाद भी प्राप्त है।

सब कुछ देखकर हमें चोट पहुंची। हमारा मन अपने गुरु के अपमान को सहने की स्थिति में नहीं। अतः इस पुस्तक का सप्रमाण उत्तर प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी पं० शांतिप्रकाशजी की लेखनी से प्रकाशित किया जा रहा है। अब महर्षि दयानन्द के प्रत्येक अनुयायी का यह कर्त्तव्य है कि वह पौराणिकों तक भारी सख्या मे इसे पहुंचाएं।

पुस्तक की भूमिका आर्यजगत् के गौरव, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान ससद् सदस्य प० शिवकुमार जी शास्त्री ने लिखी है।

महान् गुरु देव दयानन्द का अपमान करने की निर्लज्जता बरतने वालों को एक बार यह बता ही देना चाहिए कि वे कितने पानी में हैं ?

बांटिए और अधिक से अधिक बांटिए ताकि सत्य प्रगट हो जाए।

पैंटों की होली

मई अंक में हमने लिखा था कि विदेशी वेषभूषा, भाषा, सभ्यता को घरों से निकालो। नेकटाई पैंटों का बहिष्कार करो— इन्हें जलाओ।

इसे पढ़कर कुछ आर्य (?) तिलमिलाए हैं और उन्होंने हमारे इस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अभियान को मूर्खता पूर्ण बताया है। उनकी अपनी सम्मति हो सकती है किन्तु हमें अपनी इस मूर्खता (?) पर गर्व है। महात्मा गांधी ने भी जब विदेशी वस्त्रों की होली जलाने का आन्दोलन आरंभ किया था तब कुछ इसी तरह की बातें कही गयी थीं किन्तु कौन नहीं जानता कि विदेशी वस्त्रों की होली में विदेशी साम्राज्य भी जल गया।

हम चाहते हैं कि आर्यसमाज और आर्य वीर दल सभी भारतीयता प्रेमी इस दिशा में सक्रिय हों और पैंट टाई व विदेशी वेशभूषा को जलाने का आन्दोलन आरभ करें।

यह कार्य स्वेच्छया करना है जिनके मन में भी पैंट पहनना छोड़ने की प्रेरणा हो वह स्वयं इसकी होली जलाएं। किसी भी तर्क से विदेशी व्यवहारों की नकल करना राष्ट्र हित में नहीं है, यह हमारा निश्चित मत है।

—भारतेन्द्रनाथ

अगला जुलायी अंक

अद्भुत और प्रचार के लिए अनुपम

शीघ्रता कीजिए !! आज ही मंगाइए

आर्य समाज के महान् कर्मठ चिन्तक और विचारक

श्री ओम्प्रकाश त्यागी (संसद् सदस्य) की सशक्त लेखनी से लिखित

धर्म-चिन्तन

दार्शनिक सिद्धान्तों पर संवाद रूप में विचार

अपनी ढंग की पहली पुस्तक

प्रत्येक विद्यालय में छात्रों व जिज्ञासुओं के लिए अनुपम

मूल्य १प्रति २)। १५) की १०) की ३५ प्रति।

६०) की ५०। १००) की १०० प्रति

२० जून तक आदेश भेज दें

जन-ज्ञान-प्रकाशन

१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप 'जन-ज्ञान' की सहायता इस तरह भी कर सकते हैं

१—जब भी आप को चन्दा समाप्ति की सूचना मिले, आप अपना शुल्क तुरन्त भेज दें।

२—वी. पी. पी. की प्रतीक्षा न करें। वी. पी. पी. में आपको १) अधिक देना पड़ता है जो न हमें मिलता है न आपको। इसलिए धन मनिआर्डर से ही भेजें।

३—यदि किसी कारण वश आप सदस्य न रहना चाहें तो हमें सूचित तो कर ही सकते हैं। आपके १० पैसे का कार्ड हमारे धन और समय की रक्षा कर सकता है।

४—मनिआर्डर के कूपन पर अपना पूरा नाम और पता अवश्य लिखें! सदस्य संख्या या **"नया सदस्य"** शब्द भी लिख दें।

५—'जन-ज्ञान' आपका अपना पत्र है। इसमें जो कमी नजर आए वह हमें बताएँ। हम आपके बल पर इसके द्वारा संसार में आर्य समाज का संदेश फैलाना चाहते हैं। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है— **—व्यवस्थापक**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमेरिका और पाश्चात्य देशों में आर्य समाज का स्थान

• • •

महात्मा आनन्द स्वामी से भेंट वार्ता
द्वारा श्री दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

—❖—

"मैं दक्षिण पूर्व एशिया, यूरुप, अफ्रीका और समस्त अमेरीका—इन देशों का भ्रमण वैदिक धर्म के प्रचार की दृष्टि से करने के पश्चात् जिस एकमात्र परिणाम पर पहुँचा हूँ, वह है कि—

"यही अवसर है जब आर्यसमाज को पूरी तत्परता और क्रियाशीलता के साथ विदेशों में वैदिक धर्म के प्रचार का काम अपने हाथ में लेना चाहिए। संस्कृत, अंग्रेजी के विद्वान् और क्रियात्मक योग विद्या में निपुण व्यक्तियों को ही विदेशों में भेजा जाए। यदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा पाँच-सात विद्वानों को केवल अमेरीका ही भेज दे और उनका समस्त व्यय वहन करले, तो, एक वर्ष के पश्चात्, निश्चय ही, अमेरीका से सभा को पर्याप्त मात्रा में धन आना आरम्भ हो जाएगा। पर विदेश जाकर उदारता से काम करना होगा, दकियानूसी और कड़े नियमों के अवलम्बन से काम नहीं चलेगा। वेद मानवता का संदेश देता है। इस समय संसार मानवता की ओर ले जाने वाले व्यक्तियों का अनुगमन करने के लिए उतावला हो रहा है।"

यूरूप और अमेरीका की प्रचार यात्रा के सिलसिले में ब्रिटेन में पहुँचने के तत्काल बाद ही लण्दन में फ्लू के आक्रमण से पीड़ित, डाक्टरों के आदेश से शीघ्र भारत वापस पहुँचने के लिए बाध्य, बम्बई में उपचार के लिए कुछ सप्ताह तक ठहरने के बाद राजधानी दिल्ली में हाल ही में पधारे, आर्यसमाज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के प्रबल संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज की सेवा में जब हम उनकी १९६९ की विस्तृत विदेश यात्रा के अनुभवों का संकलन करने पहुंचे तो हमारे इस प्रश्न के उत्तर में कि—"विदेश में हमारी प्रचार पद्धति किस ढग की होनी चाहिए ?"—महाराज ने उपर्युक्त उत्तर दिया ।

लगभग ८० 'वर्षीय स्वामी जी का जीवन एक ओर जहाँ व्यस्त है, वहाँ दूसरी ओर अत्यन्त व्यवस्थित, नियमित संयमित है । उनके जीवन का प्रत्येक क्षण सार्थक, सदुपयुक्त और जनहित समर्पित है । वे माडलबस्ती के पास चमेलियान मार्ग पर एक शिष्य के यहाँ विराजमान थे । पूर्व निश्चयानुसार, प्रातः ठीक ९ बजे जब हम वहाँ दो मंजिले मकान के अन्तर्गत उनके कक्ष में पहुंचे तो वे एक दम्पतिको आध्यात्मिक शिक्षा दे रहे थे । स्वामी जी की एक अद्भुत विशेषता है । वे सदा हँसमुख, शिष्ट मजाक पसन्द और अलमस्त प्रकृति के हैं । इसी सिद्ध स्वभाव से उन्होंने हमारा स्वागत किया । इतनी दीर्घ आयु तक पहुँचकर भी वे सदा फुर्तीले निरोग अनथक और देश-विदेश में अहर्निश प्रचार में संलग्न रहते हैं - इसका क्या रहस्य है ? वर्षों की संख्या में अपनी आयु की चर्चा करते हुए स्वामी जी महाराज ने अपनी लंदन यात्रा की एक घटना सुनाई ।

मेरी आयु २० वर्ष की है—८० वर्षीय स्वामी जी की घोषणा

१९६९ नवम्बर-दिसम्बर में जब समस्त यूरुप सहित ब्रिटेन में भयंकर रूप से "फ्लू" ज्वर फैला और केवल दो-चार दिनों में ही इंगलैंड में लगभग चार हजार व्यक्ति मर गये, तब स्वामीजी भी लंडन में ही इसी रोग के शिकार हो गये । डाक्टर ने पूछा "आपकी आयु क्या है ?" तत्काल उत्तर मिला "बीस वर्ष !!" डाक्टर भौंचक्का सा हो उनका मुँह ताकने लगा । बोला—"यह कैसे सम्भव हो सकता है ?" स्वामी जी ने कहा—भारतीय संस्कृति के अनुसार संन्यासी की आयु का आरम्भ इस चौथे आश्रम में प्रवेश काल से होता है । चूंकि मुझे इस आश्रम में बीस वर्ष हुए हैं, इसलिए मेरी आयु इतनी ही है ।" डाक्टर स्वामी जी की इस चुटकी से बड़ा प्रभावित हुआ और बोला "आप सदृश चिरकिशोर कभी बुढ़ापे का शिकार नहीं हो सकता ।" स्वामी जी की हाजिर जवाबी खूब कारगर हुई ।

हमारे इस प्रश्न के उत्तर में कि "आप किस-किस देश में गये और क्या अनुभव तथा वहाँ के निवासियों की क्या प्रतिक्रियाएँ आप लेकर आये "महाराज ने बताया—

दिल्ली से बर्लिन, लंदन, न्यूयार्क

"१५ अगस्त ६९ को दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा प्रातः प्रस्थान कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
रात्रि बर्लिन पश्चिम जर्मनी पहुँच गया। वहाँ पिछले वर्षों से श्री वीरेन्द्र निवास कर रहे हैं। उन्होंने वहाँ प्रमुख जर्मनों को आमन्त्रित किया हुआ था। उतरते ही स्वागत समारोह के बाद मेरा भाषण हिन्दी में हुआ। वीरेन्द्रजी

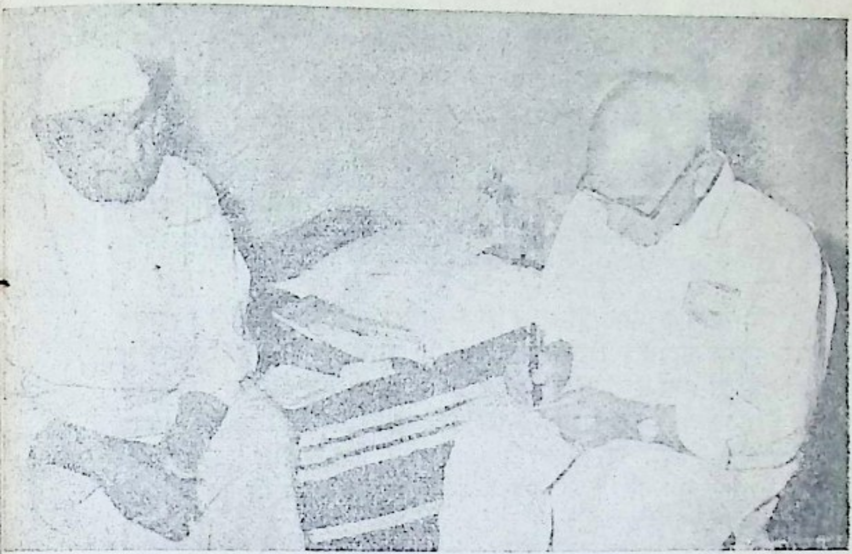

पत्रकार पं० दीनानाथ सिद्धांतालंकार महात्मा आनन्द स्वामी से प्रश्न पूछते हुए—

उसका जर्मन भाषा में अनुवाद करते जाते थे। एक जर्मन ने प्रश्न पूछा—जब आप गाय का दूध पीते हैं, तब उसका माँस खाने में आपको क्यों आपत्ति होनी चाहिए?" उत्तर देते हुए मैंने पूछा—क्या आपने अपनी माता का दूध पीया है?" उसने "हाँ" में जब उत्तर दिया, तब मैंने पूछा—"क्या आप अपनी माता का माँस खाने को तैयार हैं क्योंकि आपने उसका दूध तो पीया ही है।" इसका उत्तर उससे कुछ न बन सका। मैंने उसे भारतीय सभ्यता में गौ का क्या महत्व है, यह भली प्रकार समझाया।

६ दिन तक जर्मनी में वेद के महत्व के सम्बन्ध में भाषण देकर लंदन पहुँचा। वहाँ "आर्यसमाज" इस नाम की कोई संस्था नहीं है, "हिन्दू सेंटर" के नाम से आर्यसमाज का काम होता है। इंगलैंड से फ्राँस, स्विटजरलैंड

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बेलजियम, डेनमार्क इत्यादि देशों में वैदिक धर्म का प्रचार करता हुआ अमेरीका के प्रमुख नगर न्यूयार्क पहुँचा। वहाँ से पिट्सबर्ग, सेविम्वली, क्लीव लैंड, शिकागो—इन सब नगरों में वेद कथाएँ की'। वहाँ से फोनिक्स पहुँचा। यह नगर प्रशान्त महासागर के तट पर है। यहाँ भी वेद सम्बन्धी भाषण दिये। यहाँ सामान्य अंग्रेजी में भी वैदिक जीवन के महत्व पर प्रवचन किया। प्रायः सब भाषणों में हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद करने वाले रहते थे।

वैदिक आदर्शों के प्रचार के लिए ४० लाख रु० देने को तैयार अमेरीकी

फोनिक्स से स्वामी जी को १८ सितम्बर १६६६ तारीख का वहाँ के एक प्रमुख अमेरीकी एलबर्ट मारिस का पत्र प्राप्त हुआ है जिसमें लिखा है कि—

"मैं आपके व्याख्यान से अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ। अपने व्याख्यान में आपने जो एक बात कही है, उसने मेरे मन में एक प्रकार की जिज्ञासा पैदा कर दी है जिससे प्रेरित हो मैं यह पत्र आपको लिख रहा हूँ। आपने कहा था कि केवल मात्र वैदिक आदर्शों से ही विश्व शान्ति और समता आ सकती है। मैं उस देश स्थान व नगर का नाम जानना चाहूँगा जिसने इन आदर्शों का पालन करते हुए शान्ति और समता उपलब्ध की हो।

मैं यहाँ कहना चाहूँगा कि अमेरिका और यूरुप ने लाखों और लाखों डालर और पौंड पवित्र बाइबिल के आदर्शों और उसकी शिक्षाओं के प्रसार के लिए दिये हैं पर इससे स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। ईसाई आपस में लड़ रहे और झगड़ रहे हैं और यह सब देखकर मुझे बहुत निराशा हुई है।

मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी यदि आप मुझे ऐसे देश, प्रान्त नगर अथवा ग्राम का नाम बताएँगे जहाँ पर वैदिक आदर्श की शिक्षाओं सेउस स्थान पर शान्ति और समता का प्रादुर्भाव हुआ हो। वैदिक आदर्शों और शिक्षाओं के प्रसार के लिए मैं ५ लाख डालर (लगभग ४० लाख रुपया) स्वेच्छा से देकर अत्यन्त प्रसन्न होऊँगा।"

इस पत्र से स्पष्ट है कि अमेरीका में आध्यात्मिक पिपासा कितनी उग्रता से बढ़ रही है और स्वामी जी के उपदेशों का वहाँ कितना गहरा प्रभाव पड़ा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"सूरिनाम" (द० अमरीका) में आर्य समाज का कार्य

फोनिक्स से स्वामी जी दक्षिण अमेरिका के "सूरिनाम" देश में २१ सितम्बर ६९ को पहुँचे। यहाँ "आर्य दिवाकर" नाम की संस्था गत ४० वर्ष से वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार कर रही है। इस देश की राजधानी "पैरीमोरीवो" में विशाल आर्य मन्दिर है। "आर्य दिवाकर" सभा द्वारा "सूरिनाम" में बीसियों आर्य समाज स्थापित किये गये हैं। एक बड़ा अनाथालय भी यहाँ स्थापित है। संस्था की लाखों की सम्पत्ति है। लगभग दो दर्जन प्रचारक इस संस्था के आधीन देश में काम कर रहे हैं। डा० इन्द्रमणि रघुवर दास इसके प्रधान हैं और शिवरतन बड़े पुरुषार्थी और विद्वान्

पारामारीबो—सुरीनाम गाइना—दक्षिणी अमेरिका के गवर्नर को वैदिक धर्म की महत्ता बताते हुए : महात्मा आनन्द स्वामी

इस संस्था के कार्य कर्त्ता हैं। सब लोग बड़ी लगन से कार्य कर रहे हैं। लगभग एक सदी पूर्व उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों से हिन्दू बड़ी संख्या में गन्ने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के खेतों में कुली और मजदूर बन काम करने आये थे। इनकी संख्या लगभग ४५ हजार थी जिनमें से करीब ४० हजार ईसाई हो गये थे। इन प्रवासी भारतीयों में कुछ आर्य समाजी भी थे। अपने देशवासियों को इस प्रकार विधर्मी होना इन्हें सहन न हुआ। इने-गिने इन आर्य समाजियों ने "आर्य दिवाकर" संस्था की नींव रखी। आज इन ४५ हजार ईसाइयों में से ४० हजार से अधिक को पुनः (आर्य) वैदिक धर्म में वापस लाया जा चुका है। कुली-मजदूरों की सन्तानें ये भारतीय अब इस देश में सुखी और खूब समृद्ध हैं। यहाँ के लोग बड़े अतिथि सेवक और भारतीय यात्रियों को सुख पहुंचाने वाले हैं। यहाँ उपदेशक विद्यालय भी स्थापित हो चुका है जिसमें पं शिवरतन जी पं० सत्यव्रत जी और पं विशेश्वर जी कार्य कर रहे हैं। "आर्य दिवाकर" के संचालक चाहते हैं कि भारत से कोई संस्कृत हिन्दी अंग्रेजी का विद्वान् यहाँ आये और उपदेशक विद्यालय का काम सँभाले।

गयाना और उत्तरी अमेरिका में

सूरिनाम में दो मास तक प्रचार करने के बाद गयाना (दक्षिण अमेरिका) पहुँचा। यहाँ "अमेरिकन आर्यन लीग" और "आर्य प्रतिनिधि सभा" दो संस्थाएँ अलग-अलग काम कर रही हैं। गयाना से ट्रिनीडाड गया। यहाँ भी आर्य समाज के दो दल बने हुए हैं "वैदिक मिशन" "और आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम से। वैदिक मिशन संस्था की ओर से "दयानन्द कालेज" स्थापित किये जाने की योजना बना ली गयी है।

दक्षिण अमेरिका की यात्रा के बाद उत्तर अमेरिका नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में पहुँचा। सबसे पहले "मियामी" और "डल्लास" पहुँचा। "डल्लास" वह स्थान है जहाँ राष्ट्रपति केनेडी की हत्या की गयी थी। यहाँ के विश्वविद्यालय तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों में "वैदिक वे आफ लाइफ" (वैदिक जीवन पद्धति) "वर्णाश्रम व्यवस्था" इत्यादि विषयों पर भाषण दिये। एक समृद्ध अमेरिकी ५५ वर्षीय ज़मीदार इतना प्रभावित हुआ कि उसने संन्यास की दीक्षा मुझ से ली। उसका नाम "नित्यानन्द सरस्वती" रखा गया। यहाँ योग कक्षाएँ भी चलायीं। यहाँ से शिकागो कैलीफोर्निया, सान फ्राँसिस्को इत्यादि नगरों की यात्रा की।

समृद्धि और ऐश्वर्य से सन्तप्त अमेरिका

हमारे इस प्रश्न के उत्तर में कि इन विदेशी श्रोताओं की क्या प्रतिक्रिया थी। स्वामी जी महाराज ने बड़े भावपूर्ण शब्दों में कहा—

> "सचमुच स्थिति यह है कि अमेरिका निवासी धन कमा-कमा कर थक गये हैं। उन्हें इसके प्रति कोई आकर्षण नहीं है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब वे किसी ऐसी वस्तु की खोज में हैं जो उन्हें शान्ति और निश्चिन्तता दे। इसीलिए वहाँ योग के प्रति शिक्षित जनता की रुचि बड़े वेग से बढ़ रही है।"

योग केन्द्रों की बढ़ती संख्या

इस सम्बन्ध में स्वामी जी ने स्वामी रामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द के अनुयायियों द्वारा संचालित योग केन्द्रों के सन्दर्भ में बताया कि बंगाल के एक सज्जन जिनका नाम "भक्त वेदान्तानन्द" है, अमेरिका में "हरे कृष्ण हरे कृष्ण" के कीर्तन का जोरों से प्रचार कर रहे हैं। अमेरिका में सिर पर शिखा रखे, माथे पर तिलक लगा और लाँग वाली धोती के साथ पालती मार कर बैठ, ढोल चिमटे के साथ घन्टों "हरे कृष्णा" का कीर्तन करते हैं। एक अन्य बंगाली सज्जन केवल "ओ३म्" का कीर्तन कराते हैं। इस प्रकार के कीर्तन केन्द्र और योग केन्द्र इस देश में कई खुल गये हैं। न्यूयार्क में प्रो० राममूर्ति एम० ए० का योग केन्द्र अच्छी प्रगति कर रहा है। "गीता केन्द्र" के नाम से वहाँ आबाद भारतीयों ने शिकागो, पिटसबर्ग, क्लीवलैंड इत्यादि में केन्द्र चला रखे हैं। "रामकृष्ण मिशन" की ओर से "विवेकानन्द वेदान्त सोसाइटी" की अमेरिका में १२ शाखाएँ हैं और इसके २० संन्यासी निरन्तर वर्षों से अमेरिका में रह रहे हैं। रामकृष्ण मिशन से 'बहुधा' अमरीकी ही लाभ उठाते हैं और वह भी थोड़ी संख्या में। आर्य समाज नाम से अमेरिका में कोई स्वतंत्र संस्था नहीं है। हाँ महागुरु पं० भैरवपति सिन्हाने "वैदिक सोसाइटी" नाम से एक संस्था न्यूयार्क में और सानफ्रांसिस्को में खोली हुई है और आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार इसी के माध्यम से करते हैं।

योग की आड़ में भोगवादी हिप्पी

अमेरिका में लगातार बढ़ रहे हिप्पियों की चर्चा करते हुए स्वामीजी ने बतलाया कि अत्यन्त समृद्धि और ऐश्वर्य से तंग आये अमेरिकन युवक-युवतियाँ अब किसी बन्धन को मानने को तैयार नहीं हैं। वे सर्वथा उन्मुक्त और निर्बाध जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। युवक-युवतियाँ सेक्स के मामले में सर्वथा स्वेच्छाचार का व्यवहार करते हैं। उनकी दलील है कि जिस प्रकार पानी की प्यास किसी भी स्थान से और किसी भी व्यक्ति के हाथ से पानी लेकर बुझाई जा सकती है इसी प्रकार सेक्स की प्यास में माता बहिन बेटी सम-लिंगी पुरुष-इत्यादि का कोई भेद नहीं रखना चाहिए। ये लोग एच०एस०डी० तथा इसी प्रकार की अन्य नशीली ड्रग्स का इस्तेमाल करते हैं और जब नशा चढ़ता है तब कहते हैं कि योग और ध्यान का आनन्द आ रहा है। अमेरिका के योग केन्द्रों के सदस्यों के लिए निरामिष व शाकाहार आवश्यक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं है, मांस-मदिरा इत्यादि सब कुछ जायज समझा जाता है। विदेशी पत्रकार योग को बड़ी रुचि से सुनते हैं और योग-सिद्धियां देखने को सदा तत्पर रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों को ये लोग धन भी खूब देते हैं। वस्तुतः युरूप अमेरिका में "योग" रोजगार का अच्छा साधन बन गया है स्वामीजी ने बताया कि उन्होंने कई हिप्पियों को गायत्री मंत्र और पालती मार कर बैठना भी सिखाया। इन लोगों ने दो दिन में गायत्री मन्त्र याद कर लिया। स्वामीजी ने इन्हें ओ३म् का ध्यान करना सिखाया। कई हिप्पी मुलायम और ढीली पतलूनके साथ पालती मारकर बैठते थे। उल्लास में एक गुजराती दम्पति द्वारा== यूथरूड हैल्थ सेंटर "युवा और स्वास्थ्य केन्द्र अच्छा चल रहा है। वाशिंटन में स्वामी प्रेमानन्द का योग केन्द्र हैं। ये सब एक प्रकार की दुकानें हैं। जो वस्तुतः, ऊँची दूकान फीका पकवान के सदृश हैं।

गयाना और ट्रिनीडाड में

अमेरिकामें प्रचार करने के बाद गायना और ट्रिनीनाड में गया। लगभग दो मास वहाँ रहा। प्रातः सांय योग साधना कक्षा चलती थी जिसमें भारतीयों के अतिरिक्त डच अमेरिका और नीग्रोभी आते थे। आर्य समाज और सनातन धर्म सभा—दोनों की ओर से हिन्दी का अच्छा प्रचार हो रहा है। भारत सरकार की ओर से गायना में बाबू महतानसिंह यहाँ हिन्दी प्रचार के लिए भेजे गये है। ट्रिनी नाड में श्री हरिशंकर आदश हिन्दी प्रचार का अच्छा कार्य कर रहे हैं। इन दोनों टापुओं में यद्यपि हिन्दुओं की संख्या पर्याप्त है पर वे हिन्दी और भारतीय संस्कृति को भूल बैठें हैं और पश्चिम का अन्धाधुन्ध अनुकरण कर रहे हैं, आर्य समाज की ओर से इन दोनों देशों में प्रशंसनीय कार्य हो रहा है। पैरीमेरीवो (दक्षिण अमेरिका) के एक शिक्षित नीग्रो को हवन करके शुद्ध किया गया। वह अब "सत्यार्थ प्रकाश" का अंग्रेजी से डच भाषा में अनुवाद कर रहा है। दक्षिणा अमेरिका में सबसे पहले भाई परमानन्द प्रचार के लिए भारत से गये े। उनके बाद फिर महता जैमिनी जी और पं० अयोध्या प्रसाद जी, १९३७ में प्रो० भास्करानन्द जी और अब पं उषर्बुधजी वहाँ कार्य रहे हैं। इन्होंने वहाँ आर्य वीर दल संगठित किया है और संस्कृत पढ़ाने की कक्षाएँ चालू की हैं।

१९७५ में होने वाली आर्यसमाज शताब्दि के लिए सुझाव

१९७५ में आर्य समाज का शताब्दि समारोह मनाने की तैयारियाँ हो रही हैं। इस सम्बन्ध में अभी से क्या कार्यक्रम अपनाना चाहिए इस प्रश्न के उत्तर में स्वामी जी महाराज ने निम्न सुझाव दिये:—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१) अफ्रीका, जेंजीबार, मारीशस, सूरीनाम, फीजी, मलेशिया, इण्डोनेशिया इत्यादि देशों में आर्यसमाज का शानदार काम हो रहा है। भारत से कुछ प्रमुख पत्रकारों को वहाँ आर्य-समाज की ओर से ले जाया जाए ताकि वे वहाँ के कार्य को देखकर उसके सम्बन्ध में अपने पत्रों में लेखमालाएँ लिखें।

(२) आर्यसमाज का १०० वर्ष का इतिहास पूरी उदारता और दलबन्दी से ऊपर उठकर लिखा जाए।

(३) चारों वेदों के अंग्रेजी, जर्मनी और फ्रेंच में भाष्य सुयोग्य अनुशीलन प्रिय विद्वानों से कराये जाएँ ताकि ऋषि दयानन्द के संदेशों को विदेशों तक पहुँचाया जा सके।

(४) आर्यसमाज में भयंकर रूप से व्याप्त गृह कलह को अब समाप्त कर दिया जाए ताकि यह शताब्दि समारोह प्रभाव-शाली ढंग से मनाया जा सके। इस कलह के मूल में स्वार्थ और मिथ्या अभिमान ये दोनों बड़े कारण हैं। अब इन दोनों दोषों का पूर्णतः उन्नमूलन होना चाहिए। तभी यह शताब्दि समारोह सफल होगा और तभी आर्यसमाज जीवित रह सकेगा।

पश्चिम में मृतक-दाह संस्कार की वृत्ति

प्रसगंवश स्वामी जी ने बताया कि युरुप में, विशेषतः ब्रिटेन में अब ६० प्रतिशत मृतकों का दाह संस्कार होने लगा है। ये लोग, स्वास्थ्य और भूमि रक्षा की दृष्टि से मृतक को गाड़ने की अपेक्षा दाह संस्कार को पूर्णतः वैज्ञा-निक समझने लगे हैं। वैदिक सिद्धान्तों की विजय का ही यह प्रमाण है।

अपने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में स्वामी जी ने बताया कि अब वे प्रायः नीरोग हैं और लगातार प्रचार यात्रा पर हैं।

श्री पूज्य स्वामी जी महाराज के प्रति अत्यन्त विनम्रता के साथ हार्दिक धन्यवाद प्रकट कर हम वहां से विदा हुए। ●

प्रत्येक आर्य का यह परम धर्म होना चाहिए कि वह वैदिक विचारधारा प्रसार हेतु प्रति माह यथा शक्ति साहित्य बाँटे। साहित्य के द्वारा ही हम महर्षि दयानन्द का लक्ष्य पूरा कर सकते हैं।

—संपादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अराष्ट्रीय ईसाई तत्त्वों के विरुद्ध
११ पुस्तकें तैयार हैं

इन्हें मंगाइए और देश को बचाइए

१: ईसाई पादरी उत्तर दें।	—स्वामी श्रद्धानन्द	३) सैकड़ा
२. Achallaage to the christian Faith	,,	३) सैकड़ा
३. Bible in the Balance	—चार्ल्स स्मिथ	३) सैकड़ा
४. ज्ञान विज्ञान के शत्रु ईसाई मत	—ओमप्रकाश त्यागी	१०) सैकड़ा
५. पोप की सेना का भारत पर हमला	—भारतेन्द्रनाथ	१०) सैकड़ा
६. ईसाइयों की प्रचार प्रणाली	—जगत् कुमार	१०) सैकड़ा
७. पादरियों को चुनौती	—स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती	१०) सैकड़ा
८. बाइबिल को चुनौती	—ओमप्रकाश त्यागी	१५) सैकड़ा
९. और पादरी भाग गया	—ओमप्रकाश त्यागी	१०) सैकड़ा
१०. ईसाइयत की वास्तविकता	—शांति प्रकाश महोपदेशक	१०) सैकड़ा
११. बाइबल कसौटी पर······	—चार्ल्स स्मिथ	१५) सैकड़ा

अधिक से अधिक मंगाकर बाँटें।

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५९७, हरध्यान सिह मार्ग, नई दिल्ली-५

उदारता पूर्वक सहयोग दें

कुछ क्षेत्रों में ईसाई विरोधी साहित्य तो चाहिए पर वे धन नहीं भेज सकते, अतः वहाँ साहित्य भेजने के लिए सहयोग चाहिए। आप अपनी ओर से ईसाई प्रभावित क्षेत्रों में वितरण के लिए अधिक से अधिक साहित्य भिजवायें। यह राष्ट्र की महत्वपूण सेवा होगी। इसके लिए जितनी सहायता होगी उतना ही साहित्य हम भेजते जायेंगे। उदारता पूर्वक सहयोग दीजिए।

धन न भेज सकें तो भी
मुफ्त साहित्य मंगाएँ

राकेश रानी
—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

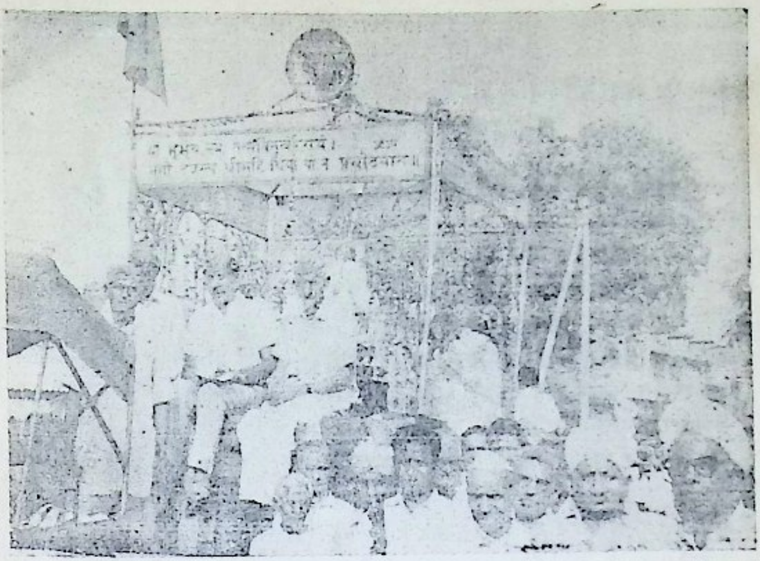

आर्य समाज करौलबाग के वार्षिकोत्सव पर जलूस में यज्ञ की एक झाँकी

आर्य समाज करौलबाग नई दिल्ली के उत्साही मन्त्री श्री कुलभूषण एम० ए०

आप समाज को प्रगति देने का सफल यत्न कर रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सब मनुष्य व्यापक परमेश्वर की स्तुति करें

वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गृणन्त ऋग्मियम् ।
होम गन्तारमूतये ॥ ऋ० १ । ९ । ९॥

पदार्थः—(गीर्भिः) वेदविद्या द्वारा संस्कृत वाणियों से (गृणन्त) स्तुति करते हुए हम लोग (वसुपतिम्) अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, आदित्यलोक द्यौ अर्थात् प्रकाशमान लोक, चन्द्रलोक और नक्षत्र अर्थात् जितने तारे दीखते हैं (इन सबका नाम वसु है क्योंकि ये ही निवास के स्थान हैं) इनके पति=स्वामी और रक्षक (ऋग्मियम्) वेदमन्त्रों के प्रकाश करने हारे (गन्तारम्) सबका अन्तर्यामी अर्थात् अपनी दीप्ति से सब जगह प्राप्त होने तथा (इन्द्रम्) सब के धारण करने वाले परमेश्वर की (वसोः) संसार में सुख के साथ वास कराने का हेतु जो विद्या आदि धन है उसकी (ऊतये) प्राप्ति और रक्षा के लिए (होम) प्रार्थना करते हैं ॥

भावार्थः—सब मनुष्यों को सब जगत् के स्वामी, वेद के प्रकाशक, सर्वत्र व्यापक इन्द्र परमेश्वर की ही ईश्वर रूप से स्तुति करनी चाहिए। तथा ईश्वर के न्याय आदि गुणों की स्पर्धा और पुरुषार्थ के साथ सब प्रकार से श्रेष्ठ विद्या राज्यलक्ष्मी आदि पदार्थों को प्राप्त होकर उनकी उन्नति और रक्षा सदा करें ॥

—०—

सब मनुष्य परमेश्वर की ही पूजा करें

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥ ऋ० १ । १० । १ ॥

पदार्थ :—हे (शतक्रता) असंख्यात कर्म और उत्तम ज्ञानयुक्त परमेश्वर (ब्रह्माणः) वेदों को पढ़कर उत्तम २ क्रिया करने वाले मनुष्य श्रेष्ठ उपदेश, गुण और अच्छी २ शिक्षाओं से (वंशमिव) जैसे अपने वंश को (उद्येमिरे) प्रशस्त गुणयुक्त करके उद्यमवान् अर्थात् पुरुषार्थी करते हैं, वैसे ही जो (गायत्रिणः) गायत्र अर्थात् प्रशंसा करने योग्य छन्द राग आदि पढ़े हुए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धार्मिक और ईश्वर की उपासना करने वाले पुरुष हैं वे (त्वा) आपकी (गायन्ति) सामवेद आदि के गानों से प्रशंसा करते हैं तथा (अर्किणः) अर्क अर्थात् जो कि वेद के मन्त्र पढ़ने के नित्य अभ्यासी हैं, वे (अर्कम्) सब मनुष्यों को पूजने योग्य (त्वा) आपका (अर्चन्ति) नित्य पूजन करते हैं।

भावार्थ :—इस मन्त्र में उपमालङ्कार है। सब मनुष्यों को परमेश्वर ही की पूजा करनी चाहिए अर्थात् उसकी आज्ञा में सदा वर्तमान रहना चाहिए। जैसे पुरुषार्थी वेदविद्या को पढ़कर अच्छे २ गुणों के साथ अपने और अन्यों के वंश को भी पुरुषार्थी करते हैं, वैसे ही अपने आपको भी होना चाहिए और जो परमेश्वर के सिवाय दूसरे का पूजन करने वाला पुरुष है, वह कभी उस उत्तम फल को प्राप्त होने योग्य नहीं हो सकता, क्योंकि न तो ईश्वर की ऐसी आज्ञा ही है और न ईश्वर के समान कोई दूसरा पदार्थ है कि जिसका उसके स्थान में पूजन किया जावे। इससे सब मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर ही का गान और पूजन करें।

—o—

हम प्रभु की उपासना करें

अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम्।
यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥ ऋ० १। ३० ९॥

पदार्थ :—हे मनुष्य (ते) तेरा (पिता) जनक वा आचार्य (यम्) जिस (प्रत्नस्य) सनातन कारण वा (ओकसः) सब के ठहरने योग्य आकाश के सकाश से (तुविप्रतिम्) बहुत पदार्थों को प्रसिद्ध करने और (नरम्) सब को यथायोग्य कार्यों में लगाने वाले परमेश्वर या सभाध्यक्ष का (पूर्वम्) पहले (हुवे) आह्वान करता रहा, उसका मैं भी (अनु हुवे) तदनुकूल आह्वान वा स्तवन करता हूँ।

पदार्थ :—ईश्वर मनुष्यों को उपदेश करता है—हे मनुष्यो! तुम को औरों के लिए ऐसा उपदेश करना चाहिए कि जो अनादि कारण से अनेक प्रकार के कार्यों को उत्पन्न करता है, तथा जिसकी उपासना पहिले के विद्वानों ने की वा अब के करते वा अगले करेंगे, उसी की उपासना नित्य करनी चाहिए। उपासना के विषय में कोई किसी से पूछे कि तुम किस की उपासना करते हो, उसके लिए उत्तर देवे कि जिसको तुम्हारे पिता वा विद्वान् जन करते हैं, तथा वेद जिस निराकार, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान्, अज और अनादि स्वरूप जगदीश्वर का प्रतिपादन करते हैं, उसी की उपासना मैं निरन्तर करता हूँ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वही जगदीश्वर सब का उपास्य है

अग्ने यदद्य विशो अध्वरस्य होतः पावकशोचे वेष्ट्वं हि यज्वा।
ऋता यजासि महिना वि यद्भूर्हव्या वह यविष्ठ या ते अद्य॥
ऋ० ६। १५। १४॥

पदार्थ :—हे (पावकशोचे) पवित्र प्रकाश और (होतः) दान करने तथा (यविष्ठ) अतिशय मिलाने वा विभाग कराने और (अग्ने) सम्पूर्ण प्रजा की पीड़ाओं को दूर करने वाले (यत्) जो (यज्वा) मेल करने वाले (त्वम्) आप (हि) निश्चय से (अद्य) इस समय (विशः) मनुष्य आदि प्रजा के (वेः) आकाशगन्ता पक्षी के समान (अध्वरस्य) अहिंसामय (ऋता) सत्य सुख के प्राप्त कराने वाले यज्ञ में (यजासि) यजन करते हो (यत्) जो आप (महिना) महत्त्व से (वि) विशेष करके (भूः) होवें और (या) जो वस्तुएं (ते) आप के वर्तमान में (अद्य) इस समय हैं उन (हव्या) देने योग्यों को हम लोगों के लिए (वह) प्राप्त करिये।

भावार्थ :—हे मनुष्यो! जो सम्पूर्ण सृष्टि को एकत्रित करता है और जो व्यापक अहिंसा आदि धर्म के अनुष्ठान के लिए आज्ञा देता है वह सब से उपासना करने योग्य है॥

(ऋषि भाष्य से)

CO

सिंगापुर के मन्त्री भारत में

आर्य समाज सिंगापुर के मन्त्री श्री श्रीधर त्रिपाठी साहित्यालंकार लगभग तीन मास की यात्रा पर भारत वर्ष आ गए हैं। वे एयर इंडिया के विमान से मई के प्रथम सप्ताह में यहाँ पहुँचें। श्री त्रिपाठी आर्य समाज की गतिविधियों का निकट से अध्ययन करना चाहते हैं तथा एक ऐसे संगीतज्ञ उपदेशक व योग्य संन्यासी का चयन करना चाहते हैं जो दीर्घकाल तक सिंगापुर में प्रचार कर सके। आर्य संस्थाओं से यह आशा की जाती है कि जिस नगर में श्री त्रिपाठी से सम्पर्क स्थापित हो कृपया उन्हें यथोचित सहयोग देवें। वे गत ग्यारह वर्षों से समाज के मन्त्री हैं। भारत में पत्रव्यवहार मात्र का अस्थायी पता इस प्रकार है:—

श्रीधर त्रिपाठी, साहित्यालंकार,
द्वारा श्री गोपाल प्रसाद गुप्त एम० ए०,
श्री दुर्गा टैक्सटाइल्स,
मऊनाथ भञ्जन, आजमगढ़, (उत्तर प्रदेश)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

११. **यज्ञ प्रसाद** —महात्मा आनन्द स्वामी कृत मूल्य ४० पैसे। ३०) सैकड़ा। आप यज्ञ करते होंगे तो यज्ञ के बाद प्रसाद भी बाँटते ही होंगे। यह प्रेरक महात्मा जी का रचना प्रसाद है। इसे मंगाइये और यज्ञ भावना फैलाने हेतु वितरण कीजिए।

१२. **गीत मंजरी**..८० पैसे
ईश्वर भक्ति के गीत और प्रभु से प्रार्थना करते हुए यदि आप सचमुच अपने आप को भुलाना चाहते हैं तो गीत मंजरी का सहारा लीजिए। पुस्तक अपने ढंग की अनूठी है।

१३. **ज्ञान प्रकाश** —हरिशरण सिद्धाँतालकार मूल्य १)५० पैसे
—दीनानाथ सिद्धाँतालंकार

आर्य समाज के २ विद्वानों की लेखनी ने सत्यार्थ प्रकाश का सार जिस आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है वह प्रचार के लिए अनुपम है। सत्यार्थ प्रकाश के गूढ़ रहस्यों तक पहुँचने के लिए ज्ञान प्रकाश पढ़िए, और प्रसारित कीजिए—१०) की १० प्रति, और ७५) सैकड़ा। शीघ्र मंगाइए, स्टाक बहुत थोड़ा है

१४. **वेद ज्योति**—४०० मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह—मूल्य ३)।

१५. **प्रार्थना मंत्र व्याख्या**—प हरिशरण जी सिद्धाँतालंकार लिखित प्रार्थना मंत्रों की अनुपम व्याख्या। मूल्य ४० पैसे

१६. **भारत की अवनति के ७ कारण**——प्र० जगदीश एम० ए० की लोह लेखनी द्वारा लिखित पृष्ठ ६८। मूल्य ४० पैसे। ३५)। सैकड़ा २५०) हजार।

१६. Light of Truth..७५ पैसे।

१८. **वैदिक अध्यात्म ज्योति**—४०८ मंत्रों का अर्थ सहित संग्रह मूल्य २)

१९. **योग जीवन** ... ... मूल्य २)

२०. **नीति दोहावली**... ... ... मूल्य ८० पैसे

यह सम्पूर्ण साहित्य भारी संख्या में मंगा कर
अपने क्षेत्र पर वेद पताका लहराइए

जन-ज्ञान प्रकाशन

१५९७, हरध्यान सिंह रोड़, (निकट ३१ नाई वाला)
करौल बाग नई दिल्ली-५

अपने आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर कुल व्यय का २० प्रतिशत साहित्य वितरण पर लगाइए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी आयुवदिक ओषधियों के लिए गुरुकुल कांगड़ो फ़ार्मेसी
सदा स्मरण रखें।

बडा सूचि पत्र व एजेंसी नियम मँगाएँ।

व्यवस्थापक-गुरुकुल कांगड़ी फ़ार्मेसी P. O. गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम पहन लो चूड़ियां

तुम पहन लो चूड़ियाँ,
हमने उठाली हाथ में तलवार,
कायरों की भाँति बैठे डर रहे तुम,
क्या न तुमको है विजय से प्यार !

प्रश्न मेरा सुन न चौंको,
मत डरो जलती लपट से,
आँधियों में मत डिगो रे,
काँपते हो क्यों कपट से,

शत्रु बढ़ता आ रहा है,
वह सभी पर छा रहा है,
हट रहे तुम, बढ़ रहा वह,
मर रहे तुम, जी रहा वह,

कह रहे हो, वह विकट है,
काल अपना अब निकट है,
मृत्यु का स्वर गूँजता है,
दिल हमारा डूबता है,

किन्तु सुन लो शत्रु दल अब,
एक पग भी बढ़ न सकता।
सर्वनाशी भावना ले,
राष्ट्र में वह पल न सकता।

देश द्रोही तत्व सारे,
हम मिटाएँगी यहाँ से,
सिर कटाकट जब कटेंगे,
भाग जाएँगे यहाँ से।

वीर बालाएँ समर में जूझ
अब देश की रक्षा करेंगी।
प्राण देंगी, किन्तु अपनी
जय-ध्वजा झुकने न देंगी।

स्वार्थ में भूले हुए तुम
भूल बैठे माँ—निमन्त्रण।
इस लिए स्वीकार हमने
कर लिया है रण निमन्त्रण।

राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहयोग हेतु आभारी हूं

वैदिक विचारधारा प्रसार में हमें निम्न आहुतियाँ प्राप्त हुई हैं। धन्यवाद प्रभु कृपा करें कि हम आप सभी की भावना के अनुसार वेद-प्रकाश फैलाते रहें

—सम्पादक

१—श्री पूज्यपाद योगीराज स्वामी योगेश्वरानन्दजी सरस्वती	१०१.००
२—श्री हुक्मचन्द्र जी दिल्ली	५००.००
३—डा० सु० वे० काले	५.००
४—श्री बल्देव वानप्रस्थी, बिजनौर	११.००
५—श्री जयन्त वी० कोटेच्चा पोरबन्दर	५.००
६—श्री लालचन्द चौपड़ा, बम्बई	२१.००
७—श्री भीमसेनजी दीवान, गुड़गाँव	१०.००
८—आर्य स्त्री समाज कलकत्ता	१००.००
९—श्री देवराज जी खतौली	११.००
१०—उमाशंकर जी, ओबरा	५.००
११—श्री सन्तलाल आर्य, हिसार	२०.००
१२—डा० पवनकुमार, उड़ीसा	६.००
१३—श्री लक्ष्मणकुमार जी नीमचाना	५.००
१४—बंसीधर शर्मा फतेहाबाद	१०.००
१५—श्री सत्यपाल हाँडा, जबलपुर	१०.००
१६—श्री रामजीदास जी, पोस्ट आफ़िस जयपुर	५.००
१७—श्रीमती कौशल्या देवी, अमृतसर	१०.००
१८—श्री भीमसेन दीवान, गुड़गाँव	१०.००
१९—श्री मंगललाल दवे, भरूच	५.००
२१—श्री मामचन्द्र जी, सहारनपुर	२.००
२२—श्री शंकर लाल कलकत्ता	१.००
२३—श्री चरणदास पटियाला,	१०.००
२४—श्री चुन्नीलाल, सावली	१०.००
२५—श्री शेष रामकुमार	३.००
२६—श्री पशुपति नाथ कानपुर	५.००
२७—श्री मती विद्यावती सब्बरवाल	२.००
[क्रमशः] योग—	८९१.००

"वेद-प्रचार-यज्ञ" सफलता के लिए आपकी आहुति की प्रतीक्षा कर रहा है।

—संचालक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

! ओ३म् !

नीति-दोहावली

अनेक विषयों पर विभिन्न
विद्वानों, साधु-सन्तों के
उपयोगी-प्रेरक उपदेशों
का संग्रह

संकलनकर्ता
ब्र० जगदीश विद्यार्थी,
एम० ए०

यह पुस्तक केवल ८० पैसे में मिल सकती है।
६) की १० प्रतियाँ

मुद्रक प्रकाशक—सम्पादक राकेश रानी द्वारा
भाटिया कम्पोजिंग एजेन्सी, वार्ष्णेय प्रेस दिल्ली में मुद्रित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदप्रकाश का बृहद् विशेषाङ्क

- यदि आप अपने प्राचीन गौरवमय इतिहास की झाँकी देखना चाहते हैं,
- यदि आप मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जीवन का अध्ययन करना चाहते हैं,
- यदि आप प्राचीन भारतीय राज्य व्यवस्था का स्वरूप देखना चाहते हैं,
- यदि आप रामायण के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रान्त धारणाओं का समाधान पाना चाहते हैं,
- यदि आप भ्रातृ प्रेम का, नारी गौरव का, आदर्श सेवक का, आदर्श मित्र का, आदर्श राजा का, आदर्श पुत्र का स्वरूप अवलोकन करना चाहते हैं,
- यदि आप रामायणों का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहते हैं,

तो

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्, निरन्तर साहित्य साधना में संलग्न, रामायण के समालोचक एवं मर्मज्ञ, नैष्ठिकब्रह्मचारी

आचार्य जगदीश विद्यार्थी एम० ए०

द्वारा सम्पादित, संकलित एवं सैकड़ों टिप्पणियों से समलंकृत, श्रावणी के पावन पर्व पर प्रकाशित होने वाले 'वेद प्रकाश' का वृहद विशेषांक

श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण

का अध्ययन कर जाइये। अब तक वाल्मीकीय रामायण की इससे सुन्दर टीका नहीं हुई है। सम्पूर्ण रामायण ६५०० श्लोकों में समाप्त है। टिप्पणियों की भरमार है।

बढ़िया कागज सुन्दर छपाई इस पर भी मूल्य केवल १५) मात्र। 'वेद प्रकाश' के ग्राहकों को केवल १२) में।

निराशा से बचने के लिए आज ही स्वयं 'वेद प्रकाश' के ग्राहक बनें और अपने इष्ट मित्रों को बनायें।

गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

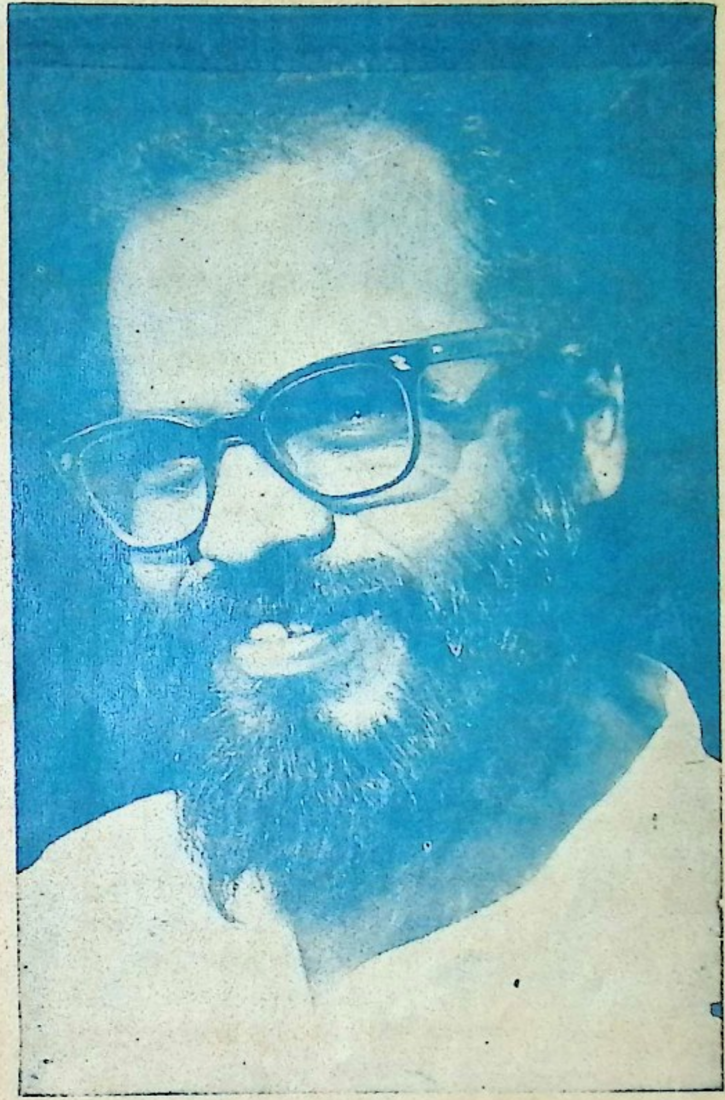

नीति दोहावली के संकलनकर्त्ता एवं सम्पादक
आचार्य जगदीश विद्यार्थी एम.ए.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

नीति दोहावली

अकेला

यह मत कहो कि जग में कर सकता क्या अकेला ।
लाखों में काम करता इक शूरमा अकेला[1] ॥

मैं अकेला ही चला था जानिबे-मञ्जिल[2] मगर ।
लोग साथ आते गये और कारवाँ[3] बनता गया ॥

क्या बार-बार दुहराता है, एकाकी मन इकला दम है,
पर देख तनिक एकाकी शिव ही पूर्ण प्रलय को क्या कम है ।
बढ़ सिद्धि सामने खड़ी हुई बज रहा विजय का नूपुर है,
वह देख सामने नन्दन है, दो-चार कदम पर सुर-पुर है ॥

एकेनापि हि शूरेण पदाक्रान्तं महीतलम् ।
क्रियते भास्करेणेव स्फारस्फुरिततेजसा ॥ —भर्तृहरि

जिस प्रकार सूर्य अकेला ही अपनी किरणों से समस्त संसार को प्रकाशमान कर देता है, उसी प्रकार एक ही वीर अपने शौर्य और पराक्रम से सारी पृथ्वी को अपने पैरों तले कर लेता है ।

---

१. इतिहास इस का साक्षी है । महापुरुषों के उदाहरण हमारे समक्ष हैं । देखिये—

थे न मठ-मन्दिर, हवेली हाठ,–ठाठ बाट, ।
सोना-चाँदी कहाँ पास पैसा था न धेला था ।
तन पै न थे सुवस्त्र, हाथ थे न अस्त्र-शस्त्र,
जोगी न जमात कोई, चेली थी न चेला था ।
सत्य की सिरोही से संहारे सब असत्य मत,
संकट विकट मर्दानगी से झेला था ।
सारी दुनिया के लोग एक ओर थे 'प्रकाश'
एक ओर दयानन्द निर्भय अकेला था ॥

२. लक्ष्य की ओर, ३. यात्रीदल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

The strongest man of the world is the one who stands most alone.

संसार का सब से शक्तिशाली मनुष्य वही है जो अकेला रहता है।

—इब्सन

They walk with speed who walk alone, —**Napolean.**

जो अकेले चलते हैं वे तेजी से आगे बढ़ते हैं।

अटक

सबै भूमि गोपाल[1] की या में अटक कहाँ।
जाके मन में अटक है सोई अटक रहा।।

जो हिचकिचा के रह गया वो रह गया इधर।
जिसने लगाई एड वो खन्दक[2] के पार था।।

अति

अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप्प।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धुप्प।।

अति परिचय ते होत है, अति अनादर भाय।
मलियागिरि की भीलनी, चन्दन देत जलाय।।

अति की भली न बात कोउ, कैसी हू संसार।
होत तुरत आचार हू, अति सों अत्याचार।।

—किशोरी दास वाजपेयी

अति संघरषन जौं कर कोई।
अनल प्रकट चन्दन ते होई।। —तुलसी (मानस उत्तर)

ब्रह्मन्मा त्वं वदो बहु[3]। —यजु० २३।२५

हे ब्रह्मन् ! शक्तिशालिन् ! तू बहुत मत बोला कर।

---

१. गो = पृथ्वी, पाल = पालक, रक्षक। पृथ्वीपालक परमात्मा।

२. खाई।

३. किसी ने इसी का अनुवाद इस रूप में किया है—

Speech is silver, silence is golden, speech is human, silence is divine.

वाचालता चाँदी है, मौन सोना है, वाचालता मानवीय है, और मौन दिव्य-गुण।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वदन्ब्रह्मावदतो वनीयान् । —ऋ० १०।११७।७

उपदेश देने वाला ज्ञानी मौन रहने वाले ज्ञानी से उत्तम है।

अतिरूपेण वै सीता अतिगर्वेण रावणः ।
अतिदानाद्बलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत् ।। —चाणक्य

अति सुन्दरता के कारण सीता का हरण हुआ अति गर्व के कारण रावण मारा गया, अतिदान के कारण बलि को बंधना पड़ा अतः अति को सर्वत्र छोड़ देना चाहिए।

Excess of everything is bad.

अति प्रत्येक वस्तु की बुरी है।

अतिथि-सत्कार

रहिमन तव लगि ठहरिये, दान मान सम्मान।
घटत मान देखिय जबहिं, तुरतहि करिय पयान ।। —रहीम

प्रेम–प्रीति से जो मिलै, तासौं मिलिये धाय।
अन्तर राखै जो मिलै, तासौं मिलै बलाय —कबीर

आवत ही हर्षे नहीं, नयनन नहीं सनेह।
तुलसी तहाँ न जाइये, कञ्चन बरसे मेह ।। —तुलसी

गृहे वसतु नो अतिथिः । —अथर्ववेद

हमारे घर में अतिथि निवास करें।

अतिथिर्यस्य भग्नाशो गृहात्प्रतिनिवर्तते ।
स तस्मै दुष्कृतं दत्त्वा पुण्यमादाय गच्छति ।। —विष्णु पुराण

जिसके घर से अतिथि निराश होकर लौट जाता है, उसे वह अपने पाप देकर उसके शुभ कर्मों को ले जाता है।

An honest, hearty-welcome to a guest works miracles with the fare, and is capable of turing the coarsest food to nectar and ambrosia.

अतिथि के साथ सच्चे और हार्दिक स्वागत में वह शक्ति है कि जो साधारण-से-साधारण भोजन को अमृत और देवताओं का भोजन बना देती है। —हाथोनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अति–भोजन

पेट की मोटर में भोजन की सवारी कम भरो।
फेल हो जायेगी ठूंसा ठूंस भर जाने के बाद॥

अधिक वायु के भरने से फुटिबाल फटि जाय।
बड़ी कृपा भगवान की पेट नहीं फटि जाय।
यद्यपि न दीखत पेट फटा, फटत मनुज की देह।
रोग भयंकर होत हैं, बने नरक की गेह॥

—भगवानदास वामन

अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चाति भोजनम्।
अपुण्यं लोकविद्वष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत्॥ —मनु०

अति-भोजन रोगों का घर है, आयु को घटाता है और सुख भी नहीं देता। अधिक भोजन खाने से पुण्य भी नहीं मिलता अपितु लोगों में निन्दा ही होती है अतः बहुत अधिक भोजन नहीं करना चाहिए।

Their kichen is their shrine, the cook their priest, the table their alter and their belly is their God.

पेटु मनुष्य के लिये उनकी पाकशाला उनका तीर्थ स्थान, रसोइया उनका पुरोहित, मेज उनकी वेदी और पेट उनका ईश्वर है —बर्क

अन्न

जैसा अन्न जल खाइये, तैसा ही मन होय।
जैसा पानी पीजिये, तैसी बानी होय॥ —कबीर

दीपो भक्षयते ध्वान्तं कज्जलं च प्रसूयते।
यदन्नं भक्षयेन्नित्यं जायते तादृशी प्रजा॥ —चाणक्य

दीपक अन्धकार खाता है और काजल को जन्म देता है, इसी प्रकार मनुष्य जैसा अन्न खाता है वैसी सन्तति होती है।

अन्याय

अन्याय सहकर बैठ रहना,
यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी,
दण्ड देना धर्म है॥ —मैथिली शरण गुप्त

To do injustice is more disgraceful than to suffer it.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्याय सहने की अपेक्षा अन्याय करना अधिक अपमानकारक है।
—प्लेटो

अभिमान

लेने को हरि नाम है, देने को कछु दाम।
तारन को है नम्रता, डूबन को अभिमान ।।

तिमिर गया रवि देखते, कुमति गई गुरु ज्ञान।
सुमति गई अति लोभ से, भक्ति गई अभिमान ।।

संसृत मूल सूलप्रद नाना।
सकल सोकदायक अभिमाना ।। —तुलसी (मानस)

Pride ruined the angels. —Emerson

अभिमान ने देवताओं को भी बरबाद कर दिया।

We rise in glory as we sink in pride. —Young

ज्यों-ज्यों अभिमान कम होता है, कीर्ति बढ़ती है।

अभ्यास

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते सिल पर होत निसान ।।

Constant practice often excells even talent. —Cicero

निरन्तर अभ्यास बुद्धि को भी मात कर देता है।

अवसर

नीकी पै फीकी लगे, बिन अवसर की बात।
जैसे बरनत युद्ध में, रस शृंगार न सुहात ।। —वृन्द

लाभ समय को पालिबो हानि समय की चूक।
सदा विचारहिं चारुमति सुदिन कुदिन दिन दूक ।। —तुलसी

The man who loses his opportunity, loses himself.
—G. Moore

जो मनुष्य अवसर को खो देता है, वह अपने को ही नष्ट कर देता है।

The secret of success in life, is for a man to be ready for his opportunity when it comes. Disraeli

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनुष्य के लिए जीवन में सफलता का रहस्य है—प्रत्येक आने वाले अवसर के लिये तैयार रहना।

Do not suppose opportunity will knock twice at your door. —Chamfort

ऐसा न सोचो कि अवसर तुम्हारा द्वार दोबारा खटखटायेगा।

अहंकार

माया तजी तो क्या भया, मान तजा नहीं जाय।
जेहिं मानै मुनिवर ठगे, मान सबै को खाय॥ —कबीर

अहिंसा

जहां अहिंसा का शासन है, निर्भय सभी विचरते हैं।
उभय लोक में सुख को पाकर, भव सागर से तरते हैं॥

अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः। —यो० दर्शन

अहिंसा में प्रतिष्ठित हो जाने पर अन्य प्राणी भी उसके निकट वैर-भाव छोड़ देते हैं।

आगे-बढ़ो

हिमाद्री तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
स्वयं प्रभा समुज्ज्वला स्वतन्त्रता पुकारती।
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पन्थ हैं, बढ़े चलो-बढ़े चलो॥

—जयशंकर प्रसाद

इतने ऊपर उठो कि जितना आस्मान है,
इतने बड़े बनो कि जितना सूरज महान् है।
ऐसे बढ़ो जैसे निर्झर बढ़ चलता है,
हर टीले पर चट्टानों पर चढ़ चलता है॥

इस जीवन का उद्देश्य नहीं है,
विश्रान्त भवन में टिक रहना।
किन्तु पहुंचना उस सीमा तक,
जिसके आगे राह नहीं॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन में बाधा अरि से, लड़ता चल तू साहस सर से,
लक्ष्य खड़ा सम्मुख तेरे हो, भाग्य भी तेरा नत मस्तक हो ।
रे राही आगे बढ़ता चल ।।

पानी न बहे तो उस में बू आये,
खञ्जर न चले तो मोर्चा[1] खाये।
गर्दिश[2] से बढ़ा मिहर-वो-मा[3] का पाया[4],
गर्दिश से फलक[5] ने औज[6] को पाया ।।

उत् क्रामातः पुरुष माव पत्थाः । **—अथर्ववेद**

हे पुरुष ! अपनी वर्तमान अवस्था से ऊपर उठ, आगे बढ़, नीचे मत गिर ।

उद्यानं ते पुरुष नावयानम् । **—अथर्ववेद**

हे पौरुष सम्पन्न नर ! तेरा ऊर्ध्व गमन हो, अधःपतन नहीं ।

आस्ते भग आसीनस्य ऊर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः ।
शेते निषद्यमानस्य चराति चरतो भगः ।।
चरैवेति, चरैवेति ।

बैठे हुए का सौभाग्य बैठा रहता है, खड़े होने वाले का सौभाग्य खड़ा हो जाता है, पड़े रहने वाले का सौभाग्य सोता रहता है और उठकर चलने वाले का सौभाग्य चल पड़ता है । इसलिये चलते रहो, चलते रहो ।

If God had intended man to go behind, He would have given him eyes in the back of his head. **Hugue**

यदि ईश्वर ने मनुष्य को पीछे की ओर चलने के विचार से बनाया होता तो वह उसकी आँखों को आगे न बना कर सिर के पीछे बनाता ।

आचरण

अमल[7] से जिन्दगी बनती है, जन्नत[8] भी जहन्नुम[9] भी ।
फितरत[10] से यह खाकी,[11] नूरी[12] है न नारी[13] है ।।

---

१. जंग २. भ्रमण ३. सूर्य और चन्द्रमा ४. प्रतिष्ठा ५. आकाश ६. उच्चता ७. आचरण ८. स्वर्ग, ९. नरक १०. स्वभाव ११. मनुष्य १२. स्वर्गीय १३. नारकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ।। —श्रीकृष्ण

श्रेष्ठ पुरुष जो-जो करता है अन्य पुरुष भी उसके अनुसार व्यवहार करते हैं। वह जो आदर्श स्थापित कर देता है, लोग उसी के अनुसार चलते हैं ।

A beautiful behaviour is better than a beautiful form.
Emerson

सुन्दर आचरण, सुन्दर शरीर से अच्छा है ।

आज

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब्ब ।
पल में परलय होयगा, बहुरि करोगे कब्ब* ।। —कबीर

श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम् ।
नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतं वास्य न वा कृतम् ।। —अज्ञात

कल के कार्य को आज कर लेना चाहिये और दोपहर पश्चात् के कार्य को दोपहर पहले कर लेना चाहिये क्योंकि मृत्यु यह नहीं देखती कि इसने कार्य किया है या नहीं ।

आत्म-निरीक्षण

कशाकशीए[1] जिन्दगी से बचकर ।
कभी तो खिलवत-नशीं[2] हुआ कर ।
इसमें वो है कुदरत,[3]
कि बूंद पानी को गोहर[4] आबदार[5] कर दे ।।

प्रत्यहं प्रत्यवेक्षेत नरश्चरितमात्मनः ।
किं नु मे पशुभिस्तुल्यं किं नु सत्पुरुषैरिति ।।

---

*आज के युवक कहते हैं—

आज करे सो काल कर काल करे सो परसों ।
जल्दी तुझको क्या पड़ी अभी जीना है बरसों ।।

१ संघर्ष, २. एकान्तवास, ३. शक्ति, ४. मोती, ५. चमकदार ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनुष्य को प्रतिदिन आत्म-निरीक्षण करते हुए देखना चाहिये कि मेरा जीवन पशुओं के तुल्य है अथवा श्रेष्ठ पुरुषों के तुल्य।

आत्म-विश्वास

इस में नहीं सन्देह जीवन झंझटों से युक्त है।
वह ही यहां जय पाय है आत्मविश्वास से जो युक्त है ।।

अहमिन्द्रो न पराजिग्य । —ऋग्वेद

मैं इन्द्र हूँ ! मेरा कभी पराजय नहीं हो सकता।

Selftrust is the first secret of success. **—Emreson**

आत्म-विश्वास सफलता का पहला रहस्य है।

Self-reverence, Selfknowledge, Self-control—these three alone lead life to Sovereignity. Tenyson

आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और आत्म-संयम—ये तीन जीवन को परम शक्ति-सम्पन्न बना देते हैं।

आपत्ति

जितने कष्ट कण्टकों में है जिनका जीवन-सुमन खिला।
गौरव-गन्ध उन्हें उतना ही, यत्र-तत्र-सर्वत्र मिला ।।

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी।
आपति काल परखिये चारी ।। —तुलसीदास

तुलसी साथी विपति के, विद्या विनय विवेक।
साहस सुकृत, सुसत्यव्रत, प्रभु भरोसो एक ।।

रन, वन, व्याधि विपत्ति में रहिमन परचो न रोय।
जो रच्छक जननी जठर, सो हरि गयो न सोय ।। —रहीम

विरह व्यथा कण्टक सहकर ही मिलता है गुलाब छवि मान।
शत-शत छिद्र सहन कर कंघी पाती है प्रियाकेशों में स्थान ।।

कदम रहता है साबित[1] जिनका इस सख्तीये दौराँ[2] में।
बहादुर हैं वही सर[3] किला-फौलाद[4] करते हैं ।।

१. दृढ़, २. आपत्ति ३. विजय ४. लोह-दुर्ग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुर्खरू[१] होता है इन्सां ठोकरें खाने के बाद ।।
रंग लाती है हिना[२] पत्थर पै घिस जाने के बाद ।

फिरता है बिस्मिल हवादिस[३] से कहीं मरदों का मुंह ।
शेर सीधा तैरता है वक्ते-रफतन[४] आब[५] में ।।

Gold is tried by fire, brave men by adversity. —**Seneca**

अग्नि सोने को परखती है, आपत्ति वीर-पुरुष को ।

God brings man into deep waters not to drown them, but to cleanse them. —**Aughey**

ईश्वर मनुष्यों को डुबाने के लिये विपत्ति में नहीं डालता अपितु उन्हें शुद्ध, पवित्र एवं निर्मल बनाने के लिये ही विपत्ति में डालता है ।

आभूषण

नहीं मोहताज़ जेवर का जिसे खूबी खुदा ने दी ।
कैसा खुशनुमा लगता है देखो चाँद बिन गहने ।।

शीलं[६] परं भूषणम् ।

शील सबसे बड़ा आभूषण है ।

हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
श्रोत्रस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ।।

हाथ का आभूषण दान है, सत्य बोलना कण्ठ का आभूषण है, शास्त्र-वचन कान के आभूषण हैं । ये आभूषण हों तो फिर अन्य आभूषणों की क्या आवश्यकता है ?

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला,
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः ।

---

१. सम्मानित २. मँहदी ३. आपत्तियां ४. बहने के समय ५. पानी
६. शील क्या है ? सुनिये—

अद्रोहः सर्वभूतानां कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च दानं च शीलमेतद्विदुर्बुधाः ।। —महा०शान्तिपर्व

मन, वचन और कर्म से प्राणियों के प्रति वैर-भाव का त्याग, सब पर कृपा और दान—विद्वान् लोग इसी को शील कहते हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते,
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥ —भर्तृहरि

वाजूबन्द अथवा चन्द्रमा के समान उज्ज्वल हार मनुष्य को विभूषित नहीं करते, न स्नान से, न अनुराग से, न फूलों से और न सँवारे हुए केशों से ही मनुष्य सुभूषित होता है। संस्कार पूर्वक भली-भाँति धारण की गई वाणी ही मनुष्य को समलंकृत करती है। अन्य आभूषण तो टूट-फूट कर समाप्त हो जाते हैं वस्तुतः वाणीरूपी आभूषण ही सच्चा आभूषण हैं।

लज्जा और विनय ही भारतीय देवियों के आभूषण हैं।
—मुंशी प्रेमचन्द

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चाँदी, हीरा, माणिक, मोती, मूंगा आदि रत्नों से युक्त आभूषणों के धारण कराने से मनुष्य की आत्मा सुभूषित कभी नहीं हो सकती क्योंकि आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु भी सम्भव है। —महर्षि दयानन्द

आलस्य

सच जान जो हैं आलसी, निज हानि करते हैं सदा।
करते उन्हों का संग जो, वे भी दुःखी हों सर्वदा ॥
आलस्य को दे त्याग तू मन कर्म शिष्टाचार कर।
अभ्यास कर वैराग्य कर, निज आत्म का उद्धार कर ॥
—भोलेबाबा

कादर मन कहुँ एक अधारा।
दैव दैव आलसी पुकारा ॥ —तुलसीदास

मधुमक्षिका करती रहे हैं, रात दिन ही काम ज्यों।
मत दीर्घसूत्री बन कभी, कर तू निरन्तर काम त्यों ॥
तन्द्रा तथा आलस्य में मत खो समय को तू वृथा।
कर कार्य सारे नियम से रवि चन्द्र करते हैं यथा ॥
—भोलेबाबा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥ —भर्तृहरि

आलस्य ही मनुष्य के शरीर में रहने वाला सबसे बड़ा शत्रु है, उद्यम के समान मनुष्य का कोई बन्धु नहीं है जिसे मित्र बना कर मनुष्य कभी भी दुखी नहीं होता ।

An idler is a watch that wants both hands,
As useless if it goes as when it stands. — **Cowper**

आलसी उस घड़ी की भांति है जिसकी दोनों सुइयाँ नहीं हैं वह चलने पर भी उतनी ही व्यर्थ है जितनी खड़ी हुई ।

आशा

कबीरा जोगी, जगतगुरु जब तक मन नहीं आस ।
जब मन में आसा लगी, जग गुरु जोगी दास ॥ —कबीर

सत्या नः सन्त्वाशिषः । —यजुर्वेद

हमारी आशाएं सफल हों ।

आशाया ये दासस्ते दासाः सर्वलोकस्य ।
आशा येषां दासी तेषां दासायते लोकः ॥

जो लोग आशा के दास हैं उन्हें सब लोगों का दास बनना पड़ता है, परन्तु आशा जिनकी दासी है उसके सब लोग दास हो जाते हैं ।

आह

दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय ।
मुई खाल की सांस सों, लोह भसम ह्वै जाय ॥ —कबीर

ओ जालिम गरीब को मत सता गरीब रो देगा ।
सुनेगा उसका मालिक तो दोनों जहाँ से खो देगा ॥

इच्छा

हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पै दम निकले ।
बहुत निकले मेरे अरमाँ लेकिन फिर भी कम निकले ॥

जो दस बीस पचास भये सत,
होइ हजार तु लाख मँगैगी ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोटि अरब्ब खरब्ब असंख्य,
पृथिवीपति होन की चाह जगेगी ।।
स्वर्ग पाताल को राज करो,
तृस्ना आधिकी अति आग लगेगी ।
'सुन्दर' एक सन्तोष बिना सठ,
तेरी तो भूख कधी न भगैगी ।।

अतिहास

जो देखी हिस्टरी इस बात पर कामिल यकीं[1] आया ।
उसे जीना नहीं आया जिसे मरना नहीं आया ।।

—अकबर

History Histology,
Latin Etymology,
Botany Zoology,
Ram it in,
Cram it in,
Childrens' heads are hollow,
Bang it in,
Slang it in,
Still there is more to follow,

इतिहास, स्वास्थ्य-शास्त्र, रोमन भाषा, शब्द व्युत्पत्ति (निरुक्त) वनस्पति विज्ञान, प्राणिविज्ञान—इनको रटो और जबरदस्ती मस्तिष्क में ठूंसो फिर भी बच्चों के दिमाग पोले ही रहते हैं । इन सब के अध्ययन के पश्चात् भी कुछ और पढ़ना शेष रहता है ।

इन्द्रियां

इन्द्री द्वार झरोखा नाना ।
तहं तहं सुर बैठे करि थाना ।।
आवत देखहिं विषय बयारी ।
ते हठि देहिं कपाट उघारी ।।

—तुलसीदास

१. पूर्ण विश्वास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुरंगमातंगपतंगभृङ्गमीना हताः पञ्चभिरेव पञ्च ।
एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवने पञ्चभिरेव पञ्च ॥

हिरण गाने से, हाथी हस्तिनी के स्पर्श से, पतंग दीपक से, भ्रमर गन्ध से और मछलियां जीभ के स्वाद से मोहित होकर अपने प्राण खो देती हैं। फिर जिन के पांच इन्द्रिया हैं और जो सभी विषयों में आसक्त हैं, वे मृत्यु से कैसे बच सकते हैं।

ईश–भजन

जिह्वा तो तब ही भली, जपे हरि का नाम ।
नहीं तो काट निकालिये, मुख में भलो न चाम ॥

शरीरं सुरूपं तथा च कलत्रं,
यशश्चारुचित्रं धनं मेरुतुल्यम् ।
मनश्चेन्न लग्नं हरेरङ्घ्रिर्मध्ये,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

सुन्दर शरीर, रूपवती भार्या, यश, उत्तम चरित्र एवं अपार धन-सम्पत्ति आदि रहते हुए भी यदि भगवान् की भक्ति में मन नहीं लगा तो इन पदार्थों के रहने का कोई लाभ नहीं।

प्रभु-कीर्तन और कथा मखमल का बिछौना है, उस पर नींद न आयेगी तो और कहाँ आयेगी ? नाच-रंग कांटों की कँटीली और नुकुली जमीन है, उस पर नींद कहां ? —महर्षि दयानन्द

ईश-रक्षक

जाको राखे साइयाँ मार न सकि हैं कोय ।
बाल न बाँका करि सके जो जग वैरी होय ॥ —कबीर

तुलसी बिरवा बाग के सिंचत ही कुम्हलाय ।
प्रभु-भरोसे जो रहै पर्वत पर लहराय ॥

कितना अच्छा होता यदि आप विश्वास कर सकते कि भगवान् किसी रूप में हम सब के सदैव सन्निकट रहते हैं, स्वस्थ अवस्था की अपेक्षा रोग में तो और भी विशेषरूप से वे हमारे पास उपस्थित रहते हैं। —ब्रतस्बी लारेंस

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईश्वर

साहब मेरा एक है, दूजा कहा न जाय।
दूजा साहब जो कहूं, साहब खरा रिसाय॥ —कबीर

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति। —ऋग्वेद

एक ही ईश्वर को विद्वान् लोग भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया॥ —गीता

हे अर्जुन! यन्त्र पर आरूढ सब प्राणियों को अपनी माया से नचाता हुआ ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में निवास करता है।

जेह्न[1] में जो घिर गया लाइन्तहा[2] क्योंकर हुआ।
जो समझ में आ गया फिर वो खुदा क्योंकर हुआ॥ —अकबर

बिनु पद चलै सुने बिनु काना।
कर बिनु कर्म करै विधि नाना॥
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु वानी वक्ता बड़ जोगी॥
तनु बिन परस नयन बिनु देखा।
ग्रहै घ्रान बिनु वास अशेषा॥ —तुलसी

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता,
पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः।
स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता,
तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम्॥ —श्वेता०उप०

वह परमात्मा बिना पाँवों के शीघ्र गति करता है, बिना हाथों के झट से पकड़ लेता है, वह बिना आंखों के देखता है और बिना कानों के सुनता है। जानने योग्य जो कुछ भी है उसे वह जानता है, परन्तु उसे जानने वाला कोई नहीं, उसी को आदिम-महान्-पुरुष कहते हैं।

तू रूप है किरण में, सौन्दर्य है सुमन में।
तू प्राण है पवन में, तू विस्तार है गगन में॥

---

१. बुद्धि २. असीम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तू ज्ञान हिन्दुओं में, ईमान मुस्लिमों में ।
तू प्रेम क्रिश्चियन में, तू सत्य है सुजन में ।। —अज्ञात

माता के निस्वार्थ प्रेम में, प्रेममयी की माया में ।
बालक के कोमल अधरों पर, मधुर हास्य की छाया में ।।
पतिव्रता नारी के तन में, वृद्धों के लोलुप मन में ।
होनहार युवकों के निर्मल ब्रह्मचर्यमय यौवन में ।।
तृण की लघुता में गिरिवर की गर्वभरी गौरवता में ।
तेरी ही छवि का विकास है, रजनी की नीरवता में ।। —अज्ञात

कस्तूरी कुण्डल बसै, मृग ढूंढे बन माहिं ।
ऐसे घट में पीव है, दुनिया जानै नाहिं ।।

यह क्या कर कर रहे हो किधर जा रहे हो,
क्यों अन्धेरे में ठोकरें खा रहे हो ।
बनाया है स्वयं जिसको हाथों से अपने,
गज़ब है खुदा उसको बतला रहे हो ।।
खुदा के बाब[1] में यह गौर क्या है ?
अरे खुदा बस खुदा है और क्या है ? —अकबर

God is like a circle whose centre is every where but circumfrence nowhere. —**Saint Augustine**

ईश्वर एक ऐसा वृत्त है, जिसका केन्द्र तो सर्वत्र है, किन्तु वृत्त रेखा कहीं नहीं है ।

If God did not exist, it would be necessary to invent Him. —**Voltaire**

यदि ईश्वर नहीं है तो उसका आविष्कार करना होगा ।

मैं एक ऐसा मार्ग जानता हूँ जिस मार्ग पर चलने से ईश्वर के पास जल्दी पहुँचा जा सकता, है, वह मार्ग यह है कि तुम कभी किसी मनुष्य के पास से किसी वस्तु की इच्छा न करो और तुम्हारे पास से किसी वस्तु की कोई इच्छा करे, तब वैसी वस्तु को कभी तुम अपने पास न रहने दो ।

—**मनस्वी मारूफ गोरखी**

---

१. सम्बन्ध

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईश्वरार्पण

मेरा मुझ में कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझ को सौंपते क्या लागत है मोर।। —कबीर

मैं निश्चिन्त हो चुकी अर्पण कर तुझको तन मन जीवन।
हे नाविक ! ले चल मुझ को अब वहीं जहां तेरा मन।।

राजी हैं हम उसी में जिस में तेरी रजा है।
यहां यूं भी वाह वाह है और त्यूं भी वाह वाह है।।

पालेगा इशरतों[1] में तो एश से पलेंगे।
जिल्लत[2] में डाल देगा तो जिल्लत में जा रुलेंगे।।

पवित्र भोजन के बिना एकान्त में भी उत्तम सावना नहीं हो सकती और ईश्वरार्पण किये बिना कोई भी वस्तु पवित्र नहीं हो सकती।

—तपस्वी शहल तस्तरी

सच्चा बुद्धिमान् व्यक्ति वह है जो संसार के सब कामों को ईश्वर पर छोड़ देता है और हरि की इच्छा को ही अपना आदर्श बनाता है।

—मनस्वी फरीदुद्दीन

उत्तम व्यवहार

झगड़ा कबहुँ न कीजिये, सब संग रखिये प्रीति।
झगड़े में घर जात है, सत्य वचन परतीति।।

तुलसी या संसार में भांति-भांति के लोग।
सब सों हिल-मिल चालिये नदी नाव संयोग।।

या दुनियां में आय कै छाँडि देइ तू एंठ।
लेना होय सो लेई लै, उठी जात है पैंठ।।

The society of women is the foundation of good manners.

—Goethe

स्त्रियों की संगति उत्तम व्यवहार की नींव है।

---

१. सुख २. दुःख

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्साह

जो-जो भी कोशिश कर करके हिम्मत्त की पीग बढ़ाता है।
इस आलम[१] में सरदार बने, बढ़-चढ़ के शोभा पाता है।।

वह कौनसा उक़दा[२] है जो वा[३] हो नहीं सकता।
हिम्मत करे इंसान तो क्या हो नहीं सकता।।

गिरे सौ बार भी बिजली अगर किश्ते-तमन्ना[४] पर।
जो हिम्मतदार हैं मायूस[५] कब होते हैं हासिल[६] से।।

सिर शमा[७]-सा कटाइये पर दम न मारिये।
मंज़िल हजार दूर हो, हिम्मत न हारिये।।

खुद चूम लेती है कदम आके मन्जिल।
अगर चलने वाला हिम्मत न हारे।।

पड़ा रह आप अपनी पस्तीये-हिम्मत[८] से पस्ती[९] में।
रसाई[१०] तो तेरी ए खाक के पुतले खुदा तक है।।

कुतुव[११] अगर जगह से टले तो टल जाये।
हिमालय बाद[१२] की ठोकर से भी फिसल जाये।।
अगर च मिह्र[१३] भी जुगनू की दुम से जल जाये।
और आफताब[१४] भी कबले-उरूज[१५] ढल जाये।।
कभी न साहिबे-हिम्मत का हौसला टूटे।
कभी न भूल से उसकी जबीं[१६] पै बल आये।।

उत्साहो बलवानार्य नास्त्युत्साहात्परं बलम्।
सोत्साहस्य हि लोकेषु न किञ्चिदपि दुर्लभम्।। —महर्षि वाल्मीकि

हे आर्य ! उत्साह ही बलवान् होता है, उत्साह से बढ़कर दूसरा कोई बल नही है। उत्साही मनुष्य के लिये संसार में कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं है।

निरुत्साहं निरानन्दं निर्वीर्यमरिनन्दनम्।
मा स्म सीमन्तिनी काचित् जनयेत्पुत्रमीदृशम्।। —महर्षि व्यास

---

१. संसार २. कठिन समस्या ३. सुलझना ४. इच्छाओं की खेती ५. निराश ६. प्राप्तव्य ७. दीपक ८. हतोत्साह ९. नीचे १०. पहुँच ११. ध्रुवतारा १२. वायु १३. सूर्य १४. सूर्य १५. उत्कर्ष से पूर्व १६. मस्तक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोई भी माता ऐसे पुत्र को जन्म न दे जो उत्साह तथा आनन्द से हीन हो, जो निर्बल एवं शत्रुओं को प्रसन्न करने वाला हो।

The worst bankrupt in the world is the man who has lost enthusiasm. —**Arnold**

संसार में सबसे खराब दिवालिया वह है जिसने अपना उत्साह खो दिया है।

उपकार

यों रहीम सुख होत है उपकारी के अङ्ग।
बांटन वारे के लगै ज्यों मेंहदी का रङ्ग॥ —रहीम

सीख लो जलधर से उपकार बन्धुओ।
जो समुद्र से लिया हम पै ही बरसा गया॥

तुलसी या संसार में, पांच रतन हैं सार।
सत्सङ्गति और हरि भजन, दया, धर्म, उपकार॥ —तुलसी

मिला जन्म उत्तम तुझे, कर ले कुछ उपकार।
समय न यह फिर मिल सके, जीता दाव न हार॥

अधिकारपदं प्राप्य नोपकारं करोति यः।
अकारो लोपमात्रेण ककार द्वित्वतां व्रजेत्॥

जो अधिकार पद को प्राप्त करके भी उपकार नहीं करता उसके जीवन को धिक्कार है।

Men resemble the gods in nothing so much as in doing good to their fellow creatures. —**Cicero**

मनुष्य मनुष्य के साथ भलाई करके ही अपने आपको देव-तुल्य बना सकते हैं।

उपदेश

पर उपदेश कुशल बहुतेरे।
जो आचरहिं ते नर न घनेरे॥ —तुलसीदास

सीख वा को दीजिये जाको सीख सुहाय।
सीख न दीजै बांदरा घर बया को जाय॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Give every man thine year, but few thy voice.

—**Shakespeare**

प्रत्येक का उपदेश सुन लो परन्तु अपना उपदेश कुछ ही व्यक्तियों को दो।

An ounce of practice is better than hundred tons of speech.

लम्बे-चौड़े उपदेश की अपेक्षा थोड़ा-सा आचरण अधिक श्रेयस्कर है।

कनक

कनक[1]-कनक[2] ते सौ गुणी मादकता अधिकाय।
उहि खाये बौराय जग इह पाये बौराय॥ —बिहारी

चलो चलो सब कोई कहै, पहुँचे बिरला कोय।
एक कनक और कामिनी, दुर्गम घाटी दोय॥

तुलसी या संसार में, कौन भयो समरत्थ।
इक कंचन इक कुचन पर, कौन न चलायो हत्थ[3]॥ —तुलसी

As the touch-stone tries the gold so gold tries man.

जिस प्रकार कसौटी सोने को परखती है, उसी प्रकार सोना मनुष्य को परखता है। —चिलो

कर्म

जब तुम आये जगत में, जग हँसा तुम रोय।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हंसो जग रोय॥

कथनी मीठी खाँड-सी करनी विष की लोय।
कथनी तज करनी करे विष से अमृत होय॥ —कबीर

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत् समाः। —यजुर्वेद

मनुष्य कर्म करता हुआ ही सौ वर्ष जीने की इच्छा करे।

Trust no future, however pleasant,
Let the dead past bury its dead,
Act-act in the living present,
Heart within and God over head. —**Longfellow**

---

१. धतूरा २. सोना ३. महर्षि दयानन्द ऐसे ही समर्थ थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भविष्य चाहे कितना ही सुन्दर हो उस पर विश्वास मत करो, भूतकाल की भी चिन्ता न करो, जो कुछ करना है उसे अपने पर और ईश्वर पर विश्वास रख कर वर्तमान में करो।

Like a star,
That maketh not haste,
That taketh not rest,
Be each one fulfilling
His God-given hest. —Carlyle

एक नक्षत्र की भाँति जो न तो जल्दी करता है और न ही विश्राम लेता है, प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर-प्रदत्त आज्ञाओं का पालन करते रहना चाहिये।

Actions speak louder than words.

कर्मों की ध्वनि शब्दों से ऊंची होती है।

कर्म-फल

तुलसी काया खेत है, मनसा भयो किसान।
पाप पुण्य दो बीज हैं, बुवै सो लुनै किसान॥ —तुलसी

जो औरों को दुःख पहुँचाते, सुख से न उन्हें बसते देखा।
जो औरों का जी तड़पाते, उनको न कभी हंसते देखा॥

कर्म प्रधान बिस्व करि राखा।
जो जस करइ सो तस फलु चाखा॥ —तुलसी

दुःख दोगे दुःख मिलेगा, सुख दोगे सुख मिलेगा।
मारोगे तुम किसी को तो ग़म पड़ेगा सहना॥

काहु न कोउ सुख-दुःख कर दाता।
निज कृत कर्म भोग सब भ्राता॥ —तुलसी

करता था तो क्यों किया अब करि क्यों पछताय।
बोया पेड़ बबूल का आम कहाँ ते खाय॥

करै जो कर्म पाव फल सोई।
निगम नीति अस कह सब कोई॥ —तुलसी

शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःखं पापेन कर्मणा।
कृतं फलति सर्वत्र नाकृतं भुज्यते क्वचित्॥ —वेदव्यास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शुभ कर्म करने से सुख और पाप कर्म करने से दुःख मिलता है। अपना किया हुआ कर्म ही सर्वत्र फल देता है। बिना किये हुए कर्म का फल कहीं नहीं भोगा जाता।

पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति ॥ —अथर्ववेद

पकाने वाले को पका हुआ भोजन ही आ मिलता है।

Though the mills of God grind slowly,
Yet they grind exceedingly small,
Though He stands and waits with patience,
With exactness grinds He all.

यद्यपि ईश्वर की मिलें (न्याय नियम) धीरे-धीरे पीसती हैं परन्तु वे बहुत बारीक पीसती हैं। यद्यपि ईश्वर धैर्य-पूर्वक प्रतीक्षा करता है परन्तु वह पूर्णरूपेण रगड़ डालता है।

कर्म-वीर

सामने पाकर विपद् की आंधियाँ,
वीर मुखड़ा नेक कुम्हलाता नहीं।
देखकर आती उमड़ती दुःख घटा,
आँख में आँसू उमड़ आता नहीं॥

—अयोध्यासिंह 'हरि औध'

ठीकरी को वो बना देते हैं सोने की डली,
रेग को करके दिखा देते हैं वे सुन्दर कली,
वे बबूलों को लगा देते हैं चम्पे की कली,
काक को भी वे सिखा देते हैं कोकिल काकली,
ऊसरों में हैं खिला देते अनूठे वे कमल,
वे लगा देते हैं उकठे काठ में भी फूल-फल॥

—अयोध्यासिंह 'हरि औध'

उलुल अजमाने-आला जब करने पै आते हैं।
समुद्र चीरते हैं कोह से दरिया बहाते हैं॥

कवि

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिये।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिये॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान ।
उमड़कर आँखों से चुपचाप,
बही होगी कविता अनजान ।। —पन्त

काम-क्रोध-लोभ

तात तीन अति प्रबल खल, काम, क्रोध और लोभ ।
मुनि विज्ञान-निधान मन, करहिं निमिष महुं छोभ ।। —तुलसी
काम-क्रोध मद लोभ सब, प्रबल मोह की धार ।
तिनमह अति दारुण दुःखद, माया रूपी नार ।। —तुलसी
काम क्रोध मद लोभ की, जब लग घट में खान ।
तब लगि पण्डित मूर्ख हूं, दोनों एक समान ।।
एक भरोसा आस इक, हरि भजे दिन रात ।
काम क्रोध और लोभ मद, पास न उसके आत ।।
कामी क्रोधी लालची, इन तें भक्ति न होय ।
भक्ति करै कोई सूरमा, जाति बरन कुल खोय ।। —कबीर
जहाँ काम तहँ नाम नहिं जहाँ नाम नहि काम ।
दोनों कबहूं ना मिलैं रवि-रजनी इक ठाम।। —कबीर
मोह न अंध कीन्ह केहि केहि ।
को जग काम नचाव न जेहि ।। —तुलसी
दिवा पश्यति नोलूको, रात्रौ काको न पश्यति ।
अपूर्वः को ऽपि कामान्धो दिवा नक्तन्न पश्यति ।।

उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता, कौआ को रात्रि में नहीं दीखता, परन्तु कामान्ध को न दिन में दिखाई देता है न रात्रि में ।

कामातुराणां न भयं न लज्जा ।
कामी पुरुषों को न किसी का भय होता है और न किसी की लज्जा ।

The worst slave is he whom passions rule.
वह निकृष्टतम दास है जिस पर काम शासन करता है ।

क्रोध करना छोड़ दो, यह क्रोध दुर्गुण खान है ।
पतन का है मार्ग फिर होता नहीं उत्थान है ।। —बुद्धमलजी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहजो क्रोधी अति बुरो, उलटी समझे बात ।
सब ही सो ऐंठो रहै, करे वचन की घात ।। —सहजोबाई

क्रोध हरै सुख-शांति को अन्तर प्रकटै आग ।
नैन बैन मुख बीगडे, पड़े सील पै दाग ।।

यत् क्रोधनो यजति यच्च ददाति नित्यं,
यद्वा तपस्तपति यच्च जुहोति तस्य ।
प्राप्नोति नैव किमपीह फलं हि लोके,
मोघं फलं भवति तस्य ही कोपनस्य ।। —वामन पुराण

क्रोधी पुरुष जो कुछ यज्ञ करता है, जो दान देता है, जो तप करता है और जो होम करता है उसका उसे इस लोक में कोई फल नहीं मिलता। क्रोधी मनुष्य के सभी फल वृथा हो जाते हैं ।

Anger blows out the lamp of the mind. —**Ingersoll**

क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है ।

क्रोध इञ्जन हैं, अविवेक और अज्ञान उसके पहिये हैं । —अज्ञात

यह लालच इज्जत खोता है नहीं इज्जत लालच मारे की ।
यह लोभ चमक खो देता है हर एक चमकते तारे की ।।

लोभ न कबहूँ कीजिये, या में विपति अपार ।
लोभी को विस्वास नहीं, करे कोऊ संसार ।।

लोभ सरिस अवगुण नहीं, तप नहीं सत्य समान ।
तीर्थ मन सुद्धि सम, विद्या सम धन आन ।।

लोभ मूल है दुःख को, लोभ पाप को बाप ।
लोभ फंसे जो मूढ जन, सहैं सदा सन्ताप ।।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ।। —गीता

कामः क्रोध और लोभ—ये तीनों नरक के द्वार हैं । ये तीनों मनुष्य को नष्ट कर देते हैं इसलिये इन तीनों को छोड़ देना चाहिए ।

कुमति

जहां सुमति तहँ सम्पत्ति नाना ।
जहां कुमति तहँ विपति निधाना ।। —तुलसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी । —तुलसी

संगति सुमति न पावही, परे कुमति के धंध ।
राखेहु मेलि कपूर में, हींग न होत सुगन्ध ।। —बिहारी

कुशासन

जासु राजु प्रिय प्रजा दुखारी ।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी ।। —तुलसी

Bad laws are the worst sort of tyranny. —Burke

बुरे नियम सब से निकृष्ट प्रकार का कुशासन हैं ।

कुसंग

दुष्ट न छोड़े दुष्टता, कैसे हू सुख देत ।
धोये हूँ सौ बेर के, काजर होत न सेत ।। —वृन्द

हानि कुसंग सुसंगति लाहू ।
लोकहु वेद विदित सब काहू ।। —तुलसी

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ।। —रहीम

दाग जो लागा नील का, सौ मन साबुन धोय ।
कोटि जतन परबोधिये कागा हंस न होय ।। —कबीर

बरु भल बास नरक कर ताता ।
दुष्ट संग जनि देइ विधाता ।। —तुलसी

बसि कुसंग चाहत कुसल, यह रहीम अफसोस ।
महिमा घटी समुद्र की, रावन बसा परोस ।। —रहीम

को न कुसंगति पाय नसाई ।
रहै न नीच मते चतुराई ।। —तुलसी

काजल की कोठरी में कैसो हू सुस्यानो जात ।
एक रेख काजल की लागे हू पै लागे है ।।

होत सुसंगति सहज सुख, दुःख कुसंग के थान ।
गन्धी और लुहार की, देखो बैठि दुकान ।।

आप अकारज आपनो, करत कुसंगति साथ ।
पायं कुल्हाड़ा देत है, मूरख अपने हाथ ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि ।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझहि सब ताहि ।।

कुसमय

तुलसी पावस के समय, धरी कोकिला मौन।
अब तो दादुर बोलि हैं, हमें पूछि हैं कौन ।। —तुलसी

कौन होता है बुरे वक्त की हालत का शरीक।
मरते दम देखा है कि आँख भी फिर जाती है ।।

रहिमन चुप ह्वै बैठिये देख दिनन को फेर ।
जब नीके दिन आइ हैं, बनत न लागि है बेर ।। —रहीम

इक दिन ऐसा होयगा कोऊ काहू का नांहि ।
घर की नारी का कहैं, तन की नारि नांहि ।। कबीर

क्षमा

क्षमा शोभती उस भुजंग को,
जिसके पास गरल हो ।
उसको क्या; जो दन्तहीन,
विषरहित, विनीत सरल हो ?—रामधारी सिंह दिनकर

जहां दया तहं धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप ।। —कबीर

खोद-खाद धरती सहै कूट-काट बन राय ।
कुटिल वचन साधू सहे, और से सहा न जाय ।। —कबीर

क्षमा खड्ग लीने रहै, खल को कहा बसाय।
अग्नि परी तृन रहित थल, आपहि ते बुझि जाय ।। —वृन्द

क्षमा बलमशक्तानां शक्तानां भूषणं क्षमा ।
क्षमावशीकृतिर्लोके क्षमया किं न सिध्यति ।।

क्षमा निर्बलों का बल है, बलवानों का आभूषण है, क्षमा सबको अपने वश में करने वाली है, क्षमा से क्या सिद्ध नहीं हो सकता ।

Forgiveness adorns a soldier.
क्षमा सैनिक को सुभूषित करती है। —महात्मा गांधी

To err is human, to forgive divine. —Pope

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गलती करना मानवीय है और क्षमा करना देवत्व ।

क्षुधा

खाने तो बहुत मुय्यस्सर आये हैं हमें,
जो देखे चखके दिल से भाये हैं हमें ।
पर सबसे लजीज थे वो खाने ऐ भूख,
जो तूने कभी कभी खिलाये हैं हमें ॥ —हाली

त्यजेत्क्षुधार्तो महिलां सपुत्रां,
खादेत्क्षुधार्ता भुजगी स्वमण्डम् ।
बुभुक्षितः किन्न करोति पापं,
क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति ॥

भूख से पीड़ित मनुष्य पुत्रों सहित अपनी भार्या को छोड़ देता है, सर्पिणी भूख से पीड़ित होकर अपने अण्डों को खा जाती है, कौनसा पाप है जिसे भूखा नहीं कर डालता, भूखा व्यक्ति दयाहीन हो जाता है ।

गर्व

कबिरा गर्व न कीजिये, कबहुं न हंसिये कोय ।
अबहूं नाव समुद्र में का जाने का होय ॥ —कबीर

धन और यौवन का गर्व कबहूं करिए नांहि ।
देखत ही मिट जात है ज्यों बादर की छांहि ॥

कबिरा गर्व न कीजिये काल गहे कर केस ।
न जाने कित मारि है, क्या घर क्या परदेश ॥

चन्द रोजा जिन्दगी पर किस लिये मगरूर[1] है ।
आइना[2] है जिन्दगी ठोकर लगी तो चूर है ॥

The proud of learning is the greatest ignorance. —**Taylor**

ज्ञान का गर्व करना परले सिरे की मूर्खता है ।

जिसने गर्व किया उसका अवश्य पतन हुआ । —**महर्षि दयानन्द**

गाँठ

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय ।
टूटे से फिर ना मिलं, मिलँ गाँठ परिजाय ॥

---

१. अभिमान २. शीशा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जहां गाँठ तहँ रस नहीं, यह जानत सब कोय।
मड़ये तर की गाँठ में, गांठि-गांठि रस होय ।। —रहीम

भरी बात में हो बड़ी ही मिठाई,
लगी किन्तु होवे कलेजे में काई।
दुई की झलक जो दृगों में रंग लाई,
तनिक स्वार्थ बू प्यार में हो समाई।
भला है न तो ब्याह मण्डप में जाना,
भले लोगों में नेह गांठे गठाना ।।

गाय

सोना चाँदी और रत्न मणि,
सब धन है केवल नाम का।
यदि है कोई धन जगत में,
गोधन है बस काम का ।।

गोऽस्तु मात्रा न विद्यते। —यजुर्वेद

संसार में गो की तुलना नहीं की जा सकती।

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः ध्सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ।।

गौ, ब्राह्मण, वेद, पतिव्रता स्त्री, सत्यवादी, निर्लोभी पुरुष तथा दानशील धनी—इन सातों ने पृथ्वी को धारण कर रक्खा है।

Where the cow is kept and cared for, civilization advances, lands grow richer, homes grow better, debts grow fewer. The cow is one of the greatest blessings to the human race.

जहां गोपालन एवं गोसेवा होती है, वहां सभ्यता का विकास होता है, पृथिवी शस्यश्यामला—हरी-भरी और उपजाऊ बनती है, घर समृद्ध और सम्पन्न होते हैं तथा ऋण कम हो जाता है। गाय मानवीय जगत् के लिये ईश्वर की बहुत बड़ी देन है। —राल्फ ए. हेन

गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है। —महर्षि-दयानन्द सरस्वती

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरा सारा प्रयत्न गोवध रोकने के लिये है। जो गाय के बचाने के लिये प्राण होम देने को तैयार नहीं, वह हिन्दू नहीं। —महात्मा गांधी

गाली

आवत गाली एक है, उलटत होत अनेक ।
कहै कबीर न उलटिये वाहि एक की एक ।। —कबीर

लगे मुँह भी चिढ़ाने देते देते गालियां साहब ।
जबाँ बिगड़ी तो बिगड़ी थी खबर लीजे दहन[1] बिगड़ा ।।

ददतु ददतु गालिं गालिमन्तो भवन्तो,
वयमिह तदभावान्नैव दातुं समर्था: ।
जगति किल प्रसिद्धं दीयते विद्यमानं,
नहि शशकविषाणं कोऽपि कस्मै ददाति ।।

आप गाली दीजिये क्योंकि आप के पास गालियां हैं। हमारे पास नहीं हैं इस लिये हम नहीं दे सकते। संसार में प्रसिद्ध है कि जिसके पास जो वस्तु होती है वह उसे ही देता है कोई किसी को खरगोश का सींग नहीं देता।

गुण

गुन के ग्राहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय ।।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय ।। —गिरधर

जहां रहै गुनवन्त नर ताकी शोभा होत ।
जहां धरै दीपक तहाँ निहचै करै उदोत ।।

न हों गुण तो क्या बनावट से काम ।
न दो बूढ़ी घोड़ी को जर्री[2] लगाम ।।

गुणी

बड़े बड़ाई न करैं, बड़े न बोलें बोल ।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल ।।

घर

बच्चे बच्चों मे खेलें हो स्नेह भरा उनके मन मे,
गृह लक्ष्मी हों मुदित, भरा हो मंगल उनके जीवन में ।

---

१. मुख २. सुनहरी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बन्धु वर्ग हों सम्मानित, हो सेवक सुखी अनुचर प्रणत,
हर्षयुक्त हो स्वामी का मन, तो स्पृहणीय हो क्यों न घर ।।
लक्ष्मी का निवास सुखमय हो परिवार ।
इस फुलवारी में बहे सदा प्रेम की धार ।।
यत्र नास्ति दधिमन्थनघोषो,
यत्र नो लघुलघूनि शिशूनि ।
यत्र नास्ति गुरुगौरव पूजा,
तानि किं बत गृहाणि वनानि ।।

जहां प्रातःकाल दही बिलोने का घोष सुनाई नहीं देता, जहां छोटे-छोटे बच्चों की किलकारियां सुनाई नहीं देतीं, जहां वृद्धजनों का आदर-सम्मान नहीं होता उसे घर कहें या वन ।

Every home where love abides and friendship is a guest is surely home, and home, sweet home for there the heart can rest. **—Henry Van Dyke**

वह घर जिसमें प्रेम तथा मित्रता का निवास है, वही वास्तव में घर है, वही प्यारा घर है क्योंकि वहीं मन को शान्ति प्राप्त हो सकती है ।

To Adam paradise was home and to the good among his desendents home is paradise. **—Hare**

आदम ने तो स्वर्ग में अपना घर बनाया था परन्तु उसकी उत्तम सन्तान अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्य घर में स्वर्ग बनाते हैं ।

चरित्र

मणिमुक्ता चाहूं नहीं, नहीं चाहूँ निर्वाण ।
मैं चाहूँ सच्चरित्र युत जीवन शुद्ध महान् ।।
परिमाग्ने दुश्चरिताद्बाधस्वा मा सुचरिते भज ।
उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृताँ अनु ।। —यजुर्वेद

हे परमपिता परमात्मन् ! आप मुझे दुराचार से हटाकर उत्तम चरित्र में स्थापित कीजिये । मैं जीवनमुक्त महापुरुषों का अनुगामी होकर दीर्घायु से युक्त उत्कृष्ट और शुभ जीवन से युक्त होकर उतम मार्ग में स्थिर रहूँ ।

Be a man of action and high character. —Napolean

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्मशील एवं उच्च चरित्र से युक्त मनुष्य बनो।

When wealth is lost nothing is lost,
When health is lost something is lost,
When character is lost everything is lost.

धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, जब चरित्र बिगड़ा तो सब कुछ गया।

चिन्ता

चिन्ता ज्वाल शरीर में बिन दावा लग जाय।
प्रकट धुआँ नहीं देत है, उर धुआँ भर जाय॥
मुर्दे को भी देत है, कपड़ा पानी आग।
जीवित नर चिन्ता करे ताको बड़ो अभाग॥
कबिरा क्या मैं चिन्त हूं, मन चिन्ते क्या होय।
मेरी चिन्ता हरि करें, चिन्ता मोहि न कोय॥
चाह गई चिन्ता मिटी मनवा वे परवाह।
जिन को कुछ न चाहिये, सो शाहन के शाह॥
चिन्ता सांपनि काहि न खाया।
को जग जाहि न व्यापी माया॥
चिन्ता जिसको कहते हैं वह मुर्दे को जलाती है।
बड़ी है इसलिये चिन्ता कि जीते को जलाती है॥
चिन्ताचिताद्वयोर्मध्ये दृश्यते महदन्तरम्।
सजीवं दहति चिन्ता, चिता दहति निर्जीवम्॥

चिन्ता और चिता दोनों में महान् अन्तर है। चिता तो निर्जीव को जलाती है परन्तु चिन्ता जीवित मनुष्य को ही जला देती है।

Businessmen who do not know how to fight worry die young.

व्यवसायी पुरुष जिनको यह ज्ञान नहीं कि चिन्ता से कैसे दूर रहना चाहिये, शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होते हैं। —डा० केरेल

जैसे ईंधन डालने से अग्नि भड़कती है ऐसे ही चिन्ता करने से चिन्ता बढ़ती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चेतो

बहुत गई थोड़ी रही नारायण अब चेत ।
काल चिड़ैया चुग रही निशदिन आयु खेत ।।
बहुत गई थोड़ी है बाकी अब तो अलख जगा बाबा ।
थोड़े दिन का खेल तमाशा क्यों आसक्त हुआ बाबा ।।
नारायण सुख भोग में तू लम्पट दिन रैन ।
अन्त समय आयो निकट देख खोल के नैन ।।
गाफिल[1] तुझे घड़ियाल यह देता है मुनादी ।
गरदूं[2] ने घड़ी उम्र की इक और घटादी ।।
गफलत की नींद छोड़ो घण्टा जगा रहा है ।
अपनी यह हरकतों से तुमको सिखा रहा है ।।
फैल गई बालों में सफेदी, चौंक जरा करवट तो बदल ।
शाम को गाफिल सोने वाले देख तो कितनी रात रही ।।
जवानी में अदम[3] के वास्ते सामान कर गाफिल ।
मुसाफिर शब[4] से उठते हैं जो जाना दूर होता है ।।

भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वप्नम् । —यजुर्वेद

जागना ऐश्वर्य प्रद है, सोना—आलस्य दरिद्रता का मूल है ।

इच्छन्ति देवा सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति । —ऋग्वेद

देव पुरुषार्थी को चाहते हैं वे सोने वाले से प्रेम नहीं करते ।

जननी

जननी जने तो आस जने कै दाता कै शूर ।
नहीं तो रहिये बांझ ही मति गंवावे नूर ।।

A mother is a mother still,
The holiest thing alive. —Coleridge

जननी जननी ही है, जीवित वस्तुओं में जो सबसे अधिक पवित्र है ।

जवानी

किस काम की नदी वो जिसमें नहीं रवानी ।
जब जोश ही नहीं है तो किस काम की जवानी ।।

---

१. असावधान, वेखबर २. आकाश ३. परलोक ४. रात्रि ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

द्वार बलि का खोल चल भूडोल कर दे,
एक हिमगिरि एक सिर का मोल कर दे।
मसल कर अपने इरादों सी उठाकर,
दो हथेली हैं कि पृथिवी गोल कर दे।
रक्त है? या है नसों में क्षुद्र पानी?
जांच कर तू सीस दे देकर जवानी ।।—माखनलाल चतुर्वेदी

जो चट्टानों को चटका दे, रवानी उसको कहते हैं,
जो दिल पर नक्श हो जाये, कहानी उसको कहते हैं।
नहीं मालूम है तुमको, करिश्मा कैसा होता है,
उलट दे जो हिमालय को जवानी उसको कहते हैं।

—चन्द्रकान्त वर्मा

हर जलने का इतिहास एक, हर बुझना एक कहानी है,
ढलने का नाम बुढ़ापा है, चढ़ने का नाम जवानी है।
जीवन में गिरकर जो उठने का नाम न ले वह मुर्दा है,
गिरना उठना, उठकर चलना जीवन की यही निशानी है।

—हनुमन्त नायडू

रहती है कब बहारे जवानी तमाम उम्र ।
मानिन्द[1] बूये-गुल,[2] इधर आई उधर गई ।।
सदा न फूलै तोरई, सदा न सावन होय।
सदा न यौवन थिर रहे, सदा न जीवे कोय ।।

जिन्दगी

डूब कर बहरे-हवादिस[3] में उभर आने का नाम ।
जिन्दगी है पं-ब्र-रै मौजों[4] से टकराने का नाम[5] ।।
तू ऐसी जिन्दगी जीना कि वे तारे सहम जायें।
कि सूरज देखने को एक क्षण चकित थम जाये ।।

---

१. भांति २. पुष्प की सुगन्ध ३. आपत्तियों का समुद्र ४. तरंग
५. यह भी कोई जीवन है—

दिन कटा फरियाद से रात ज़ारी से कटी ।
उम्र कटने को कटी पर क्या ही ख्वारी से कटी ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करें तेरी गुलामी भोग ये दुनिया में जितने हैं।
कि तेरे पास लेके भोग सृष्टा वह स्वयं आये ।।
वह ऊषा मुस्करा देखे, वह सन्ध्या अचकचा देखे।
हिमालय भी जरा झुक कर, खिसक यह दो कदम आये।।
बड़ा साम्राज्य ईश्वर का, मनुज युवराज है उसमें।
चले तेरी सवारी पाँव में यह प्रकृति नम जाये ।। –सत्यभूषण योगी

जिन्दगी का राज[1] वह पा सकता नहीं ।
रञ्ज[2] में भी जो खुशी के गीत गा सकता नहीं ।।
हमेशा के लिये रहना नहीं इस दारे-फानी[3] में।
कुछ अच्छे काम कर लो चार दिन की जिन्दगानी में ।।
जिन्दगी इन्सां की है मानिन्दे मुर्गे[4] खुशनुमा[5] ।।
शाख पर बैठा कोई दम चहचहाया उड़ गया ।।

—इकबाल

Give up the half living life. Live a complete, virtuous and beautiful life. —**Goethe**

मुर्दा दिली को छोड़ दो। पूर्ण, सदाचारयुक्त एवं सुन्दर जीवन व्यतीत करो।

जिन्दगी जिन्दा दिली का नाम है।
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं।।
जिन्दगी है कशमकश और मौत है कामिल सकून[6]।
शहर में है शोरोगुल और मकबरा[7] खामोश है।।

जिज्ञासु

जिन ढूंढा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ ।
मैं बपुरा बूड़न डरा रहा किनारे बैठ ।। —कबीर

जिह्वा

रहिमन जिह्वा बावरी कह गई सरग पाताल ।
आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल ।। —रहीम

१. रहस्य २. दुःख ३. नाशवान संसार ४. पक्षी ५. सुन्दर ६. पूर्ण शान्ति ७. वह कब्र जिस पर गुम्बद हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रसना के जीते बिना, कोई न जितेन्द्रिय होय।
रसनेन्द्रिय जित जो पुरुष, सर्वेन्द्रिय जित सोय॥

If you can conquer your tongue only, you are sure to conquer your whole body and mind at ease.

यदि तुम केवल जिह्वा को वश में कर लो तो तुम्हारे मन और शरीर अनायास ही वश में हो जायेंगे।

जीवन और मृत्यु

न जन्म कुछ न मृत्यु कुछ बस इतनी सिर्फ बात है।
किसी की आँख खुल गई किसी को नींद आ गई॥ —नीरज

जिन्दगी क्या है अनासिर[1] में जुहूरे-तर्तीब[2]।
मौत क्या है इन्ही अज्ज़ा[3] का परेशां[4] होना॥
—पं० बृज नारायण

मरना भला है उसका जो अपने लिये जीये।
जीता है वो, जो मर गया इन्सान के लिये॥
हक[5] नहीं जीने का उसको जिसका चेहरा जर्द है।
खुदकुशी है फर्ज उस पर खून जिसका सर्द है॥
हंस के दुनिया में मरा कोई, कोई रोके मरा।
मौत बस अच्छी उसकी है, जो कुछ होके मरा॥
तुम हो प्रलय सृजन के कर्ता, सुख दुःख तो होते रहते हैं।
हंसते हंसते बढ़ते जाओ इसको ही जीवन कहते है॥

Life is a flower of which love is the honey.
—Victor Hugo

जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसका मधु।

A useless life in an early death. —Goethe

व्यर्थ–जीवन एक शीघ्र-प्राप्त मृत्यु है।

जीवन-व्यर्थ

बता ए खाक के पुतले कि दुनियां में किया क्या है?
बता कै दाँत हैं मुंह में तेरे खाया-पिया क्या है?

---

१. पञ्चभूत २. क्रम का प्रकट होना ३. टुकड़ा, यहाँ पञ्चभूतों से तात्पर्य है ४. अस्त-व्यस्त होना ५. अधिकार ६. आत्महत्या।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बता खैरात[1] क्या की राह-मौला में दिया क्या है ?
यहाँ से आकबत[2] के वास्ते तोषा[3] लिया क्या है ?
दुआएं ली कभी ठण्डा किया दिल दर्दमन्दों का ?
बुरे हालों में तू शामिल हुआ मोहताजमन्दों का ?

जुआ

लकड़ी का जुआ अवलोकत ही,
चित्त में नित बैल डराया करे ।
जिसके सिर छोटा सा कीड़ा पड़े,
वह भी नित ही खुजलाया करे ।।
दुखदायक ऐसा है नाम जुआ,
परमेश्वर यासों बचाया करे ।
बुद्धि है जिसके वह सोचे सही,
नहीं खेल के धर्म गंवाया करे ।।

अक्षैर्मा दीव्यः । —ऋग्वेद

जुआ मत खेल ।

द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्टं वैरकरं महत् ।
तस्माद्द्यूतं न सेवेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान् ।। —मनु०

जुआ पहले कल्पों में भी अत्यधिक वैर बढ़ाने वाला देखा गया है अतः बुद्धिमान् को चाहिये कि मन बहलाने के लिये भी जुआ न खेले ।

Gambling is the child of avarice, the brother of irriquity and the father of mischief. —Washington

जुआ लोभ का पुत्र, दुराचार का भाई और बुराइयों का पिता है ।

ज्ञान महिमा

जाति न पूछयो साधु की पूछ लीजिये ज्ञान ।
मोल करो तलवार का पड़ा रहने दो म्यान ।।
सच्चे आतम ज्ञान बिन दुःख नहीं कभी नसाय ।
कोटि यतन करते रहो, तम बिन दीप न जाय ।।

---

१. दान २. परलोक ३. यात्रा का सामान ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जब ही ज्ञान हिरदे बसा, मया पाप का नास ।
जिमि चिंगारी आग की पड़ी पुराने घास ॥
नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते । —गीता

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र और कुछ नहीं है ।

Knowledge is the wing where with we fly to heaven.

ज्ञान वह पंख है जिसके द्वारा हम आकाश की ओर उड़ते हैं ।

ज्ञानी

देह घरे का दण्ड है, सब काहू को होय ।
ज्ञानी भुगते ज्ञान से, मूरख काटे रोय ॥
माता पुत्री बहन सम, जो देखे पर नार ।
सच्चा ज्ञानी वही नर, करे धर्म से प्यार ॥
जिमि जल भीतर पद्म है, जल में डूबत नाय ।
ज्ञानी जग में रहत भी लिप्तमान हो नाय ॥
कटु वचन के सुनत ही जिसे न आवे क्रोध ।
सच्चा ज्ञानी वो ही नर, हुआ उसी को बोध ॥

टका

टका करे कुलहूल, टका मिरदंग बजावे ।
टका चढ़ावे सुखपाल, टका सिर छत्र धरावे ॥
टका माय और बाप, टका मयँन का भैया ।
टका सास और ससुर, टका सिर लाड़ लड़ैया ॥
अब एक टके बिन टकटकाहत लगाय रात दिन ।
बैताल कहै विक्रम सुनो धिक् जीवन एक टके बिन ॥
टका धर्मष्टका कर्म टका हि परमं पदम् ।
यस्य गृहे टका नास्ति हा टका टकटकायते ॥

टका ही धर्म है, टका ही कर्म है, टका ही परमपद है, जिसके घर में टका नहीं है वह हा टका ! हा टका ! करता हुआ टकटकाता रहता है ।

तीर्थ

हम जानत तीरथ बड़े, तीरथ हरि की आस ।
जिनके हिरिदै हरि बसै, कोटि तीरथ तिन पास ॥ —मलूकदास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्मा नदीसंयमपुण्यतीर्था,
सत्योदका शीलतटा दयोर्मिः ।
तत्राभिषेकं कुरु पाण्डुपुत्र !
न वारिणा शुध्यति चान्तरात्मा ।। —महाभारत

हे पाण्डुपुत्र ! आत्मारूपी नदी संयम रूपी पवित्र तीर्थ वाली है। उसमें सत्यरूपी जल भरा हुआ है। शील उसका तट है और दया तरंगें हैं। उसी में स्नान करो। जल के द्वारा अन्तरात्मा की शुद्धि नहीं हो सकती।

सत्यं तीर्थं क्षमातीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहः ।
सर्वभूतदयातीर्थं तीर्थानां सत्यवादिता ।
ज्ञानतीर्थं तपस्तीर्थं कथितं तीर्थसप्तकम् ।। —स्कन्द पुराण

तीर्थों में सत्य, क्षमा, इन्द्रिय, निग्रह, सब प्राणियों पर दयासत्यवादिता, ज्ञान और तप—ये सात तीर्थ कहे गये हैं।

तृष्णा

तन तुरंग असवार मन, कर्म पियादा साथ ।
तृस्ना चली शिकार को विषय जाल लिये हाथ ।।
माया मरी न मन मरे मर मर गये शरीर ।
आसा तृस्ना ना मरी कह गये दास कबीर ।।
ना सुख काजी पण्डिताँ न सुख भूप भया ।
सुख सहजा ही आवसी तृष्णा रोग गया ।।
की त्रिस्ना है डाकिनी, की जीवन का काल ।
और और निसिदिन चहै, जीवन करे निढाल ।।
थे दांत हाथी दांत सम मजबूत हिलने लग गये ।
जैसे गिरें छत की कड़ी इक-इक गिरने लग गये ।।
खूंटे गिरे डाढ़ें गिरीं बत्तीसी सारी गिर गई ।
मुख हो गया है पोपला तृष्णा नहीं बूढ़ी हुई ।। —भोले बाबा
काया गली झुर्री पड़ी लोहू हुआ है लापता ।
पग डगमगाते चालते कर कांपते सिर हालता ।।
ली हाथ लाठी बांस की, धनु सम कमर झुक गई ।
काया हुई बूढ़ी मगर तृष्णा नहीं बूढ़ी हुई ।। —भोले बाबा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोशकारो यथा ह्यंशूनुपादत्ते वधप्रदान् ।
उपादत्ते तथाऽर्थेभ्यस्तृष्णामज्ञः सदातुरः ।। —चरक

जिस प्रकार रेशम का कीड़ा आप ही सूत्रों को उत्पन्न करके स्वयं उन घातक सूत्रों में फंस जाता है, उसी प्रकार मूढ़ आतुर व्यक्ति विषयजन्य तृष्णा में फंस जाता है ।

जीर्यन्ते जीर्य्यतः केशा दन्ता जीर्य्यन्ति जीर्य्यतः ।
चक्षुः श्रोत्रे च जीर्य्येते तृष्णैका तरुणायते ।। —पंचतन्त्र

बूढ़े होने पर बाल सफेद हो जाते हैं, दांत टूट जाते हैं, आंख और कान भी जीर्ण हो जाते हैं परन्तु तृष्णा बराबर तरुणी होती चली जाती है ।

अनन्तपारा दुष्पूरा तृष्णा दोषशतावहा ।
अधर्मबहुला चैव तस्मात्तां परिवर्जयेत् ।। —पद्म पुराण

तृष्णा का कहीं आदि-अन्त नहीं है, उसका पेट भरना कठिन होता है, वह सैकड़ों दोषों को ढोये फिरती है, उसके द्वारा बहुत से अधर्म होते हैं अतः तृष्णा का परित्याग कर देना चाहिये ।

यच्च कामसुखं लोके, यच्च दिव्यं महत्सुखम् ।
तृष्णाक्षय सुखस्यैते नार्हतः षोडशीं कलाम् ।।

संसार में काम के द्वारा जितने भी सुख प्राप्त होते हैं तथा जो अन्य दिव्य और महान् सुख हैं वे सभी तृष्णा के नाश से जो सुख मिलता है, उसके सोलहवें अंश के बराबर भी नहीं है ।

दया

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान ।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लगि घट में प्राण ।।
दया कौन पर कीजिये, का पर निर्दय होय ।
साईं के सब जीव हैं, कीरी कुंजर दोय ।।
दया धर्म हिरदै बसे, बोले अमृत बैन ।
तेई ऊंचे जानिये, जिनके नीचे नैन ।।
देख दुखीजन मन विकल, गनै न निज पर काय ।
निज सर्वस दै दुख हरै, दया कहावत सोय ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सच तो यह है इन्सां उन्हीं का नाम है।
रहम[१] खाना[२] जिनका दाइम[३] काम है।।

Mercy is twice blessed, it blesseth him that gives, and him that takes. —Shakespeare

दया दो तरफी कृपा है। इसकी कृपा दाता पर भी होती है और पात्र पर भी।

दर्शन-शास्त्र

फलसफी को बहस के अन्दर खुदा मिलता नहीं।
डोर को सुलझा रहा है और सिरा मिलता नहीं।।

दान

जो जल बाढे नाव में घर में बाढ़े दाम।
दोऊ हाथ उलीचिये, यही सयानो काम।। —कबीर

हाड बड़ा हरि भजन कर, द्रव्य बड़ा कछु देय।
अकल बड़ी उपकार कर, जीवन का फल येह।।

तब लगि ही जीबो भलो, दीबो होय न धीम।
जग में रहिबो कुचित गति, उचित न होय रहीम।।

ऋतु वसन्त याचक भया हरिख[४] दिया द्रुम[५] पात।
तातै नव पल्लव भया, दिया दूर नहीं जात।।

देह धरे का फल यही, देह देह कछु देह।
देह खेह हो जायेगी, कौन कहेगा देह।।

बहुत द्रव्य सञ्चय जहाँ, चोर राज भय होय।
कासे ऊपर बीजली, परत कहे सब कोय।।

खाय न खरचै सूम धन, चोर चुरा ले जाय।
पीछे ज्यों मधुमक्षिका, हाथ मले पछताय।।

वशीकरन इक दान है, दान करे अरिनास।
दानी को सुख मिलत है, दुःख न आवे पास।।

सब दानों से है बड़ा, विद्या ही का दान।
जिस प्रताप से मिलत है, मानुष देह महान।।

---

१. दया २. यहां अर्थ होगा 'करना' ३. सदा ४. हर्षित होकर ५. वृक्ष।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दान दीन को दीजिये, मिटे पेट की पीर।
औषध ताको दीजिये, जाके रोग शरीर॥
एरन की चोरी करे, करे सुई को दान।
ऊंचे चढ़के देखते, केती दूर विमान॥

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर। —अथर्ववेद

हे मनुष्य ! तू सैकड़ों हाथों से कमा और हजारों हाथों से दान कर।

द्वावम्भसि निवेष्टव्यौ गले बद्ध्वा दृढां शिलाम्।
धन्वन्तमदातारं दरिद्रं चातपस्विनम्॥

दो को गले में पत्थर की बहुत बड़ी शिला बांध कर समुद्र में डुबा देना चाहिये। किन-किन को ? जो धनवान् होकर दानी न हो और जो दरिद्र होकर भी पुरुषार्थी न हो।

दानेन भूतानि वशी भवन्ति
दानेन वैराण्यपि यन्ति नाशम्।
परोपि बन्धुत्वमुपैति दानै—
र्दानं हि सर्वव्यसनानि हन्ति॥

दान से सभी प्राणी वश में हो जाते हैं, दान से शत्रुता का नाश हो जाता है। दान से पराया भी अपना हो जाता है, अधिक क्या दान सभी विपत्तियों का नाश कर देता है।

दानी

लाभ क्या है उन करो से,
जो न गिरते को उठाये।
या कि बन दानी जगत में,
कीर्ति में अपना बढ़ाये॥

दिल

कांटो से भी खराब है जिस गुल[1] में बू न हो।
वीरान के मिसाल[2] है, जिस दिल में तू न हो॥
गूंगी जवां है जिस पै तेरी गुफ्तगू[3] न हो।
जल जाय दिल वो जिसमें तेरी जुस्तजू[4] न हो॥

---

१. फूल २. समान ३. चर्चा ४. ढूंढ़ने की इच्छा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिल दे तो इस मिजाज[१] का परवरदिगार[२] दे।
जो रंज की घड़ियां भी खुशी में गुजार दे॥
जो तेरी निगाहों का बिस्मिल[३] नहीं है।
वो कहने को दिल है मगर दिल नहीं है॥
सफाई कल्ब[४] पैदा कर कि यह आइना[५] है लासानी[६]।
इसी में मुनक्कश[७] ए 'मिह्र' अक्से-यार[८] होता है॥
न देखा वो कहीं जल्वा[९] जो देखा खानये-दिल[१०] में।
बहुत मस्जिद में सिर मारा बहुत सा ढूंढा बुतखाना॥
जिन ने दिल खोया उसी को कुछ मिला।
फायदा देखा इसी नुकसान में॥
ए दिल इस तरह से रो कि आंखें ये तर न हों।
तुझ को खबर हो और किसी को खबर तलक न हो॥
मात्रतिष्ठ पराङ्मनः। —ऋग्वेद
संसार में मुर्दा दिल होकर मत रह।

Blessed are the pure in heart, for they shall see God.
—**Bible**

सौभाग्यशाली हैं वे जिनके हृदय पवित्र हैं, क्योंकि वे ही ईश्वर का दर्शन पायेंगे।

If a good face is a letter of recommendation, a good heart is a letter of credit. —**Bulwer**

यदि सुन्दर चेहरा संस्तुति है तो नेक दिल विश्वास पत्र।

दीन

दीन सबको लखत है, दीनहिं लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखैं, दीनबन्धु सम होय॥

दुर्बल

सबै सहायक सबल के, कोऊ न दुर्बल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय॥

---

१. स्वभाव २. ईश्वर ३. घायल ४. हृदय ५. दर्पण ६. अद्वितीय ७. अंकित ८. प्रभु-दर्शन ९. दृश्य १०. हृदय-मन्दिर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देवोऽपि दुर्बलघातकः । —पञ्चतन्त्र

भाग्य भी कमजोरों को मारता है ।

दुःख

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय ।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय ॥
रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय ।
सुन इठलैहें लोग सब, बांटि न लैहें कोय ॥
सुखके माथे सिल परै, नाम हिरदै से जाय ।
बलिहारी वा दुःख के पल-पल नाम रटाय ॥ —कबीर
चिर ध्येय यही जलने का, ठण्डी विभूति बन जाना ।
पीड़ा की अन्तिम सीमा, दुःख का फिर सुख हो जाना ॥
बिना दुःख के सुख है निस्सार ।
बिना आंसू के जीवन भार ॥
दुःख की पिछली रजनी बीच ।
विकसता सुख का नवल प्रभात ॥ —जयशंकर प्रसाद
रंज से खूगर हुआ इन्साँ तो मिट जाता है रञ्ज ।
मुश्किलें मुझ पर पड़ीं इतनी कि आसाँ हो गईं ॥
विषादो रोगकारणम् । —चरक
दुःख रोगों का मूल है ।

He that has no cross will have no crown. —Quarls

जिसने विपत्ति नहीं झेली उसे राजमुकुट नहीं मिलता ।

धर्म

धर्म कभी मत छोड़ियो, धर्म सुखों की खान ।
तीन लोक की सम्पदा, बसी धर्म में आन ॥
दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान ।
तुलसी दया न छोड़िये, जब लगि घट में प्राण ॥
क्षमा विवेक सुदम दया, सत्यवचन तप दान ।
शील, धैर्य संतोष ये, धर्म लिंग दश जान ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूरा सोई जानियें लड़े धर्म के हेत।
पुरजा पुरजा कट मरे, कबहू न छोड़े खेत ।।
धीरे धीरे धर्म को संचय करे सुजान।
सत्य धर्म परलोक में, मुक्ति का सोपान ।।
माता-पिता है धर्म ही, धर्म ही सखा महान्।
धर्म स्वर्ग का सेतु है, धर्म ही नर का मान ।।
असार जग को ससार समझो,
प्रपञ्च लखके उदास मत हो।
डिगो न विचलो चलो सम्भल के,
प्रसन्न मन से स्वधर्म पथ में ।।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।। —मनु

धैर्य, क्षमा, मन को वश में रखना, चोरी न करना, आन्तरिक एवं बाह्य शुद्धि, इन्द्रियों को वश में रखना, वेदादि शास्त्रज्ञान द्वारा बुद्धि को बढ़ाना, आत्मज्ञान, सत्य और अक्रोध—ये दस धर्म के लक्षण हैं।

यतोऽभ्युदय-निःश्रेयस्सिद्धिः स धर्मः। —कणाद

जिससे लौकिक और पारलौकिक उन्नति हो उसे धर्म कहते हैं।

ऊर्ध्वबाहूविरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति मे।
धर्मादर्थश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते ।। —महर्षि व्यास

मैं दोनों भुजा उठाकर पुकार-पुकार कर कह रहा हूँ परन्तु मेरी बात कोई सुनता नहीं है। जिस धर्म से अर्थ और काम की सिद्धि होती है उसका सेवन क्यों नहीं करते ?

धर्मः कामदुघा धेनुः। —बृहन्नारदपुराण

धर्म सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली गौ है।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतो वधीत् ।। —वेदव्यास

मरा हुआ धर्म मनुष्य को मार देता है और रक्षा किया हुआ धर्म मनुष्य की रक्षा करता है। अतः धर्म का हनन कभी नहीं करना चाहिये, जिससे मारा हुआ धर्म हमारा नाश न कर दे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

If men are so wicked with religion what would they be without it. —Franklin

धर्म होने पर जब मनुष्य इतने नीच हैं, तो धर्म के न होने पर वे क्या होंगे ?

धर्मात्मा

जिमि सरिता सागर महं जाहीं ।
यद्यपि ताहि कामना नाहीं ।
तिमि सुख-सम्पति बिनहिं बुलाये ।।
धर्मशील पहं जाहि सुभाये ।। —तुलसीदास

सत्यस्य नाव: सुकृतमपीपरन । —ऋग्वेद
सत्य की नौका धर्मात्मा को पार लगा देती है ।

धैर्य

धीरे धीरे रे मना धीरे सब कुछ होय ।
माली सींचे सौ घड़ा ऋतु आये फल होय ।।
कबिरा धीरज के धरे हाथी मन भर खाय ।
टूक एक के कारने स्वान घरै घर जाय ।।

Adopt the pace of nature, her secret is patience.
—Emerson

प्रकृति का अनुकरण करो, धैर्य उसका रहस्य है ।

Patience is bitter, but its fruit is sweet. —Russo

धैर्य कड़वा होता है परन्तु उसका फल मीठा होता है ।

ध्यान

ध्यान-सिन्धु मुक्ता घने जो खोजे वह पाय ।
चंचलता मन की मिटे, सहज शान्ति मिल जाय ।।
ध्यान ही योगीजन करें पावें परमानन्द ।
ध्यान बिना जो सुख चहें, वे नर हैं मतिमन्द ।।
ध्यान करे सुख होत है, ध्यान करे दु:ख जात ।
कहे कबीर सुध्यान से, प्रभुवर से मिल जाय ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नम्रता

ऊंचे पानी न टिकै नीचे ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पिबै, ऊंचा प्यासा जाय।। —कबीर
सब ते लघुताई भली, लघुता से सब होय ।
जस द्वितीया को चन्द्रमा सीस नवे सब कोय ।।
भली गरीबी नवनता, सकै न कोई मार ।
सहजो रूई कपास की, काटै न तरवार ।। —सहजोबाई
होय नम्र मन वचन सों, देइ सबहि सनमान ।
सो नर सर्वप्रिय सदा, छोह करै भगवान ।।
लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर ।
चींटी मिस्री खात है, हस्ती खावत धूर ।।
तना वो दरख्तों को आंधी गिराये ।
मगर घास झुक-झुक के खुद को बचाये ।।
सुशीलो भव धर्मात्मा मैत्रः प्राणिहिते रतः ।
निम्नं यथापः प्रवणः पात्रमायन्ति सम्पदः ।। —विष्णु पुराण

सुशील और धर्मात्मा बनो, सब के मित्र और प्राणिमात्र के हितैषी बनो क्योंकि जिस प्रकार जल स्वभावतः नीचे की ओर गति करता है, वैसे ही संसार की समस्त सम्पत्तियां विनम्र सत्पात्र के पास स्वयं आ जाती हैं।

It was pride that changed angels into devils, it is humility that makes men as angels. —**Augustine**

अभिमानवश देवता दानव बन जाते हैं और नम्रता से मानव देवता।

Be humble if thou wouldest attain to wisdom and be humble still when wisdom thou hast mastered.

यदि पाण्डित्य प्राप्त करना चाहते हो तो विनम्र बनो और यदि पाण्डित्य प्राप्त कर चुके हो तो और अधिक विनम्र बनो।

नारी

अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी ।
आंचल में है दूध और आंखों में पानी ।।

—मैथिलीशरण गुप्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम अजस्र वर्षा सुहाग की और स्नेह की मधु रजनी ।
चिर अतृप्त यदि जीवन था तो उसमें सन्तोष बनी ।।
नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रचत नग पगतल में ।
पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में ।।

—जयशंकर प्रसाद

नर के बांटे क्या नारी की नग्न मूर्ति ही आई ।
माता और बहन की प्रतिमा क्यों न उसे सुहाई ।।

नारी निन्दा मत करो नारी नर की खान ।
नारी से नर होत हैं ध्रुव प्रह्लाद समान ।।

पर-नारी पैनी छुरी, मत कोई कीजो संग ।
रावन इससे मिट गया, हुआ वंश का भंग ।।

पर नारी रत पुरुष जो, पर नर रत जो नार ।
शान्ति न पावे एक क्षण, चिन्ता शोक अपार ।।

यत्र नार्यास्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः । —मनु

जिस घर में स्त्रियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं ।

A beautiful and chaste woman is the perfect workmanship of God, the true glory of angels, the rare miracle of the earth and sole wonder of the world. **Hermies**

सुन्दर और सचरित्र नारी ईश्वर की उत्कृष्ट कारीगरी, देवताओं की वास्तविक शोभा, पृथ्वी का अपूर्व चमत्कार तथा संसार का एकमात्र आश्चर्य है ।

निन्दा

निन्दक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना निर्मल करे सुभाय ।। —कबीर

दोष पराया देखकर, चलत हसन्त हसन्त ।
अपना याद न आवई, जाको आदि न अन्त ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तिनका कबहूँ न निन्दिये, पाँव तले जो होय ।
कबहूँ उड़ि आंखों पड़े[1] पीर घनेरी होय ॥

हम औरों के दोष न देखें, अपने दोष विचारें ।
निन्दा करें न कभी किसी की, यही गुण जीवन में धारें ॥

जो मूरख निन्दा करें पण्डित की नहीं हानि ।
रवि पर धूरि उड़ाइये, परै अपुन पर आनि ॥

आप अपने एब[2] से वाक़िफ़[3] नहीं होता कोई ।
जैसे बू अपने दहन[4] की आती कम है नाक में ॥

ग़ौर करके देखलें दूसरों पर अंगुश्त नुमा[5] वाले ।
क्योंकि झुकती हैं तीन अंगुलियां अपनी ही तरफ ॥

अपने न दोष देखे, पर के औगुण पैखे,
दुष्ट को सुभाव उठि, निन्दा ही करतु है,
जैसे कोई महल संवारि राख्यो नीके करि,
कीरि तहां जाय छिद्र ढूंढत फिरतु है ।
भोर ही तैं सांझ लग, सांझ ही तैं भोर लग,
सुन्दर कहत दिन ऐसे ही भरतु है,
पांव के तरे की नहीं सूझै आग मूरख कूँ,
और सूं कहत तेरे सिर पे बरतु है ॥ —सुन्दरदास

मा निन्दत । —ऋग्वेद
निन्दा मत करो ।

---

१. क्या करता है एक तिनका ? लीजिये, पढ़िये—
मैं घमण्ड में भरा ऐंठा हुआ, एक दिन जो था मुंडेरे पर खड़ा ।
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ, एक तिनका आंख में मेरी पड़ा ॥
मैं झिझक उठा हुआ बेचैन-सा, लाल होकर आंख भी दुखने लगी ।
मूंठ देने लोग कपड़े की लगे, ऐंठ बेचारी दबे पांवों भगी ॥
जब किसी ढब से निकल तिनका गया, तब समझ ने यों मुझे ताने दिये ।
ऐंठता तू किसलिये इतना रहा, एक तिनका है बहुत तेरे लिये ॥
२. अवगुण, ३. परिचित, ४. मुख, ५. अंगुली उठाने वाले ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन्तु मे शत्रुगणाः सदैव,
येषां प्रसादात्सुविचक्षणोऽहम् ।
यदा यदाहं स्खलितो भवामि,
तदा तदा मां प्रति बोधयन्ति ।। —चाणक्य

मेरे शत्रु, जिनकी कृपा से मैं सदा सावधान रहता हूं, सदा जीते रहें क्योंकि जब-जब में कोई गलती करता हूँ तो वे मुझे सावधान कर देते हैं।

नीच

नीच निचाई नहि तजै, सज्जन हू के संग ।
तुलसी चन्दन विटप बसि, विष नहि तजत भुजंग ।।
कुछ कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको संग ।
पत्थर डाले कीच में, उछरि बिगारे अंग ।। —वृन्द
रहिमन ओछे नरन ते तजो बैर औ प्रीति ।
काटे चाटे स्वान के दुहूँ भांति विपरीत ।।

Bad man makes good institution bad. —**Mazzini**

नीच मनुष्य उत्तम संस्था को भी खराब कर देते हैं।

नीति के उपदेश

एके साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
जो तू सेवे मूल को फूले फले अघाय ।।
आलस कबहुँ न कीजिये, आलस अरि सम जानि ।
आलस से विद्या घटे, सुख सम्पति की हानि ।।
रहिमन वित्त अधर्म को, जरत न लागे बार ।
चोरी की होरी रची, भई तनिक में छार ।।
सुन्दर मानुष देह को, महिमा कहिये काहि ।
जाको चाहें देवता, क्यों खोवत है ताहि ।।
सोचिअ गृही जो मोह बस, करइ करम पथ त्याग ।
सोचिअ अति प्रपंच रत बिगत विवेक विराग ।।
कन कन जोरैं मन जुरैं, खाते निबरे सोय ।
बूंद बूंद सों घट भरे, टपकत रीतो होय ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो तू चाहे अधिक रस, सीख ईख से लेय ।
जो ताको अनरस करै, ताहि अधिक रस देय ।।
तुलसी कर पर कर करौ, कर तर कर न करौ ।
जा दिन कर तर करौ, ता दिन ही मरन करौ ।।
पीर सब की एक सी, मूरख जानत नाहिं ।
कांटा चुभे पीर है, गला काटि के खाहिं ।। —मलूकदास
बरनाश्रम निज निज धरम, निरत वेद पथ लोग ।
चलहिं सदा पावहिं सुख, नहीं भय सोक न रोग ।। —तुलसी
पर द्रोही पर दार रत, पर धन पर अपवाद ।
ते नर पांवर पाप मय, देह धरे मनुजाद ।।
जो न तरे भव सागर, नर समाज अस पाई ।
सो कृत निंदक मन्द मति, आत्महान गति जाई ।।
पाप कर्म कर सुख चहे कैसे पावे कोय ।
बोवे बिरवा आक का, आम कहां ते होय ।।
आंख में अंजन दांत में मंजन,
नित कर नित कर नित कर ।
कान में तिनका नाक में अंगुली,
मत कर मत कर मत कर ।।
भागती फिरती थी दुनिया जब तलब करते थे हम ।
जबसे नफरत हमने की वो बेकरार आने को है ।। —रामतीर्थ
दो बातन को भूल मत, जो चाहे कल्याण ।
'नारायण' एक मौत को, दूजे श्री भगवान ।।
दौलत पाय न कीजिये, सपने में अभिमान ।
चंचल जल दिन चारि को, ठाउं न रहत निदान ।।
लोग नगर ढिग ना करें मरघट को स्थान ।
देखो मांसाहारियो, घट में किया मसान ।।
सबल क्षमी, निर्गर्व धनी, कोमल विद्यावन्त ।
भव में भूषण तीन हैं, औरो सबै अनन्त[1] ।।

१. गौण ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चिन्ता मत कर निश्चिन्त रह, पूरनहार समर्थ ।
जल में थल में जीव हैं, उनकी गाँठ न अर्थ ।।
चिन्ता ऐसी डाकिनी काटि करेजा खाय ।
बैद विचारा क्या करे, कहां तक दवा लगाय ।।
गुरु कुम्हार शिष्य कुम्भ है, गढि गढि काढै खोट ।
अन्दर हाथ सहार दे बाहिर बाहै चोट ।।
सांस सांस पर नाम ले वृथा सांस मत खोय ।
न जाने इस सांस का, आवन होय न होय ।।
कबिरा गर्व न कीजिये, काल गहे कर केस ।
न जानो कित मारिहै, क्या घर क्या परदेस ।।
धन रहे न जोबन रहे, रहे न गांव न ठाँव ।
कबिरा जग में जस रहे, कर दे किसी का काम ।।
माया छाया एक सी बिरला जाने कोय ।
भगता के पीछे फिरे, सम्मुख भागे सोय ।।
श्रम ही ते सब कुछ बने, बिन श्रम मिले न काही ।
सीधी उंगली घी जम्यो, कबहु निकसे नाहीं ।।

पतिव्रता

पतिवरता पति को भजे और न आन सुहाय ।
सिंह बच्चा जो लंघना, तो भी घास न खाय ।। —कबीर
सूरा के तो सिर नहीं दाता के धन नाँहि ।
पतिवरता के तन नही, सुरत बसै मन माँहि ।। —कबीर
पतिवरता मैली भली, गले कांच की पोत ।
सब सखियन में यों दिपै, ज्यों रवि ससि की जोत ।।
पतिवरता मैली भली, काली कुचिल कुरूप ।
पतिवरता के रूप पर वारों कोटि स्वरूप ।।

पथ

वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या,
जब राह में बिखरे शूल न हों ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नाविक की धैर्य परीक्षा क्या,
जब धारा ही प्रतिकूल न हों ।।

परीक्षा

सदा खूने-जिगर पीते रहे, ये इम्तिहां जालिम ।
कभी सहमाही[1] शसमाही[2] कभी कम्बख्त सालाना[3] ।।

यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते,
निघर्षणच्छेदनतापताड़नैः ।
तथा चतुर्भिः पुरुषः परीक्ष्यते,
श्रुतेन शीलेन कुलेन कर्मणा ।। —वृद्ध चाणक्य

जिस प्रकार सोने को काट कर, तपा कर, घिस कर और पीट कर उसकी जांच की जाती है, उसी प्रकार श्रुत, शील, कुल और कर्म—इन चार प्रकारों से पुरुष की परीक्षा की जाती है ।

दातुश्चैव परीक्षा वै दुर्भिक्षे जायते नृभिः ।
शूरस्यैव तु संग्रामे मित्रस्य च तथापदि ।।
अशक्तौ च तथा स्त्रीणां विपत्तौ सुकुलस्य च ।
स्नेहस्य च परोक्षेण सत्यस्य संकटे गते ।। —शिव पुराण

दाता की परीक्षा दुर्भिक्ष में, वीर की युद्ध में, मित्र की आपत्काल में, नारी की निर्धनावस्था में, उत्तम कुल की विपत्ति में, प्रेम की परोक्ष में और सत्य की परीक्षा संकट के समय होती है ।

परोपकार

तन मन धन सों कीजिये, निसि दिन पर-उपकार ।
यही सार नर देह में, वाद विवाद बिसार ।।
पर हित सरिस धर्म नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।।
नर सरीर धरि जे पर पीरा ।
करहिं ते परहिं महा भव भीरा ।।
परहित बस जिन्ह के मन माही ।
तिन्ह कहं जग दुरलभ कछु नाहीं ।।

---

१. त्रैमासिक २. अर्ध वार्षिक ३. वार्षिक ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर उपकार बचन मन काया ।
संत सहज सुभाउ खगराया ।। —तुलसीदास

परोपकारशून्यस्य धिङ् मनुषस्य जीवितम् ।
जीवन्तु पशवो येषां चर्माप्युपकरिष्यति ।।

मनुष्य होकर भी जो दूसरों का उपकार नहीं करता उसके जीवन को धिक्कार है। ऐसे मनुष्यों से तो पशु ही श्रेष्ठ हैं जिनका चमड़ा तक काम में आता है।

पवित्रता

न्हाये धोय क्या भया, जो मन का मैल न जाय।
मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाय ।। —कबीर

तन को जोगी सब करें मन को बिरला कोय।
सहजं सब विधि पाइये, जो मन जोगी होय ।। —कबीर

भीतर से मैलो हियो बाहर रूप अनेक।
नारायण तासो भलो, कौआ तन मन एक ।।

खानये-दिल[1] है स्याह[2] उसकी स्याही दूर कर।
क्या सफेदी से महल करता है तू अपना सफेद ।।

Cleanliness is next to godliness. —John Wesley

पवित्रता देवत्व के निकटतम है।

पाप

भजन करे नित नेम से पाप करे दिन रात।
नारायण ऐसे भक्त से प्रभु करें नहीं बात ।।

तुलसी पिछले पाप ते हरि चर्चा न सुहाय।
जैसे ज्वर के कारणे भूख बिदा हो जाय ।।

रहे न कौड़ी पाप की ज्यों आवे त्यों जाय।
लाखन को धन पायके, मरे न कफन पाय ।।

मा मा प्रापत् पाप्मा मोत मृत्युः । —अथर्ववेद

मुझे पाप और मृत्यु प्राप्त न हो।

---

१. हृदय का छिद्र, भाव हृदय से है २. काला।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ।
न क्षीयन्तेऽस्य कर्माणि कल्पकोटि शतैरपि ।।

मनुष्य जो शुभ और अशुभ, पुण्य और पाप कर्म करता है वह भोगना ही पड़ता है बिना भोगे वह करोड़ों वर्षों में भी क्षीण नहीं होता ।

पुत्र-कुपुत्र

उत्तम सुत सोई जानिये, जो हरि भगत सुजान ।
मातृ पितृ कुल तारि दे, करै विश्व-कल्यान ।।
सुन जननी सोई सुत बड़ भागी ।
जो पितु मात वचन अनुरागी ।।
एक वृक्ष की गन्ध से सारा वन महकाय ।
योग्य पुत्र से इस विधि कुल प्रदीप हो जाय ।।
गुणी पुत्र एको भलो, सौ मूरख नहीं भाय ।
एक चन्द्र तम को हरे, शत तारन नहीं जाय ।।
ज्यों रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय ।
बारे[1] उजयारो करे, बढ़े[2] अन्धरो होय ।।

पुरुष

पुरुषार्थ नहीं जिस पुरुष में वह पुरुष वृथाकार है ।
पुरुषार्थ बिन उस पुरुष के जीवन पै शत धिक्कार है ।।

उद्यानं ते पुरुष नावयानम् । —अथर्ववेद

हे पुरुष ! तेरा सदा ऊर्ध्वगमन ही हो, तेरा कभी भी अधःपतन न हो ।

उत्क्रामातः पुरुष मावपत्थाः । —अथर्ववेद

हे पुरुष ! अपनी वर्तमान अवस्था से ऊपर उठ, नीचे मत गिर ।

जो वीरता से भरा हुआ है, जिसका नाम लोग बड़े गौरव से लेते हैं, शत्रु भी जिसके गुणों की प्रशंसा करते हैं, वही पुरुष वास्तव में पुरुष है ।

—गणेशशंकर विद्यार्थी

---

१. बचपन में, जलाने पर २. बड़ा होने पर, बुझने पर ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुरुषार्थ

हाथ पर धर हाथ बैठे[१] रहने से हार होती है,
बाहुओं की बल्ली से नाव पार होती है।
पांव जब उठते अडिग विश्वास लिये राही के,
तो राह देने के लिये क्षितिज में दरार होती है।।
—जगदीश विद्यार्थी

पुरुष हो, उठो, पुरुषार्थ करो।

पुष्प

बिजलियां भी कड़केंगी, ज़लजले भी आयेंगे।
फूल मुस्कराए हैं, फूल मुस्करायेंगे।।
कांटों से घिरा हुआ चारों तरफ से फूल।
इस पर खिला ही पड़ता है क्या खुश-मिजाज फूल।।
एक फूल झड़ गया जमीन पर,
कह गया कि देह नाशवान् है।
मगर जिओ जहां सुगन्ध दे सको,
विश्व को नवीन रूप दो विधान है।।
चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं।
चाह नहीं, प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं।।
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊं।
चाह नहीं, देवों को सिर चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं।।
मुझे तोड़ लेना बन माली ! उस पथ में तुम देना फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।।
—माखनलाल चतुर्वेदी

अहिंसा प्रथमं पुष्पं पुष्पमिन्द्रिय निग्रहः।
सर्वभूतदया पुष्पं क्षमा पुष्पं विशिष्यते।।
शमः पुष्पं तपः पुष्पं ध्यानं पुष्पं च सप्तमम्।
सत्यञ्चैवाष्टमं पुष्पमेतैस्तुष्यति नः शिवः।।

---

१. आज स्थिति यह है—
राम भरोसे बैठ के रहो खाट पै सोय।
अनहोनी होनी नहीं, होनी होय सो होय।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एतैरेवाष्टभिः पुष्पैस्तुष्यत्येवार्चितो हरिः ।
पुष्पान्तराणि सन्त्यत्र बाह्यानि मनुजोत्तम ॥ —अग्नि पुराण

अहिंसा पहला, इन्द्रिय-संयम दूसरा, जीवों पर दया करना तीसरा, क्षमा चौथा, शम पाँचवां, तप छटा, ध्यान सातवां और सत्य आठवां पुष्प है। इन पुष्पों के द्वारा कल्याणकारी परमात्मा प्रसन्न होते हैं। हे नृपश्रेष्ठ ! अन्य पुष्प तो पूजा के बाह्य अंग हैं, परमात्मा उपर्युक्त आठ पुष्पों से ही पूजित होने पर प्रसन्न होते हैं।

पुस्तक

हम ऐसी कुल किताबें काबिले-जब्ती समझते हैं।
कि जिनको पढ़के लड़के बाप को खब्ती समझते हैं ॥ —अकबर

हमें क्या काम दुनिया से मद्रसः है वतन अपना।
मरेंगे हम किताबों में सफे होंगे कफन अपना ॥
हो गये बर्बाद यूं पढ़के किताबे जिन्दगी।
वर्क कुछ तो फाड़ डाले, कुछ हवा में उड़ गये ॥

A home without books is like a house without windows.
—Beecher

पुस्तक-रहित घर खिड़की-रहित भवन के सदृश है।

Books are light-houses erected in the great sea of time.
—E. P. Vipil

पुस्तकें प्रकाश-गृह हैं जो समय के विशाल समुद्र में खड़ी की गई हैं।

मैं नरक में भी उत्तम पुस्तकों का स्वागत करूंगा क्योंकि इनमें वह शक्ति है कि जहाँ ये होंगी वहाँ आप ही स्वर्ग बन जायेगा।
—लोकमान्य तिलक

प्रभुता

नहिं कोऊ अस जन्मा जग माहीं।
प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥ —तुलसी

प्रभुता को सब कोई भजै, प्रभु को भजै न कोय।
कहे कबीर प्रभु को भजे, प्रभुता चेरी होय ॥

यौवनं धनसम्पत्तिः प्रभुत्वमविवेकता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ॥ —हितोपदेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यौवन, धन-सम्पत्ति, प्रभुत्व-अधिकार और अविवेक—इन चारों में से एक-एक अनर्थकारी होता है। फिर जहां ये चारों हों वहां की तो बात ही क्या है ?

प्रभु-भक्ति

धन्य वे ही नर-नार हैं, प्रभु-भक्ति में लीन।
सब जीवन अर्पण किया, प्रभु इच्छा अधीन॥
चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात।
परमेश्वर के भजन बिन, जन्म अकारथ जात॥
भजन करन को आलसी, भोजन को हुशियार।
तुलसी ऐसे नरन को, बार बार धिक्कार॥

जो प्रभु को प्राप्त कर लेता है, वह संसार का सर्वोत्कृष्ट धन और वैभव प्राप्त कर लेता है, और जो प्रभु को खो देता है, वह सर्वस्व खो देता है। जो प्रभु से हीन है वह दरिद्र है, जो उसके साथ आलाप करता है वही सच्चा धनी है। —थोमस ए० कैम्पिस

प्रभु-विश्वास

अमर बेल बिन मूल की, प्रतिपालत जो ताहि।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिये काहि॥
कबीर तू काहे डरे, सिर पर सृजनहार।
हस्ती चढ़कर डोलिये, कूकर भुसे हजार॥
कबीर क्या मैं चिन्त हूं, हम चिन्ते क्या होय।
मेरी चिन्ता हरि करे, चिन्ता मोहै न कोय॥

जब दाँत न थे तब दूध दियो,
अब दाँत दिये तो का अन्न न दैहैं।
जीव बसे जल में थल में,
सबकी सुधि लेइ सो तेरी भी लैहैं।
काहे को सोच करे मन मूरख,
सोच करे कुछ हाथ न ऐहैं।
जान को देत अजान को देत,
जहान को देत सो तोकूं न दैहैं॥ —सुन्दरदास

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

येन शुक्लीकृता हंसाः शुकाश्च हरितीकृताः ।
मयूराश्चित्रता येन स मे वृत्तिं विधास्यति ।। —हितोपदेश

ध्रुव ने पूर्ण विश्वास के साथ कहा था—जिस परमात्मा ने हंसों को श्वेत बनाया है, जिसने तोते को हरा बनाया है और जिसने मोरों को चित्र-विचित्र बनाया है वही परमात्मा मुझे भोजन देगा ।

प्रेम

जा घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसान ।
जैसे खाल लोहार की, सांस लेत बिन प्रान ।।

रहिमन प्रेम न कीजिए, जस खीरा ने कीन ।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फांकें तीन ।।

प्रेम बराबर योग नहीं, प्रेम बरावर ध्यान ।
प्रेम भक्ति बिन साधना, सब ही थोथी जान ।।

हे नर ऐसी प्रीति कर, जैसी वृक्ष करे ।
धूप सहे सिर आपने, औरन छाँव करे ।।

प्रीति तो ऐसी करैं, जैसी लुटिया डोर ।
अपना गला फंसाय के, पानी लावति बोर ।।

पिया चाहे प्रेम रस, राखा चाहे मान ।
एक म्यान में दो खड़ग, देखी सुनी[1] न कान ।।

सुर नर मुनि सब की यह रीती ।
स्वारथ लागि करैं सब प्रीती ।।

खैर, खून खांसी खुसी, बैर प्रीति मदपान ।
रहिमन दाबे न दबें जानत सकल जहान ।।

असर[2] है जज्बए-उल्फत[3] में तो वो खिच कर आ ही जायेंगे ।
हमें परवाह नहीं हम से अगर वो तन के बैठे हैं ।।

---

१. अलवर के अजाइब घर में एक म्यान में दो तलवारें रक्खी हुई हैं । हमने अपनी आंखों से देखा है । —लेखक

२. प्रभाव ३. प्रेम का आकर्षण ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक हो जा इस तरह ज्यूं प्राण तन का तौर है।
फिर न कोई यूं कहे, मैं और हूं तू और है।।
मुहब्बत से बना लेते हैं अपना दोस्त दुश्मन[1] को।
झुकाती है हमारी आजिज़ी[2] सरकश[3] की गर्दन को।।
करूं मैं दुश्मनी किससे, अगर दुश्मन भी हो अपना।
मुहब्बत ने नहीं दिल में जगह छोड़ी अदावत[4] की।।
दर्द न हो तो दिल ही क्या है, प्रेम न हो तो जीवन व्यर्थ।
विरह न हो तो इस जीवन में, रहा प्रेम का ही क्या अर्थ।।

Across the gateway of my heart,
I wrote "No Thoroughfare,"
But love came laughing by, and cried:
"I enter everywhere." **Herbert-Shipman**

मैंने अपने हृदय के द्वार पर लिखा—"यह आम रास्ता नहीं है।" परन्तु प्रेम मुस्कराता हुआ पास आया और चिल्लाया—"मैं प्रत्येक स्थान पर प्रविष्ठ होता हूं।

Mutual love is the crown of all our bliss. **Milton**

पारस्परिक प्रेम हमारे सभी आनन्दों का मुकुटमणि है।

फकीर

मन मारे तन बस करै, साधे सकल सरीर।
फिकिर फारि कफनी करे. ताको नाम फकीर।।
फिकिर सब को खा गई, फिकिर ही सबकी पीर।
फिकिर का फाका[5] करे, ताका नाम फकीर।।

फूट

जो जग में धन बल, अपनो राखन होय।
तो अपने घर भूल कर फूट न कीजो कोय।।
खेत में उपजै सब कोई खाय।
घर में उपजै घर को ही खाय।।
जग में घर की फूट बुरी।
घर की फूटहि सों बिनसाई सुवरन लंकपुरी।।

---

१. शत्रु २. नम्रता ३. सिर काटने वाला ४. शत्रुता ५. फंका।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फूटहिं से सब कौरव नासे भारत युद्ध भयो।
जाको घाटो या भारत में अब लौ नहीं पुर्यो॥
जहां बिखरे हुए गुल[1] हों, जुदा बूटे से बूटा हो।
फना[2] की बिजलियां क्योंकर न बरसें ऐसे गुलशन[3] पर॥
मिथो बिघ्ना ना उप यन्तु मृत्युम्। —अथर्ववेद
परस्पर लड़ने वाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

आपस की फूट से कौरव, पाण्डव और यादवों को सत्यानाश हो गया सो तो हो गया परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है, न जाने यह भंकर राक्षस कभी छुटेगा वा आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःखसागर में डुबा मारेगा? उसी दुष्ट दुर्योधन गोत्रहत्यारे, स्वदेशविनाशक, नीच के दुष्ट मार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख बढ़ा रहे हैं। परमेश्वर कृपा करे कि यह राजरोग हम आर्यों में से नष्ट हो जाये। —महर्षि दयानन्द सरस्वती

ब्रह्मचर्य

सारे जग में देख लो, ब्रह्मचर्य का मान।
बल आयु आरोग्यता, सर्व गुणों की खान॥
ब्रह्मचर्य सुख खान है, धारण करे सुजान।
विद्या बल जीवन बढ़े, रोग होय सब हान॥
तीर-तुपक से जो लड़े, सो तो वीर न होय।
ब्रह्मचर्य पालन करे, वीर कहावे सोय॥
सागर के ज्यों तरन में नौका बड़ी प्रधान।
दुःख सागर के तरन में ब्रह्मचर्य प्रमान॥
मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात्॥
वीर्य-नाश मृत्यु है और वीर्य-रक्षा = ब्रह्मचर्य जीवन है।
ब्रह्मचर्येण तपसा देवामृत्युमपाघ्नत॥ —अथर्ववेद
ब्रह्मचर्यरूपी तप से विद्वान् लोग मृत्यु को भी मार भगाते हैं।

भय (डर)

भय बिनु भाव न ऊपजै, भय बिनु होय न प्रीति।
जब हिरदे ते भय गया, मिटी सकल रस रीति॥ —कबीर

१. पुष्प २. विनाश ३. उद्यान।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डूबने का खौफ[1] हमको हो तो फिर क्या खाक हो।
हम तेरे किश्ती[2] तेरी, साहिल[3] तेरा दरिया तेरा ॥

डरते हो ? किससे ?
ईश्वर से ? मूर्ख हो !
मनुष्य से ? कायर हो
पञ्चभूतों से ? उनका सामना करो।
अपने से ! जानो अपने आपको। —स्वामी रामतीर्थ

अभयं नक्तमभयं दिवा नः। —अथर्ववेद

रात्रि और दिन—सभी हमारे लिये भय रहित हों।

तावद्भयेन भेतव्यं यावद्भयमनागतम्।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा प्रहर्तव्यमशंकया ॥ —चाणक्य

तब तक ही भय से डरना चाहिये जब तक वह पास नहीं आता जब भय निकट आ जाये तब तो प्रहार करके उसे नष्ट करना ही उचित है।

भलाई

जो तोकू कांटा बुवै, ताहि बोव तू फूल।
तोहि फूल के फूल हैं, वाकू हैं तिरसूल ॥
भलाई कर कि वो तुझ को भले कामों का फल देगा।
तेरी झोली को वो आशा के फूलों से भर देगा ॥

To be doing good is man's most glourious task.
—Sophocles

भलाई करना मानव का श्रेष्ठ कर्तव्य है।

भाग्य

न रक्खो कातिवे-तकदीर[4] पर इल्जाम[5] किस्मत का।
तुम्हारे हाथ में ऐ दोस्तो किस्मत[6] तुम्हारी है ॥

१. भय २. नौका ३. किनारा ४. विधाता ५. दोष ६. भाग्य

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तद्बीर[1] से तकदीर[2] बदल सकते हैं।
बिगड़ी हुई तस्वीर बदल सकते हैं।।[3]

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी—
दैवं हि दैवमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या,
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।। —भर्तृहरि

उद्योगी पुरुष-सिंह ही लक्ष्मी का उपार्जन करता है, कायर पुरुष ही भाग्य-भाग्य चिल्लाया करता है। भाग्य को ठोकर मार कर अपनी पूर्ण शक्ति से पुरुषार्थ करो। यत्न करने पर भी यदि सफलता न मिले तो देखो कि आप के प्रयत्न में कहां कमी रही है।

नक्षत्रंमति पृच्छन्तं बालमर्थोऽति वर्तते।
अर्थो ह्यर्थस्य नक्षत्रं किं करिष्यन्ति तारकाः।। —चाणक्य

जो मूर्ख कार्य साधन के समय नक्षत्रों के शुभाशुभ का विचार करता है, उसके स्वार्थ नष्ट हो जाते हैं। धन कमाने का नक्षत्र = साधन तो धन ही है, ये बेचारे नक्षत्र क्या कर सकते हैं?

Man is the captain of his fate, master of his luck and builder of his destiny. **—Jagdish Vidyarthi**

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता, विधाता और स्वामी स्वयं ही है।

भाग्यशाली

कौन भाग्यशाली नर होगा जग में उससे बढ़के।
परमोन्नति जो करे स्वनिर्मित सोपानों पर चढ़के।। —अंगराज

भाषा

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न उर को शूल।।
—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

---

१. उपाय २. भाग्य ३. छत्रपति शिवाजी ने बड़े दर्प के साथ ठीक ही कहा था—
मैं रख लूंगा सब कुछ तीर के आगे।
रख दूंगा लाखों को चीर के आगे।
लोग तो झुकते हैं तकदीर के आगे।
तकदीर भी झुक जायेगी मेरे तीर के आगे।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन

मन के हारे हार है मन के जीते जीत ।
पारब्रह्म को पाइये, मत के ही परतीत ।।
मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक ।
जो मन पर असवार है, सो लाखन में एक ।।
जो शुद्ध मन नर होय हैं वे ईश दर्शन पाय हैं ।
मन के मलिन नहीं स्वप्न में भी ईश सम्मुख जाय हैं ।।

—भोले बाबा

तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु । —यजुर्वेद

मेरा मन शिव-संकल्पों वाला हो ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तं निर्विषयं स्मृतम् ।। —ब्रह्मबिन्दु उप०

मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है । विषयात्क मन बन्धन के लिये है और निर्विषय मन मुक्ति का साधन है ।

हस्तं हस्तेन सम्पीड्य दन्तैर्दन्तान्विचूर्ण्य च ।
अङ्गान्यङ्गैरिवाक्रम्य जयेदादौ स्वकं मनः ।। —उपनि०

हाथ को हाथ से भींचकर, दाँतों को दाँतों से कटकटाकर और अंगों से अंगों पर आक्रमण करके सबसे पूर्व मन को बस में करना चाहिये ।

चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथी बलवद् दृढ़म् ।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् ।। —गीता

हे कृष्ण ! मन बड़ा चञ्चल है, मनुष्य को मथ डालता है । यह बहुत बलवान् है । मैं इसे वश में करना ऐसा ही कठिन समझता हूँ जैसे वायु को वश में करना ।

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम् ।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ।। —गीता

हे महाबाहो ! निःसन्देह मन बड़ा चञ्चल है, यह रुक नहीं सकता । परन्तु हे कौन्तेय ! अभ्यास और वैराग्य से यह वश में किया जा सकता है ।

मनुष्य

खान पान सुख भोग में पशु भी परम सुजान ।
कहा अधिकता मनुज की जो न लखे भगवान ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनुष्य सोई जानिये, जाहि विवेक विचार।
जाहि विवेक विचार नहीं, सो नर ढोर गंवार।।

आपदा के अग्नि पथ पर जो कभी रुकना न जाने।
दैन्य के अभिशाप में भी जो कभी झुकना न जाने।
प्रलय झंझावात में भी, भंवर में फंसना न जाने।
गीतमय जीवन बना ले, गीत को ही धर्म माने।
गा सके संघर्ष में हंसकर सदा जो स्वर वही है।
जो हिमालय सा उठे जीवन धरा पर नर वही है।

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न जो सुमृत्यु तो वृथा मरे वृथा जिये,
मरा नहीं वही कि जो जिया है और के लिये।
यही पशु प्रवृत्ति है आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिये मरे।।—मैथिलीशरण गुप्त

सफीनों[1] से जो टकराये उसे तूफान कहते हैं।
जो तूफानों से टक्कर ले उसे इन्सान कहते हैं।।

दर्दे-दिल पासे-वफा[2] जज्बए ईमाँ[3] होना।
आदमीयत है यही और यही इन्सां होना।।

जफर आदमी उसको न जानयेगा,
हो वो कैसा ही साहिबे·फहमो ज़का।
जिसे एश में यादे-खुदा न रही,
जिसे तैश में खौफे-खुदा न रहा।। —जफर

आदमी को आदमियत चाहिये।
बू नहीं सन्दल में तो वो चोब है।।

फरिश्ते से बहतर है इन्सान बनना।
मगर इसमें पड़ती है मेहनत ज्यादा।। —हाली

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना।
आदमी को भी मुयस्सर नहीं इन्सां होना।। — गालिब

---

१. नौका २. प्रतिज्ञा पालन का ध्यान ३. धर्म की भावना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—ऋग्वेद

मनुर्भव ।

मनुष्य बन ।

Wanted men,
Not systems fit and wise,
Not faiths with rigid eyes,
Nor Wealth in mountain piles,
Nor Power with gracious smiles,
Not even Potent pen—
Wanted men.

—Alexander Dumas

आवश्यकता है मनुष्यों की,
नहीं चाहियें विवेकपूर्ण पद्धतियां,
नहीं चाहियें पथराई आंखों वाले सम्प्रदाय,
नहीं चाहियें पर्वत के समान धन के ढेर,
नहीं चाहिये कृपापूर्ण मुस्कान के साथ शक्ति भी,
नहीं चाहिये प्रबल प्रभावयुक्त लेखनी भी,
आवश्यकता है मनुष्यों की ।

ममता

ममता बेड़ी है कड़ी बंधा सभी संसार ।
ममता बेड़ी काट दे भव से हो जा पार ॥
भव से हो जा पार राज्य निष्कण्टक पावे ।
हो भूपों का भूप गर्भ में लौट न आवे ॥
'जय देवी'! भज ईश, धार उत्तम गुण समता ।
मैं मेरा दे त्याग कड़ी बेड़ी है ममता ॥

अशनं मे वसनं मे जाया मे बन्धुवर्गो मे ।
इति मे मे कुर्वाणं कालवृको हन्ति पुरुषाजम् ॥

मेरा भोजन, मेरे वस्त्र, मेरी पत्नी, मेरा बन्धु-वर्ग इस प्रकार मेरा-मेरा (मैं, मैं) करने वाले पुरुषरूपी बकरे को कालरूपी भेड़िया मार डालता है ।

द्वे पदे बन्धमोक्षाय निर्ममेति ममेति च ।
ममेति बध्यते जन्तु निर्ममेति विमुच्यते ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बन्धन और मोक्ष के दो ही कारण हैं— ममता और मोह शून्यता। ममता से प्राणी बन्धन में पड़ता है और ममता रहित होने पर मुक्त हो जाता है।

महापुरुष

महापुरुषों की जीवनी, यह हमको बतला रही।
अनुकरण कर मार्ग उनका उच्च बन सकते सभी।
कालरूपी रेत पर चिह्न जो तज जायेंगे।
आदर्श उनको मान कर आगन्तुक ख्याति पायेंगे।।

संपत्सु महतो चित्तं भवत्युत्पल कोमलम्।
आपत्सु च महाशैलशिलासंघात कर्कशम्।। —भर्तृहरि

महापुरुषों का चित्त समृद्धि के समय कमल के समान कोमल—सदय हो जाता है परन्तु आपत्ति के समय वे अपने मन को पर्वत की चट्टान की भाँति कठोर एवं अचल बना लेते हैं।

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञतुमर्हति।। —भवभूति

महापुरुषों का हृदय वज्र से भी कठोर और फूल से भी कोमल होता है, उसे जानने में कौन समर्थ हो सकता है?

Great men are meteors designed to burn so that the earth may be lighted.
—Napoleon

महापुरुष उल्काएं हैं जो प्रदीप्त होने के लिये रचे गये हैं जिससे यह पृथ्वी प्रकाशित हो जाये।

मांगना

मांगन मरण समान है, मति कोई माँगो भीख।
मांगन से मरना भला, यह सदगुरु की सीख।। —कबीर
आदर मान महत्त्व सत, बालापन को नेह।
यह चारों तब ही गये जब ही कहा कुछ देह।।
रहिमन वे नर मर चुके, जो कहूँ मांगन जाहिं।
उनते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मर जाऊ मागूं नहीं, अपने तन के काज।
कारण पर-उपकार के मोहे न आवे लाज ।।
बिन मांगे है दूध बराबर, मांग लिया सो पानी।
झगड़ लिया तो रक्त बराबर, कहे नानक निर्बानी ।।
फकीरी में भी मुझको, मांगने से शर्म आती है।
सवाली होके मुझसे हाथ फैलाया नहीं जाता ।।
जो कुछ मांगना हो खुदा से मांग ए अकबर।
यही वो दर[1] है कि जिल्लत[2] नहीं सवाल के बाद ।।
भिक्षुका नैव भिक्षन्ते बोधयन्ति गृहे गृहे।
दीयतां दीयतां नित्यमदातुः फलमीदृमम् ।।

भिक्षुक मांगते नहीं हैं अपितु द्वार-द्वार पर जाकर लोगों को चेतावनी देते हैं कि नित्यप्रति दान करते रहो क्योंकि दानशून्य मनुष्य की अवस्था हमारे जैसी होती है।

मान

अमी पियावत मान बिन रहिमन मोहि न सुहाय।
मान सहित मरिबो भलो, जो विष देइ बुलाय ।।
घटने न देना मान, करना मोह मत धन-धाम का।
यदि मान ही जाता रहा तो धन रहा किस काम का ।।
मान होत है गुनन से, गुन बिन मान न होत।
सुक[3] सारक[4] पालें सभी काग न पाले कोय ।।
अधम चाहते मान को, मध्यम धन अरु मान।
उत्तम चाहे मान को, ताको धन सम्मान ।।
पदाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधि रोहति।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः ।। —माघ

जो धूल पैर से आहत होने पर उड़ कर आहत करने वाले के सिर पर चढ़ जाती है, वह अपमान होने पर भी स्वस्थ बने रहने वाले शरीरधारी से श्रेष्ठ है।

---

१. द्वार, २. अपमान, ३. तोता, ४. मैना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माया

माया छाया एक सी, बिरला जाने कोय।
भगतों के पीछे फिरै, सनमुख भागे सोय॥ —कबीर
मैं जानू हरि से मिलूं, मन में मोटी आस।
हरि बिच डारै अन्तरा, माया बड़ी पिसाच॥ —कबीर

To look upon life as an evil and treat the world as a delusion is sheer ingratitude. —S. Radhakrishnan

जीवन को पापमय और संसार को माया समझना परले दर्जे की कृतघ्नता है।

माला

माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माहिं।
मनुवाँ तो चहुं दिसि फिरैं, यह तो सुमिरन नाहिं॥
माला फेरत जुग भया, मिटा न मन का फेर।
कर का मन का छांडि के, मन का मनका फेर॥
माला तेरी काठ की, धागे लई पिरोय।
मन में घुण्डी पाप की, नाम जपे क्या होय॥
माला तो मन की भली, और संसारी भेख।
माला फेरे हरि मिले, हरहर[1] के गल देख॥

मित्र

मथत मथत माखन रहे, दही मही बिलगाय।
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय॥
जे न मित्र दुख होंहि दुखारी।
तिन्ही विलोकत पातक भारी॥
कहत रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
विपत कसोटी जो कसे, सोइ सांचे मीत॥
कुपन्थ निवारि सुपन्थ चलावा।
गुन प्रकटे अवगुनन्हि दुरावा॥

---

१. गाय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देत लेत मन संक न धरई।
बल अनुमान सदा हित करई।।
विपति काल कर सतगुन नेहा।
श्रुति कह सन्त मित्र गुन एहा।। —तुलसीदास

न स सखा यो न ददाति सख्ये। —ऋग्वेद

वह मित्र ही क्या जो अपने मित्र की सहायता नहीं करता।

पापन्निवारयति योजयते हिताय,
गुह्यानि गूहति गुणान्प्रकटी करोति।
आपद्गतं च न जहाति ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।

श्रेष्ठ पुरुषों के अनुसार सन्मित्र के लक्षण निम्न हैं—सच्चा मित्र वह है जो अपने मित्र को पापों से बचाता है, उसे हितकारी कार्यों में नियुक्त करता है, उसके गुप्त भेदों को छिपाता है और गुणों को प्रकट करता है, आपत्ति आने पर वह अपने मित्र का साथ नहीं छोड़ता, समय पड़ने पर उसकी सहायता करता है।

There are three faithful friends, one old wife, an old dog, and ready money. —Frenklin

तीन विश्वासी मित्र होते हैं, वृद्धा पत्नी, बूढ़ा कुत्ता और नकद धन।

मूर्ख

मूरख को समुझावते ज्ञान गाँठि को जाय।
कोयला होय न ऊजरो, नौ मन साबुन लाय।। —कबीर

फूलै फलै न बेंत, यदपि सुधा बरषहि जलद।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलैं बिरंचि सम।। —तुलसी

मूरख के सुन कर बचन, हो रहिये चुपचाप।
उसकी समता जो करे, नीच कहावे आप।।
बन में ही रहिबो भलो, बन पशुओं के पास।
मूरख के संग स्वर्ग में अच्छा नहीं निवास।।

मूर्खस्य पञ्चचिह्नानि गर्वो दुर्वचनं तथा।
हठी चैव विषादी च परोक्तं नैव मन्यते।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मूर्खों के पांच चिह्न होते हैं— अभिमान, कटु-भाषण, हठ = दुराग्रह, सदा दु:खी रहना और दूसरों की बात न मानना ।

He who thinks himself wise, O, heavens ! is a great fool.

—**Voltaire**

हे परमात्मा ! जो अपने आपको बुद्धिमान् समझता है, वह बहुत बड़ा मूर्ख है ।

मूर्तिपूजा

पाथर पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहार ।
ताते तो चाखी भली, पीस खाय संसार ।। —कबीर

आत्म राम न चीन्ह ही, पूजत फिरें पषान ।
कैसेहु मुक्ति न होयगी, कोटिक सुनो पुरान ।। —मलूकदास

किरतिम[1] देव न पूजिये, ठेस लगे फुटि जाय ।
कहै मलूक सुभ आतमा, चारों जुग ठहराय ।। —मलूकदास

भूल के हुकमे-खुदा[2] यादे-बुताँ[3] रहने लगी ।
क्या तुम्हें करना था 'हसरत' आह क्या करने लगे ।। —हसरत

माई मसानी सिढि सीतला, भैरु भूत हनुमन्त ।
साहिब सों न्यारा रहे, जो इनको पूजन्त ।। —कबीर

न तस्य प्रतिमा अस्ति । —यजुर्वेद

उस परमात्मा की कोई मूर्त्ति नहीं है ।

नहीं, नहीं, मूर्त्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है जिसमें गिर कर (मनुष्य) चकनाचूर हो जाता है, पुन: उस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है ।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

लक्ष्य

जिनका ध्येय न लक्ष्य कुछ देश नहीं उद्देश्य ।
ते नर कपटी पतंग सम क्यों न गिरें दुर्वेश ।।

जिन्दगी है एक तीर जाने न पाये रायगाँ[2] ।
पहले निशाना देखलो बाद में खेंचो कमाँ[3] ।।

---

१. कृत्रिम, २. व्यर्थ, ३. कमान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राणो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते ।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥ —महर्षि अङ्गिरा

प्राण धनुष है, आत्मा बाण है और परमात्मा है लक्ष्य। प्रमाद रहित मनुष्य ही उस लक्ष्य को वेध सकता है। उसे वेधकर उस लक्ष्य में बाण की भांति तन्मय हो जाना चाहिये।

आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम् । —अथर्ववेद

उन्नत होना और आगे बढ़ना प्रत्येक जीव का लक्ष्य है।

Have a purpose in life and having it throw into your work such strength of mind and muscles as God has given you. —Carlyle

अपने जीवन का एक लक्ष्य बनाओ और उसके पश्चात् अपना सारा शारीरिक और मानसिक बल जो ईश्वर ने तुम्हें दिया है, उसमें लगा दो।

लघुता

रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजिये डारि ।
जहां काम आवे सुई, कहा करे तरवारि ॥
देख छोटों को है अल्लाह बड़ाई देता ।
आस्माँ आँख के तिल में है दिखाई देता ॥ —जोक

लीडर

लीडरों की धूम है और फोलोअर[1] कोई नहीं ।
सब तो जनरल हैं यहां आखिर सिपाही कौन है ?
डिनर कलब थियेटर आराम ।
लीडर एक और कितने काम ॥
कौम के गम में डिनर खाते हैं हुक्काम[2] के साथ ।
रञ्ज लीडर को बहुत है मगर आराम के साथ ॥

In India every one thinks himself a philosopher and a leader, without a follower. —Lala Lajpat Rai

भारतवर्ष में प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको दार्शनिक और नेता समझता है बिना किसी अनुकरण करने वाले के।

---

१. शिष्य, अनुकरण करने वाला २. पदाधिकारी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोभ

लोभ पाप को मूल है, लोभ मिटावत मान ।
लोभ न कबहूँ कीजिये, या में नरक निदान ।।

ज्ञानी तापस सूर कवि कोविद गुन आगार ।
केहि की लोभ विडम्बना, कीन्ह न एहि संसार ।

कबिरा औंधी खोपड़ी कब हूँ धापै नाहिं ।
तीन लोक की सम्पदा, कब आवे घर माहिं ।।

नख बिन कटा देखे, सीस भारी जटा देखे,
जोगी कन फटा देखे, छार लाये तन में ।
मौनी अनबोल देखे, सेबरा सर छोड़ देखे,
करते किलोल देखे वनखण्डी वन में ।
वीर देखे शूर देखे, गुणी और क्रूर देखे,
माया से भरपूर देखे, फूल रहे मन में ।
आदि अन्त सुखी देखे, जन्म ही के दुखी देखे ।
पर वे नाहीं देखे जिनके लोभ नाहिं मन में ।।

वाणी

ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करै आपहुँ शीतल होय ।। —कबीर

मधुर वचन है ओषधि, कटुक वचन है तीर ।
स्रवन द्वार ह्वै सञ्चरै, सालै सकल शरीर ।। —कबीर

तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजे चहुं ओर ।
वशीकरण एक मन्त्र है, तज दे वचन कठोर ।।

कुटिल वचन सबसे बुरा, जारि करै तन छार ।
साधु वचन जल रूप है, बरसे अमृत धार ।।

दुर्जन को मुख बिवर हैं, निकसत वचन भुजंग ।
ताकी औषध मौन है, डसै न एको अंग ।।

गाली कभी न दीजिये, वृथा न बोलो बोल ।
झूठ वचन निन्दा तजो, यही जीव का मोल ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खीरा सिर ते काटि के, मलियत नौन लगाय ।
रहिमन करवे मुखन को चहियत यही सजाय ।

मधुर वचन ते जात मिट, उत्तम जन अभिमान ।
तनिक सीत जल सों मिटे, जैसे दूध उफान ।। —वृन्द

जहाँ राम[1] होता है मीठी जबां से ।
नहीं लगती कुछ इसमें दौलत ज्यादा ।। —हाली

गैर अपने होंगे शीरीं[2] हो अगर अपनी जबाँ ।
दोस्त हो जाते हैं दुश्मन, तलख हो जिसकी जबाँ ।।

फितरत[3] को नापसन्द है सख्ती बयान में ।
इसलिये हड्डी बनाई नहीं जबान में ।।

बद[4] न बोले जेरे-गर्दूं[5] गर कोई मेरी सुने ।
यह है गुम्मद की सदा[6] जैसी कहे वैसी सुने ।।

वचन ते दूर मिलें, वचन विरोध होई,
वचन ते राग बढ़े, वचन ते दोष ज ।
वचन ते ज्वाल उठै, वचन ते सीतल होई,
वचन ते मुदित, वचन ही तें रोष जू ।
वचन ते प्यारो लगे, वचन ते दूर भगैं,
वचन ते मुरझाय, वचन ते पोष जू ।
'सुन्दर' कहत यह वचन को भेद ऐसो,
वचन ते बन्ध होत, वचन ते मोच्छ जू ।।

वाचा वदामि मधुमत् । —अथर्ववेद
मैं वाणी से सदा मीठा बोलूं ।

हितं मनोहारी च दुर्लभं वचः । —भारवि
हितकारी एवं मनोहर वचन दुर्लभ होता है ।

नहींदृशं संवननं त्रिषु लोकेषु विद्यते ।
दया मैत्री च भूतेषु दानं च मधुरा च वाक् ।।

---

१. वशीभूत, २. मधुर ३. प्रकृति, यहां तात्पर्य परमात्मा से है ४. बुरा
५. आकाश के नीचे, संसार में ६. ध्वनि ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी प्राणियों पर दया, सबके साथ मित्रता, दान देना और मधुर-भाषण—इनसे बढ़कर तीनों लोकों में और कोई वशीकरण नहीं है।

विद्या

विद्या के भण्डार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों खर्चे त्योंही बढ़े, बिन खर्चे घट जात।।
विद्या के सम धन नहीं, जग में कहत सुजान।
विद्या से ही मनुज लघु, होवे भूप समान।
सुख चाहे विद्या पढ़े, विद्या है सुख हेतु।
भव सागर से तरन को, विद्या है दृढ़ सेतु।।
उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीच पै होय।
परो अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोय।। —वृन्द

विद्या पढ़ करते फिरें औरन को अपमान।
नारायण विद्या नहीं, ताहि अविद्या जान।।
तारा भूषण चन्द्र है, नारी का पति मान।
पृथ्वी का भूषण नृप है, सब की विद्या जान।।

विद्या ददाति विनयम्।
विद्या से विनय आती है।

न चौरहार्यं न च राजहार्यं,
न भातृभाज्यं न च भारकारि।
व्ययकृते वर्धत एव नित्यं,
विद्या धनं सर्वधनप्रधानम्।।

विद्यारूपी धन को चोर चुरा नहीं सकता, राजा दण्ड में नहीं ले सकता, भाई हिस्से में नहीं बांट सकता, उसका कोई बोझ भी नहीं होता, वह दान करने से नित्य बढ़ती है, अतः विद्या सब धनों से श्रेष्ठ है।

The end of all knowledge should be virtuous action.
—**Sir P. Sydney**

सुकर्म विद्या का अन्तिम लक्ष्य होना चाहिये।

विपत्ति

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहचानि।
सोच नहीं चित हानि को, जो न होय हित हानि।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विपत बराबर सुख नहीं, जो थोरे दिन होय ।
हित अनहित या जगत में जान परै सब कोय ।।
को रहीम पर द्वार पर जात न जिय पछतात ।
संपति के सब जात हैं, विपति सबहि लै जात ।।

कष्ट और विपत्ति मनुष्य को शिक्षा देने वाले श्रेष्ठ गुण हैं, जो मनुष्य साहस के साथ उन्हें सहन करते हैं वे अपने जीवन में विजयी होते हैं ।

—लोकमान्य तिलक

विवाह

रहिमन विवाह व्याधि[1] है बचहु तो सको बचाय ।
पायन बेड़ी पड़त है, ढोल बजाय बजाय ।।
शादी जिसका नाम है, है जीवन बर्बाद ।
कुछ दिन तो मीठी लगे, पीछे कड़वा स्वाद[2] ।।

Those who are out they wish to get in, those who are in they wish to get out.

—Proverb

जिनका विवाह नहीं हुआ है वे इस बन्धन में बंधना चाहते हैं परन्तु जिनका विवाह हो चुका है वे इस बन्धन से निकलना चाहते हैं ।

Marriage with a good woman is harbour in the tempest of life, with a bad woman, it is a tempest in the harbour.

—J. P. Senn

---

१. रज्जब दूल्हा बने विवाह कराने ज़ा रहे थे । मार्ग में गुरुजी से मिलने गये । उन्होंने कहा—

रज्जब ! तें गज्जब कियो माथे बांध्यो मौर ।
आयो थो हरि भजन को करी नरक में ठौर ।।

और परिणाम क्या हुआ—

दादू से सत्गुरु मिले सिख रज्जब से जान ।
एक ही शब्द सुलझि गये रही न खेंचातान ।।

२. किसी अनुभवी ने ठीक ही कहा है—

हम समझे थे इस 'वाइफ' से इक दिलकश लाइफ आयेगी ।
मैं बाज आया इस शादी से इसने तो नीलाम किया ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अच्छी स्त्री से विवाह जीवन के तूफान में बन्दरगाह है और खराब स्त्री से विवाह बन्दरगाह में ही तूफान है।

It is a woman's business to get married as soon as possible, and a man's to keep unmarried as long as he can.

—G. B. Shaw

प्रत्येक स्त्री का यह कर्तव्य है कि वह जितनी जल्दी सम्भव हो सके विवाह करले और पुरुष का, जहाँ तक सम्भव हो सके उससे दूर रहे।

A bachelor is a lion, a betrothed is a peacock and a married is an ass.

—Proverb

ब्रह्मचारी सिंह के समान होता है, जिसका वाग्दान (सगाई) हो जाता है वह मोर की भांति होता है और जिसका विवाह हो जाय वह गधा बन जाता है।

विविध

जिन नैना सूझै नहीं, बुरे भले को भेद।
मस्तक के वे घाव हैं, भौवों नीचे दो छेद।।
मन मोती और दूध रस, इनको यही स्वभाव।
फाटे पीछे न मिलें, कोटिन करो उपाव।।
ईश्वर ने यह तन दिया, करने को दो काम।
तन धन से सेवा करैं, मन से सुमरैं नाम।।
तुलसी जग में यूं रहो, ज्यों रसना मुख मांह।
खाती घी लवण नित, फिर भी चिकनी नांय।।
बड़े बड़ाई न करें, बड़े न बोलें बोल।
हीरा मुख से कब कहे, लाख टका मेरा मोल।।
प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छवि कहां समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आप फिरि जाय।।
तुलसी पिछले पाप ते, हरि चर्चा न सुहाय।
जैसे ज्वर के कारणे, भूख विदा हो जाय।।
आसन मारे क्या हुआ, मरी न मन की आस।
तेली केरे बैल ज्यों घर ही कोस पचास।।
सकल ज्ञान निधि वेद है, पढ़े सो उतरे पार।
वेद विहित आचार से, करो जगत उद्धार।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाड़न में बहु दोष हैं, ताड़न में गुण होय।
पुत्र शिष्य नहीं लाड़िये, ताड़न से सुख होय ।।
जो सुख चाहो देश में, करो परस्पर मेल।
बिन मेल के काम सब, बच्चों का सा खेल ।।
हर्ष बढ़ावे धीरता, हर्ष बढ़ावे ज्ञान।
बढ़े हर्ष से बुद्धि बल, हर्ष सुखों की खान ।।
दोष पराया देखकर, चले हसन्त हसन्त।
अपने याद न आवहीं, जिनका आदि न अन्त ।। —कबीर
बुरा जो देखन मैं चला बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझ से बुरा न कोय ।।
कपटी कभी न ऊधरे, सौ साधुन के संग।
मुंज पखाले गंग में, ज्यों भीजे त्यों तंग ।।
दया नम्रता दीनता, क्षमा शील सन्तोष।
इनकूं लै सुमरिन करै, निहचै पावै मोक्ष ।।
हाय हाय हरि कब मिलें, छाती फाटी जाय।
ऐसा दिन कब होयगा, दर्शन करूं अघाय ।।
राम[1] नाम को छांडि कै राखे करवा चौथि।
सो तो ह्वैगी सूकरी, तिन्हों राम सों कौथि ।।
रह लोभ से अति दूर ही, जा दर्प के तू पास ना।
बच काम से अरु क्रोध से, कर गर्व से सहवास ना ।।
आलस्य मत कर भूल कर भी, ईर्षा न कर मत्सर न कर।
हैं आठ ये बैरी प्रबल, इन बैरियों से भाग डर ।।
—भोले बाबा
विश्वास से कर मित्रता, श्रद्धा सहेली ले बना।
प्रज्ञा तितिक्षा को बढ़ा, प्रिय न्याय का कर त्याग ना ।।
गम्भीरता शुभ भावना, अरु धैर्य का सम्मान कर।
हैं आठ सच्चे मित्र ये, कल्याणकर भवभीर हर ।।
—भोले बाबा

१. कबीर का राम दशरथ-पुत्र नहीं है। कबीर का राम तो सर्वव्यापक परमात्मा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जग की विस्तृत रणस्थली में, जीवन के झगड़ों के बीच।
नायक बन कर करो काम तुम, पशुओं जैसे बनो न नीच ।।
कठिनाइयों के मध्य अध्यवसाय का उन्मेष हो।
जीवन सरल हो तन सबल हो, मन विमल सविशेष हो ।।
तनकर मनकर वचनकर, देत न काहू दुःख।
तुलसी पातक झरत हैं, देखत उनका मुख ।।
जग ते रहु छत्तीस ह्वै, प्रभु चरण छः तीन।
तुलसी देख विचार हिय, है यह मतो प्रवीण ।।

वैराग्य

ऊंचे भुजा पुकार हूँ, कहा बजाऊं ढोल।
इक इक सांसा जात है, तिरलोकी का मोल ।।
हाड जलें ज्यो लाकड़ी, केश जलें ज्यों घास।
यह जग जलता देख कर, भयो कबीर उदास ।।
छत्तीस नौबत बाजती, होत रहत रंग राग।
सो मन्दिर खाली पड़े, बैठन लागे काग ।।
इस जीवन का गर्व क्या, क्या शरीर की प्रीति।
बात कहत गिर जात है, बालू की सी भीत ।।
आछे दिन पाछे गये, हरि से किया न हेत।
अब पछताये क्या होत है, चिड़ियां चुग गई खेत ।।
मिट्टी कहे कुम्हार से क्या तू रूंदे मोहि।
इक दिन ऐसा होयगा, मैं रूंदूंगी तोहि ।।
इस श्वास का मूढ विश्वास कहा, पल आवत ही रह जावत है।
सब पीर पैगम्बर खाक मिले, तेरो का अनुमान फुलावत है ।।

व्यायाम

शक्ति बढ़े फुर्ति रहे, चोट न अधिक पीड़ाय।
अन्न पचे चंगा रहे, कसरत सदा सहाय ।।
औषध नहीं व्यायाम समाना।
व्यय नहीं तनिकउ लाभ महाना ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाघवं कर्म-सामर्थ्यं विभक्त-घन-गात्रता ।
दोषक्षयोऽग्नि-दीप्तिश्च व्यायामादुपजायते ।।
व्यायाम-दृढ़-गात्रस्य व्याधिर्नास्ति कदाचन ।
विरुद्धं वा विदग्धं वा भुक्तं शीघ्रं विपच्यते ।। —भाव प्रकाश

व्यायाम से शरीर हल्का और फुर्तिला बन जाता है, कार्य करने की सामर्थ्य बढ़ जाती है, शरीर के सभी अङ्ग सुन्दर एवं सुडौल बन जाते हैं। वात, पित्त और कफ के दोष दूर होकर जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है। जिसने व्यायाम से अपने शरीर को दृढ़ बना लिया उसे किसी प्रकार की बीमारी नहीं सताती। विरुद्ध भोजन अथवा गला-सड़ा भोजन भी कभी खा लिया जाय तो शीघ्र पच जाता है।

Health is the vital principle of bliss, and exercise of health.

—Tomson

आनन्द का मुख्य सिद्धान्त स्वास्थ्य है और स्वास्थ्य का मुख्य सिद्धान्त व्यायाम।

Walking at a moderate pace is a good exercise, it costs nothing except the sole of your shoe. **—J. B. Scoot**

मध्यम गति से भ्रमण एक सुन्दर व्यायाम है, इसमें खर्च कुछ नहीं होता केवल जूते का तला घिसता है।

व्यसन-निन्दा

मांस मछलियां खात हैं, सुरा पान सों हेत ।
ते नर नरकें जायेंगे, माता पिता समेत ।। —कबीर
भांग भखै बल बुद्धि को, आफू अहमक होय ।
दोय अमल औगुन कहा, जानवंत नर जोय ।। —कबीर
भांग तम्बाकू छूतरा, जन कबीर जे खांहि ।
योग यज्ञ जप तप किये, सबैं रसातल जांहि ।।
भांग, तम्बाकू अफीम को, दौड़ दौड़ कर लेहि ।
कहें कबीर हरि नाम को पीछे ही पग देहि ।।
राखें बरत एकादसी, और अन्न को त्याग ।
भांग तम्बाकू न तजें, कहे कबीर अभाग ।।
मुख में थूकन दे नहीं, मूहर कोइ जन देहि ।
कहें कबीर या चिलम को, झूठ जगत मुंह लेहि ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शराब

मांस खांये सो ढेड सब, मद पीवे सो नीच।
कुल की दुरमति परि हरे, राम कहे सो ऊंच ।।
औगुन कहूं शराब का, जानवंत सुनि लेय।
मानुष से पशुआ करे, द्रव्य गाँठ का देय ।।
मांसे भखे मदिरा पिवे, धन वेस्वा सों खाय।
जुआ खेल चोरी करै, अन्त समूला जाय ।।
कामी तिरे क्रोधी तिरे, लोभी की गति होय।
सलिल[1] भक्त संसार में, तरत न देखा कोय ।।
गिलासों में जो डूबे फिर न उबरे जिन्दगानी में।
हजारों बह गये इन बोतलों के बन्द पानी में ।।

चित्ते भ्रान्तिर्जायते मद्यपानाद्,
भ्रान्ते चित्ते पापचर्यामुपैति।
पापं कृत्वा दुर्गतिं यान्ति मूढ़ाः,
तस्मान्मद्यं नैव पेयं न पेयम् ।।

शराब पीने से चित्त भ्रान्त हो जाता है, चित्त के भ्रान्त होने पर मनुष्य पाप कर डालता है पाप करके मूढ मनुष्य दुर्गति को प्राप्त होते हैं अतः शराब नहीं पीनी चाहिये, नहीं पीनी चाहिये।

Wine has drowned more men than the sea.—**Publius Syrus**

समुद्र की अपेक्षा शराब ने अधिक मनुष्यों को डुबोया है।

शान्ति

सात द्वीप नव खण्ड लौं, तीनि लोक जग मांहि।
तुलसी शान्ति समान सुख, और दूसरो नांहि ।।

शान्तितुल्यं तपो नास्ति। —**चाणक्य**

शान्ति के समान अन्य कोई तप नहीं है।

शासन

कसीदे से न चलता है, न ये दोहे से चलता है।
समझ लो खूब कारे-सलतनत लोहे से चलता है ।।

---

१. शराब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति ।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधाः ।। —मनु

दण्ड ही सारी प्रजा का शासन करता है, दण्ड ही सब की रक्षा करता है, वही सोते हुए पुरुषों में जागता है अतः बुद्धिमान् लोग दण्ड को ही धर्म कहते हैं ।

शिक्षा

तिफ्ल में बू आये क्या मां-बाप के अतवार की ।
दूध तो डब्बे का है और तालीम है सरकार की ।।

[The aim of education is] To develop in the body and in the soul all the beauty and all the perfection of which they are capable.

—Plato

शरीर और आत्मा में अधिक-से-अधिक जितने सौन्दर्य और जितनी सम्पूर्णता का विकास हो सकता है, उसे सम्पन्न करना ही शिक्षा का उद्देश्य है ।

Education has for its objects the formation of character.

—Herbert Spencer

शिक्षा के उद्देश्यों में से एक उद्देश्य है—चरित्र निर्माण[1] ।

Educate men without relig[illegible] you make them clever devils.

—Duke of Welligton

धर्म-विहीन शिक्षा मनुष्य को शैतान बना देती है ।

शील

सीलवन्त सब से बड़ा, सब रतनन की खानि ।
तीन लोक की सम्पदा, रही सील में आनि ।। —कबीर

ज्ञानी ध्यानी संयमी, दाता सूर अनेक ।
जपिया तपिया बहुत हैं, सीलवन्त कोई एक ।। —कबीर

सुख का सागर सील है, कोई न पावे थाह ।
सब्द बिना साधू नहीं, द्रव्य बिना नहीं साह ।। —कबीर

---

१. आज स्थिति यह है—

तालीम दुखतरां से यह उम्मीद है जरूर ।
नाचे दुल्हन खुशी से खुद अपनी बरात में ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सील छिमा जब ऊपजे, अलख दृष्टि तब होय ।
बिना सील पहुँचे नहीं, लाख कथै जो कोय ।।

संगति

असत संग के वास सों, गुन अवगुन ह्वै जात ।
दूध पिवै कलवार घर, मदिरा सबहि बुझात ।।
काजल की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय ।
एक लीक काजर की लागि है पै लागि है ।। —कहावत
संगति सुमति न पावई, परे कुमति के बन्ध ।
राखो मेल कपूर में, हींग न होय सुगन्ध ।।
ज्ञान गढ़े गुनवान की संगत, ध्यान बढ़े तपसी संग कीने ।
मोह बढ़े परिवार की संगत, लोभ बढ़े धन में चित्त दीने ।
क्रोध बढ़े नर मूढ़ की संगत, काम बढ़े तिय के संग कीने ।
शुद्ध विवेक विचार बढें कवि 'दीन' सुसज्जन संगत कीने ।।

संग्रह

सबै वस्तु संग्रह करै, आवे कोई दिन काम ।
समय परे पै न मिलै, माटी खर्चे दाम ।।

जलबिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।
स हेतु सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ।। —चाणक्य

जैसे एक-एक बूंद से घड़ा भर जाता है उसी प्रकार सर्वप्रकार की विद्या, धर्म और धन का भी थोड़ा-थोड़ा संचय करने से विशाल संग्रह हो जाता है ।

सन्त

तरुवर सरिता सन्तजन, चौथे बरसे मेह ।
परमारथ के कारणे, चारों धारी देह ।।
सन्त बड़े परमारथी, सीतल जिनका संग ।
तप्त बुझावें और की, दे दे अपना रंग ।।
दुःख में पड़कर संत जन कभी न करते पाप ।
हंस छाछ पीवे नहीं, मरे भूख सन्ताप ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन्त कष्ट सह आपु ही, सुखी करे जु समीप।
आप जरैं पै और को, करैं उजेरो दीप॥
नहिं शीतल है चन्द्रमा, हिम नहिं शीतल होय।
कबिरा शीतल सन्तजन, नाम सनेहि सोय॥
सन्त न छोड़े सन्तई, कोटिक मिले असन्त।
मलय भुवंगहि बेधिया, सीतलता न तजन्त॥
पारस में और सन्त में बड़ो अन्तरो जान।
वह लोहा सोना करे, वह कर आपु समान॥
निज परिताप द्रवइ नवनीता।
पर दुःख द्रवहि सन्त सुपुनीता॥ —तुलसी

सच्चा सन्त वही है जिसका मानस पर दुखों से पिघला।
औरों की आँखों का आँसू जिसकी आँखों से बह निकला॥
तुलसी सन्त सु-अम्ब तरु, फूलैं फलैं परहेत।
इतते ये पाहन हनै उत ते वे फल देत॥
नारिकेल फलाकारा दृश्यन्ते सज्जना जनाः।

सज्जन पुरुष नारियल की भांति होते हैं जो ऊपर से अत्यन्त कठोर परन्तु अन्दर से अत्यधिक कोमल होते हैं।

सन्तोष

गोधन गजधन बाजिधन और रतन धन खान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान॥ —कबीर

सांई इतना दीजिये, जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा न रहूं साधु न भूखा जाय॥

तुलसी धीरज के धरे, कुञ्जर मन भर खाय।
टूक एक के कारणे, श्वान घरों घर जाय॥

मारिये आसा सांपिनी, जिन डसया संसार।
ताकी असि सन्तोष है, यह गुरु मन्त्र विचार॥

बिन सन्तोष न काम नसाहीं।
काम अच्छत सुख सपनेहु नाहीं॥ —तुलसी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन्तुष्ट रह तू सर्वदा, सन्तोष ही है मुख्य धन।
सन्तोष वाला ही सुखी है, हो भले ही नग्न तन।।
ऐश्वर्य तीनों लोकों के सन्तोष के सम हैं नहीं।
सन्तोष जिसके पास है, उस सम धनी जग में नहीं।।

सन्तोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम्।
न च तद्धनलुब्धानामितश्चेतश्च धावताम्।। —चाणक्य

सन्तोष रूपी अमृत से तृप्त शान्त लोगों को जो सुख होता है वह इधर-उधर दौड़ने वाले धन के लोभियों को प्राप्त नहीं हो सकता।

Content is more than a kingdom.

सन्तोष साम्राज्य से भी बढ़कर है।

My crown is in my heart, not on my head,
Not decked with diamonds and Indian stones.
Nor to be seen, my crown is called content,
A crown it is that seldom kings enjoy. —**Shakespeare**

मेरा मुकुट मेरे सिर पर नहीं अपितु मेरे हृदय में है। वह सांसारिक राजाओं के मुकुट की भांति हीरे, लाल और पत्थरों से जड़ा हुआ नहीं है, वह दिखाई भी नहीं देता। इस मुकुट का नाम है सन्तोष और यह ऐसा मुकुट है जिसका आनन्द विरले राजाओं को ही प्राप्त होता है।

सन्ध्या

सन्ध्या जीवन ऋषिन का सुख दे मातु समान।
जो सन्ध्या नित ना करें, वे नर दुख की खान।।
जो द्विज सन्ध्या नहीं करें सायं प्रातः काल[1]।
शुभ कर्मों के बीच से दीजे उसे निकाल।।

---

१. आज तो यह स्थिति है—

कहां की पूजा नमाज कैसी, कहां की गंगा कहां का ज़मज़म।
होटल के दर पर खड़ा है हर इक, हमें भी दे दो इक जाम साहब।।

आज की नास्तिकता के सम्बन्ध में कविवर अकबर ने ठीक ही लिखा है—

रकीबों ने रपट लिखवाई है जा-जा के थाने में।
कि अकबर नाम लेता है खुदा का इस जमाने में।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीर्घकाल सन्ध्या करे, दीर्घायु को पाय।
बुद्धि बल आरोग्य यश, जल्दी से बढ़ जाय ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश सब, सन्ध्या करें सराग।
द्विज जो सन्ध्या नहीं करें, ताके बड़े अभाग ॥

संसार में कैसे रहें

आदमी को चाहिये दुनिया में रहना इस तरह।
तालाब के पानी में जैसे रहता है कमल ॥
न हर भूलो न जग छोड़ो कर्म कर जिन्दगानी में।
रहो दुनिया में यूं जैसे कमल रहता है पानी में ॥
दुनिया में हूं दुनिया का तलबगार नहीं हूं।
बाजार से गुजर रहा हूं, खरीदार नहीं हूं ॥
जगमाहीं ऐसे रहो, ज्यों अम्बुज सर माहिं।
रहै नीर के आसरे, पै जल छूवत नाहिं ॥
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः। —यजुर्वेद

प्रभु द्वारा प्रदत्त संसार के पदार्थों का त्यागपूर्वक भोग करो।

सज्जन

सज्जन को दुख हू दिये, दुर्जन पूरे आस।
जैसे चन्दन को घिसे, सुन्दर देत सुवास ॥
सज्जन से सज्जन मिले, होवे दो दो बात।
गदहा सों गदहा मिले, खावे दो दो लात ॥

सत्य

सांच बराबर तप नहीं, झूंठ बराबर पाप।
जाके हिरदे सांच है ता हिरदे गुरु[1] आप ॥ —कबीर
सत्य नव पर जो चढ़े, वह भव सिन्धु पार।
आप तरैं और और को देवे पार उतार ॥
सत्य तुल्य कोई है नहीं, तप तीरथ जप योग।
सत से पातक झड़त हैं, सत से नासें रोग ॥

१. परमात्मा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत की ही जय होत है, मिथ्या की नित हार।
सत्य मार्ग है ऋषिन का करो इसे स्वीकार ।।
जहाँ सत्य तहं लक्ष्मी, आयु कीर्ति पूर।
जैसे छाया वृक्ष की, रहती नहीं है दूर ।।
सत मत छोड़ो सूरमा, सत छोड़े पत जाय।
सत की बांधी लक्ष्मी फैर मिलेगी आय ।।
राख लिया जिसने यदि सत्य धर्म जो एक।
तो उसने सब राख लई, धर्म कर्म की टेक ।।
अपना सत्य आप पहचानो सत्य बदलता रहता है।
विष अमृत में अमृत विष में नित्य बदलता रहता है ।। —योगी

सत्यमेव जयते नानृतम्। —मुण्डकोपनिषद्

सत्य की ही विजय होती है, असत्य की नहीं।

असतो मा सद्गमय। —बृहदारण्यकोपनिषद्

हे प्रभो ! मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो।

अहमनृतात् सत्यमुपैमि। —यजुर्वेद

मैं अनृत = झूठ को छोड़कर सत्य को प्राप्त होता हूँ।

नहि सत्यात् परो धर्मः। —मनु

सत्य से बढ़कर और कोई धर्म नहीं है।

सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्। —महाभारत

सत्य स्वर्ग की सीढ़ी है।

Time is precious but truth is more precious than time.
—**Disraeli**

समय मूल्यवान् है परन्तु 'सत्य' समय की अपेक्षा अधिक मूल्यवान् है।

सब दिन जात न एक समान

कट जायेंगी दुःख की घड़ियां होगा प्रातः न रात रहेगी।
क्या रह जायेगा दुनिया में कहने को बस बात रहेगी ।।
संसार में किस का समय है एक सा रहता सदा।
है निशि-दिवा सी घूमती, सर्वत्र विपदा सम्पदा ।।
जो आज एक अनाथ है, नर नाथ कल होता वही।
जो आज उत्सव मग्न है, कल शोक से रोता वही ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन के अविराम समर में कभी हार है जीत कभी ।
कभी पराजय का रोना है, गाना जय के गीत कभी ।।
पांव थर्राते थे जिनके सामने जाते हुए ।
देखा उन्हीं की खोपड़ी को ठोकरें खाते हुए ।।
फलक देता है जिसको एश उसको ग़म भी होते हैं ।
जहां बजते हैं नक्कारे वहां मातम भी होते हैं ।।
किसी की उम्र का लबरेज जाम होता है,
किसी का कन्दा नगीने पै नाम होता है ।
अजब सराय है दुनिया कि जिसमें शामो-सहर ।
किसी का कूच किसी का मुकाम होता है ।।

सत्सङ्ग

कदली सीप भुजंग मुख, स्वाति एक गुण तीन ।
जैसी संगत बैठिये, तैसो ही गुण दीन ।।
तात स्वर्ग-अपवर्ग सुख, धरिये तुला इक अंग ।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सत्संग ।।
जाहि बड़ाई चाहिये, तजै न उत्तम साथ ।
ज्यों पलास संग पान के, पहुँचे राजा हाथ ।।
कबिरा संगत साधु की ज्यों गंधी की बास ।
जो कुछ गंधी दे नहीं, तो भी बास सुवास ।। —कबीर
कबिरा संगत साधु की, हरै और की व्याधि ।
संगत बुरी असाधु की, आठों पहर उपाधि ।। —कबीर
तुलसी लोहा काठ संग, चलत फिरत जल मांहि ।
बड़े न डूबन देते हैं जाकी पकड़े बांहि ।।
उत्तम संग मिलि नीच जन, उत्तम ही हो जाय ।
गंगा संग जल ताल का, गंगोदक कहलाय ।।
भले नरन के संग से, नीच ऊंच पद पाय ।
जिमि पिपीलिका पुष्प संग, भूप शीश चढि जाय ।।
मुक्तिदाता चार हैं, सम सन्तोष विचार ।
साधु संगत चौथा गिनो, जो शान्ति का द्वार ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सठ सुधर्राहं सत्संगति पाई।
पारस परसि कुधात सुहाई ।।
तात मिले पुनि मात मिले, सुत भ्रात मिलैं जुबती सुखदाई।
राज मिलैं गज बाजि मिलैं, सब साज मिलैं मन बांछित पाई ।।
लोक मिले सुरलोक मिले, बिधिलोक मिलैं बइकुंठहुं जाई।
सुन्दर और मिलें सब ही सुख, सन्त समागम दुर्लभ भाई ।।

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्संगति कथयः किन्न करोति पुंसाम् ।। —भर्तृहरि

सत्संगति बुद्धि की जड़ता को नष्ट करती है, वाणी को सत्य से सींचती है, मान बढ़ाती है, पाप को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न करती है और संसार में यश फैलाती है, सत्संगति मनुष्य के लिये क्या नहीं करती ?

It is better to be alone than in a bad company.
—Gorge Washington

कुसंगति में रहने की अपेक्षा अकेले रहना अधिक उत्तम है।

सदाचार

आयु बढ़े शुभाचार से, जीवन है आचार।
कुल से हीन मनुष्य भी, प्राप्त करे अधिकार ।।
दुराचारी इस लोक में, निन्दा पाय अपार।
दुखभागी व्याधिग्रसित, जीवन हो दुख भार ।।
बिना आचार मनुष्य को, करे पवित्र न वेद।
आचारहीन नर निज दशा, देख करे अति खेद ।।

आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः। —देवीभागवत

आचारहीन मनुष्य को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते।

समदृष्टि

समदृष्टि तब जानिये, सीतल समता होय।
जब जीवन की आतमा, लखै एक सी सोय ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समय

सब वस्तु का मोल है, समय अमूल्य पिछान ।
समय व्यर्थ न खोवते सो जन चतुर सुजान ।।
सब से बढ़कर समय है, सभी गुणों की खान ।
करें समय का मान जो, वे ही पुरुष महान् ।।
सत्य शास्त्र के पठन में, गुणियों के दिन जाय ।
आलस्य निद्रा कलह में, मूरख समय बिताय ।।
गया वक्त फिर हाथ आता नहीं ।
सदा दौर दौरा दिखाता नहीं ।।
वक्त था जो काम का उसको उड़ाया धूल में ।
वक्त था जो काम का, उसको गंवाया धूल में ।।
वक्त था परलोक अपना जब बना सकता था तू ।
वक्त था हर साँस को गौहर बना सकता था तू ।।
वक्त था वह जागने का और तू सोता रहा ।
वक्त को बरबाद कर जिन्दगी खोता रहा -।

Life is short, Art is long and Time is fleeting.

—Longfellow

जीवन क्षणिक है, कार्य बहुत है और समय भागा जा रहा है।

I wasted time and now doth time waste me.

—Shakespeare

मैंने समय को नष्ट किया और अब समय मुझे नष्ट कर रहा है।

सहनशीलता

जैसी परे सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह ।
धरती पर ही परत सब शीत घाम अरु मेह ।।

साधु

खोद खाद धरती सहे काटफूल वनराय ।
कुटिल वचन साधु सहै, और से सहा न जाय ।।
सब बन तो चंदन नहीं, सूरा के दल नाहिं ।
सब समुद्र मोती नहीं, यों साधु जग माहिं ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सिहन के लंहड़े नहीं, हंसन की नहीं पांत ।
लालन की नहीं बोरियां, साधु न चले जमात ।।
कांटा औरों को लगै, तड़पे साधु सुजान ।
सारे जग के दुख को समझे अपना जान ।।
साधु भूखा भाव का धन का भूखा नांहि ।
धन का भूखा जो फिरे, सो तो साधु नांहि ।।
बहता पानी निर्मला, बन्दा गन्दा होय ।
साधु जन रमता भला, दाग न लागे कोय ।।
शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ।। —चाणक्य

प्रत्येक पर्वत पर माणिक नहीं होते, प्रत्येक हाथी में मुक्ता नहीं मिलता, सर्वत्र साधु नहीं मिलते और सब वनों में चन्दन नहीं होता ।

साहित्य

अन्धकार है वहां जहां आदित्य नहीं है ।
मुर्दा है वह देश जहां साहित्य नहीं है ।।

सुख

करे बुराई सुख चहे, कैसे पावे कोय ।
रोपे बिरवा आक को, आम कहां ते होय ।।
घर बन मांही सुख नहीं, सुख है सांई पास ।
दादू तासूं मन मिल्या, इन सूं भया उदास ।।
कोई तन दुखी कोई मन दुखी, चिन्ता चित्त उदास ।
थोड़े थोड़े सब दुखी, सुखी प्रभु के दास ।।
जब लगि नहीं निज हिरदे प्रकाश अरु विषय आस मन मांही ।
तुलसी जग जोनि भ्रमत, तबलग सपनेहु सुख नाहीं ।।
यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः ।
तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो भविष्यति ।। —उपनिषद्

जब मनुष्य आकाश को चमड़े की भांति अपने ऊपर लपेट लेंगे तभी परमात्मा को पाये बिना भी मनुष्य के दुःखो का अन्त होकर वह सुखी हो सकेगा ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थागमो नित्यमरोगिता च,
प्रिया च भार्या प्रियवादिनी च।
वश्यश्च पुत्रोऽर्थकरी च विद्या,
षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन्॥

हे राजन्! नित्य धन का आगम, आरोग्य, सुन्दरी एवं मधुर भाषिणी स्त्री, आज्ञाकारी पुत्र और समझ कर पढ़ी हुई विद्या—ये छह संसार के सुख है।

The secret of happiness is renunciation. —**Karnegi**

सुख का रहस्य त्याग में है।

सुधारक

धोने की है ऐ रिफारमर जा बाकी।
कपड़े पै है जब तलक कि धब्बा बाकी॥
धो शौक से धब्बे को पै इतना न रगड़।
धब्बा रहे कपड़े पै न कपड़ा बाकी॥ —हाली

स्वदेश प्रेम

जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रस धार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नही। —**मैथिलीशरण गुप्त**

जन्मभूमि और मात से, करत नहीं जो नेह।
ऐसे पापी अधम के, जीवन पर है खेह॥

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी॥ —**अज्ञात**

श्रीराम ने लक्ष्मण से कहा—हे भाई! मुझे यह सोने की लंका भी पसन्द नहीं है। जननी और जन्मभूमि—स्वर्ग से भी बढ़ कर हैं।

स्वदेशाभिमान

जिसको न निज गौरव तथा,
निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं पशु है निरा,
और मृतक समान है। —मैथिलीशरण गुप्त

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वभाव

कोटि जतन कोऊ करे, परै न प्रकृति हि बीच।
नल बल जल ऊंचो चढ़ै, अन्त नीच को नीच ॥ —बिहारी

रहिमन लाख भली करौ, अगुनी अगुन न जाय।
राग सुनत पय पियत हू सांप सहज धरि खाये ॥

बनी जो चीज है इस खाक से वह टूट जाती है।
करो कोशिश कमर कस कर पड़ी लत छूट जाती है ॥

स्वर्ग–नरक

पण्डित पूत सुपूत सुधी, पतनी पतिप्रेम परायण भारी।
जानै सबै गुण, मानै सब जन, दान विधान दया उरधारी ॥
'केशव' रोगन ही सो विजोग सुभोगनि सौं सुखकारी।
सांच कहै, जग मांहि लहै जसु, मुक्ति यही चहुं वेद विचारी ॥

वाहन कुचाल चोर चाकर चपल चित्र।
मित्र मतिहीन सूम स्वामी उर आनिये।
पर घर भोजन निवास कुपुरन,
'केशोदास' बरखा प्रयास दुःख दानिये।
पापिन के अङ्ग संग, अंगना अनंगबस,
अपजस जुत सुत, चित्त हित हानियें।
मूढ़ता बुढ़ाई व्याधि दारिद्र झुठाई आधि,
यहई नरक नर लोकनि बखानिये।

यस्य पुत्रो वशीभूतो भर्या छन्दानुगामिनी।
विभवे यश्च सन्तुष्टस्तस्य स्वर्गमिहैव हि ॥ —चाणक्य

जिसका पुत्र आज्ञाकारी हो, पत्नी अनुकूल चलने वाली हो, धन-धान्य से जो सन्तुष्ट हो, वह इस जीवन में ही स्वर्ग पा लेता है।

स्वाभिमान

खुदी को कर बुलन्द[1] इतना कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है?

---

१. ऊंचा, महान्।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वार्थ

स्वारथ के सब ही सगे, बिन स्वारथ कोऊ नाहिं।
सेवें पक्षी सरस तरु निरस भये उड़ जाहिं ॥ —तुलसी
सुर नर मुनि सब की यह रीति।
स्वारथ लागि करैं सब प्रीति ॥ —तुलसी
जेहिं ते कुछ निज स्वारथ होई।
तेहिं पर ममता कर सब कोई ॥ —तुलसी
साँई सब संसार में, मतलब को व्यवहार।
जब लगि पैसा गांठ में तब लगि ताको यार ॥
तब लगि ताको यार, यार संग ही संग डोले।
पैसा रहा न पास, यार मुख से नहीं बोले ॥
कह गिधर कविराय, जगत को याही लेखा।
करे बेगरजी प्रीति, यार हम बिरला देखा ॥ —गिरधर

छपते-छपते[1]

रात का अन्तिम पहर है झिलमिलाते हैं सितारे,
वक्ष पर युगबाहु बाँधे मैं खड़ा सागर किनारे।
पोत अगनित इन तरंगों ने डुबाये मानता मैं,
पार भी पहुंचे बहुत से बात यह भी जानता मैं ॥
किन्तु होता सत्य यदि यह भी सभी जलयान डूबे,
पार जाने की प्रतिज्ञा आज बरबस ठानता मैं।
हों युवक डूबे भले ही है कभी डूबा न यौवन,
तीर पर कैसे रुकूं मैं आज लहरों ने निमन्त्रण ॥

—हरिवंशराय 'बच्चन'

पुरुषार्थ

मनुज जीवन में जय के लिये
प्रथम ही दृढ़ पौरुष चाहिये

---

१. छपते-छपते दो-तीन पृष्ठों का मैटर कम रह गया अतः कुछ महत्वपूर्ण संग्रह और प्रस्तुत है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विजय तो पुरुषार्थ बिना कहाँ ?
कठिन है चिर जीवन भी यहाँ ।
भय नहीं भव सिन्धु तरो उठो !
पुरुष हो पुरुषार्थ करो उठो !

—मैथिलीशरण गुप्त

जवानी में

आंख पर चढ़ेगा जाला नाक से बहेगा नाला,
लाठी से पड़ेगा पाला जरा जिन्दगानी में ।
खड़े-खड़े वस्त्रों में करोगे मल-मूत्र त्याग,
और पड़े-पड़े थूकते रहोगे पीकदानी में ।।
भक्ति क्या करोगे जब शक्ति ही रहेगी नहीं,
'ओ३म्' नाम कहने को भी बन्द तेरी वाणी में ।
अतः जोग जोग कर भोग से वियोग कर,
भजन कर भगवान का तू जवानी में ।।

विवाह

नर नारी का मधुर मिलन ही स्वप्नों को साकार बनाता,
जग भर में जितने नाते उन सब में मधुर यह नाता ।
यह प्राणों का दीया जन्म भर जीवन को मार्ग दिखाता,
उड़ता पखेरु चुन-चुन कर तिनके लाता और नीड़ बनाता ।।
मिलना तुम्हारा जन्म-जन्म का इस जीवन का सार यही,
सुख में मिलना दु:ख में मिलना इस जीवन का सार यही ।।
इस घर की बिटिया उस घर की लक्ष्मी बन कर जाती है,
मां की ममता के आँसू डोली को आज सजाते हैं ।
नैनों से गङ्गा यमुना की धार उमड़ कर आती है,
इस घर की बिटिया पिया देश को जाती है ।।
कलि जब छोड़ती बगिया माली का मन भर आता है ।
जिसको मिलती वह उसे गले का हार बनाता ।
दो चलते राही जुड़ जाते बन जाता जीवन नाता,
दो उड़ते पक्षी संग उड़ते संसार बधाई गाता है ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन

जिस में उत्साह उमंग नहीं वह भी क्या कोई जीवन है ?
जो भरा हुआ है रोगों से, जर्जर है भौतिक भोगों से,
जिसमें न कर्म की शक्ति शेष, तप, तेज, साधना का न लेश,
अति शिथिल, क्षीण, निर्बल तन है, वह भी क्या कोई जीवन है ?
जिसमें शुचिता सदभाव नहीं, अनुराग, त्याग, सुप्रभाव नहीं,
जिसको माया मद-मत्सर है, अति दीन हीन, पर-निर्भर है,
दुर्भाव दम्भदूषित मन है, वह भी क्या कोई जीवन है ?
जिस से होता निज भोग नहीं, परहित में भी उपयोग नहीं,
जो क्रूर कर्म का साधक है, प्रभुता, प्रमाद आराधक है,
एकत्र किया कुत्सित धन है, वह भी क्या कोई जीवन है ?
जिसके तन, मन, धन शुद्ध नहीं, जो स्वस्थ पवित्र प्रबुद्ध नहीं,
जो स्वार्थ-स्वाति का चातक है, मानवता का अघ पातक है,
पशुता का प्रबल प्रदर्शक है, वह भी क्या कोई जीवन है ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेखक की अन्य रचनाएं

वाल्मीकीय रामायण [प्रेस में]	१५ ००
दयानन्द सूक्ति और सुभाषित	४ ००
विद्यार्थी लेखावली	३ ००
वेद सौरभ	२ ००
वैदिक उदात्त भावनाएं	२ ००
ईषोपनिषद्	२ ००
कुछ करो कुछ बनो	२ ००
विद्यार्थियों की दिनचर्या	१ ५०
प्रार्थना प्रकाश	१ २५
प्रभात वन्दन	१ २५
दिव्य दयानन्द	१ २५
मर्यादा पुरूषोत्तम राम	१ ५०
अमर सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द	१ ००
हास्य विनोद	१ ००
स्वास्थ्य का महान् शत्रु अण्डा	०० २५
वैदिक प्रश्नोत्तरी	२ ००
विष्णु पुराण की आलोचना	०० ४०
ऋग्वेद शतकम्	१ ००
यजुर्वेद शतकम्	१ ००
सामवेद शतकम्	१ ००
अथर्ववेद शतकम्	१ ००

जागती जोत प्रेस, एन–८ ग्रेटर कैलास मार्केट नई दिल्ली–४८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत की महान् आदर्श कन्याओं की शिक्षा संस्था
आर्य कन्या महाविद्यालय के संचालक
कर्मवीर पं० आनन्द प्रिय जी

❖

आप के ७१वें जन्म दिन पर हार्दिक अभिनन्दन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान (मासिक)
१५९७ हरध्यान सिंह मार्ग
नई दिल्ली -५

दयानन्दाब्द
जून १९७०

Regd. No. :
D/1631

महारानी लक्ष्मीबाई

खूब लड़ी मरदानी वह तो, झांसी वाली रानी थी।
आज भारत की महिलाओं को धर्म की रक्षा के लिए फिर शस्त्र संभालने होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi